ईश्वरीय चिंतन

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

कुछ विचार पर दिव्य

बेदिउज्जमां
नर्स ने कहा

The Light

न्यू जर्सी
2006

संशोधित संस्करण 2006

प्रथम प्रकाशन 2002

09 08 07 06 3 4 5 6

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. सुइट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.thelightpublishing.com

तुर्की से अली उनाल द्वारा अनुवादित

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा पिछले संस्करण के लिए

नर्सी, सईद, 1877-1960।
परमात्मा का प्रतिबिंब / बेदिउज्जमां सईद नूरसी.

पृ. सेमी. - (मानवता का ईश्वर से साक्षात्कार; 6)

इसमें ग्रंथसूची संदर्भ (पृ.) और अनुक्रमणिका शामिल है।

आईएसबीएन 0-9720654-5-8 (पीबीके: एल्क पेपर) 1. नूरकुलुक-सिद्धांत। I.
शीर्षक. II. श्रृंखला.

बीपी252.एन845 2002

297.8'3--डीसी21

2002013077

आईएसबीएन (पेपरबैक): 1-59784-045-9

आईएसबीएन (हार्डकवर): 1-59784-050-5

द्वारा मुद्रित

Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

अप्रैल 2006

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता में बिताए, जो कि ठोस तर्क पर आधारित थी और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में थी।

बेदीउज्जमां उस दौर में जी रहे थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इंगित किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई। ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का इस्तेमाल युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जाता था, और शून्यवादी दृष्टिकोणों का व्यापक आकर्षण था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जाता था और जो लोग उनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें सबसे क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदीउज्जमां ने पूरे लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, उनके मन और आत्मा में वही सब फूंक दिया जो आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों के संस्थानों में सिखाया जाता है।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि अज्ञानता से जैसा कि पहले कहा गया था।

उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय संकेतों का संग्रह है और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदिउज़्ज़माँ सामान्य अर्थों में लेखक नहीं थे।

शब्द। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनके पास एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने इस्लाम की सच्चाई को पेश करने की कोशिश की। **कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी** रिसाले-ए-नूर मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबरी, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और दिल से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के जमा हुए 'अवसाद' को हटाने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बे-दीउज्जमान जोरदार तरीके से लिखते हैं और दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिल और दिमाग में अपने विचारों और विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के लिए जागृत किया जा सके।

इस पुस्तक में रिसाले-आई से चयनित अनुभाग शामिल हैं

केवल **एकत्रण** ।

ईश्वरीय चिंतन

सृष्टि सहभागिता को अस्वीकार करती है
परमेश्वर के साझीदार*

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है।

> यदि अल्लाह के अतिरिक्त पृथ्वी और आकाश में कोई पूज्य होता तो दोनों में अव्यवस्था हो जाती। (21:22)

> अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वही अकेला है; उसका कोई साझी नहीं; उसी का राज्य है और उसी को सारी प्रशंसा प्राप्त है; वही जीवन देता है और मारता है; वही जीवित है और मरता नहीं; उसके हाथ में सारी भलाई है। वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है, और उसी की ओर घर वापसी है।

रमज़ान के दौरान एक रात मैंने बताया कि एकता की पुष्टि करने वाले उन ग्यारह कथनों में से प्रत्येक में ईश्वरीय एकता का एक पहलू और एक विशेष शुभ समाचार (विश्वासियों के लिए) शामिल है। मैंने एक अलंकारिक वार्तालाप के रूप में केवल बिना साथी के अर्थ को समझाया। अब, मस्जिद में भाइयों और मेरे साथ आए दोस्तों के अनुरोध पर, मैंने इस वार्तालाप को लिखने के लिए प्रतिबद्ध किया है।

किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो अविश्वासियों (जो हर चीज का श्रेय प्रकृति या भौतिक कारणों को देते हैं) की ओर से

---

* बत्तीसवाँ शब्द / पहला स्टेशन

या बहुदेववादी या नास्तिक हैं), सृष्टि के किसी भाग पर प्रभु होने या प्रभुत्व रखने का दावा करते हैं। अर्थात्, यह प्राणी दावा करता है कि वह उस भाग का स्वामी है या उस पर शासन करता है, उसे नियंत्रित करता है या उसका निपटान करता है। किसी परमाणु पर आकर, वह उसे भौतिक विज्ञान या प्राकृतिक दर्शन की भाषा में या उसके अनुमानों के अनुसार बताता है कि वह उसका सच्चा स्वामी और स्वामी है। परमाणु सत्य और पुनः प्रकट ज्ञान की भाषा में उत्तर देता है:

> मैं अनेक कार्य करता हूँ, तथा अनंत प्रकार की सृजित, निरंतर विकसित होने वाली सत्ताओं के भीतर, उनके साथ या उन पर कार्य करता हूँ। क्या आपके पास इन कार्यों में मुझे निर्देशित करने का ज्ञान और शक्ति है? मैं एक निश्चित दिशा में कार्य करता हूँ और आगे बढ़ता हूँ-
>
> एक समान संरचना वाले असंख्य अन्य परमाणुओं के साथ सुनिश्चित संबंध।1 क्या आप इन सभी को नियंत्रित और नियोजित कर सकते हैं? यदि आप लाल रक्त कोशिकाओं जैसे जीवों की अनंत जटिलता के स्वामी, व्यवस्थित या प्रबंधित हैं, तो आप उन सभी को नियंत्रित और नियोजित कर सकते हैं।

---

1 प्रत्येक वस्तु जो गति करती है, सूक्ष्म कणों से लेकर ग्रहों तक, वह सभी के लिए अनंत-प्रार्थित की मुहर और एकता को प्रदर्शित करती है। साथ ही, अपनी गति के कारण, प्रत्येक इकाई उन स्थानों पर अधिकार कर लेती है जहाँ वह एकता के नाम पर प्रवेश करती है, इस प्रकार उन्हें अपने सच्चे स्वामी की संपत्ति में शामिल कर लेती है। पौधों से लेकर स्थिर तारों तक, प्रत्येक अचल इकाई एकता की मुहर की तरह है जो अपने निर्माता के संदेश के रूप में अपना स्थान दिखाती है। प्रत्येक पौधा और फल एकता की मुहर और मुहर है जो एकता के नाम पर तर्क देता है कि उसका निवास स्थान और मूल स्थान उसके निर्माता का संदेश है। संक्षेप में, एकता के नाम पर चलते हुए, प्रत्येक इकाई सभी इकाइयों पर अधिकार कर लेती है, जिसका अर्थ है कि जो सभी तारों पर नियंत्रण नहीं कर सकता, वह एक कण पर भी नियंत्रण नहीं कर सकता।

> मैं जिन कणों का एक अणु हूँ, और ऐसा पूर्ण ज्ञान और अनुशासन के साथ करता हूँ, तब वे मेरे स्वामी होने का अनुमान लगाते हैं, और केवल तभी वे मुझे ईश्वर के अलावा किसी अन्य का स्वामी मान सकते हैं।
>
> लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो चुप हो जाओ! तुम मेरे मालिक नहीं हो और मेरे काम में दखल नहीं दे सकते, क्योंकि मेरी सारी गतिविधियाँ और क्रियाएँ इतनी उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित हैं कि उन्हें केवल अनंत बुद्धि और सर्वव्यापी ज्ञान वाला ही चला सकता है। अगर किसी और का इसमें हाथ होता, तो गड़बड़ हो जाती। कोई भी व्यक्ति, जो तुम्हारे जैसा, खुद को जीवन भी नहीं दे सकता, जिसकी दृष्टि और भावना सत्य के प्रति अंधे हैं, जो खुद को प्रकृति के संयोग और दुर्घटनाओं के अधीन मानता है, वह मेरे काम में दखल देने की हिम्मत कैसे कर सकता है?

ढोंगी ने सभी भौतिकवादियों की तरह जवाब दिया: "तो फिर अपने मालिक खुद बनो! तुम किसी दूसरी शक्ति की सेवा में होने का दावा क्यों करते हो?" परमाणु ने जवाब दिया:

> अगर मेरे पास सूर्य के प्रकाश की तरह सर्वव्यापी ज्ञान और उसकी गर्मी की तरह तीव्र शक्ति होती; अगर मेरे पास सूर्य के प्रकाश में मौजूद सात रंगों की तरह सर्वव्यापी भावना शक्ति होती; अगर मेरे पास हर उस प्राणी और हर उस स्थान की ओर देखने के लिए चेहरे और आंखें होतीं जिनसे मेरा अस्तित्व और मेरा स्थान जुड़ा हुआ है; और अगर इन सभी संबंधों में और उन पर मेरा अधिकार होता - तो शायद, मैं अपना स्वामी होने का दावा कर सकता था। फिर भी, अगर मैंने ऐसा किया होता, तो मैं भी तुम्हारे जैसा ही मूर्ख होता। अब मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि तुम्हारा मुझसे कोई लेना-देना नहीं है!

ढोंगी, परमाणु को छोड़कर, परमाणुओं के एक विशेष और सामंजस्यपूर्ण समूह की तलाश करता है

जीवित शरीर की कोशिका। लाल रक्त कोशिका के सामने आकर (और यह सोचकर कि वह इसकी प्रकृति को समझ सकता है और इसके कामकाज को नियंत्रित कर सकता है), वह भौतिक कारणता और प्राकृतिक दर्शन की भाषा में उससे बात करता है: "मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, और तुम मेरे लिए काम करो।" लाल रक्त कोशिका सत्य और दिव्य ज्ञान की भाषा में उत्तर देती है:

> लेकिन मैं अकेला नहीं हूँ। अगर आप भी रक्त सेना में मेरे सभी साथियों को अपने साथ रखते हैं, जिनके साथ मैं हमारे निर्माता की ओर इशारा करते हुए एक ही संरचना साझा करता हूँ, साथ ही वही कर्तव्य और कार्य करता हूँ, और अगर आपके पास पूर्ण और विस्तृत ज्ञान, भयानक और सूक्ष्म शक्ति है, साथ ही उन सभी शरीर कोशिकाओं को निर्देशित करने का पूर्ण ज्ञान है जिनके माध्यम से हम चलते हैं और जिनमें हम काम करते हैं, तो आपके दावों में कुछ समझ हो सकती है। लेकिन चूँकि आप अंधी और बहरी प्रकृति या प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर हैं, इसलिए आप हम पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते, मुझ पर महारत हासिल करना तो दूर की बात है।
>
> हमारा क्रम जितना जटिल है, उतना ही परिपूर्ण भी है। केवल वही जो समय में आगे-पीछे और अंतरिक्ष की सभी दिशाओं में सभी चीजों को देखता, सुनता और जानता है; केवल वही जो सभी चीजों के अस्तित्व और संचालन को नियंत्रित करता है; केवल वही हमारा सच्चा संप्रभु और स्वामी हो सकता है। इसलिए अपने रास्ते पर जाओ, क्योंकि मेरे पास तुम्हारे निरर्थक दावों का जवाब देने से बेहतर और अधिक महत्वपूर्ण काम हैं!

लाल रक्त कणिका को धोखा देने में असमर्थ, प्री-टेंडर आगे बढ़ता है और एक बड़ी इकाई के सामने आता है जिसे वे "कोशिका" कहते हैं। इसे परिचित भाषा में संबोधित करते हुए

प्राकृतिक दर्शन के अनुसार, वह कहता है: "सच है, परमाणु और लाल रक्त कणिका ने मेरी बात नहीं सुनी। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी बात समझ सकते हैं। जैसा कि मैं देख सकता हूँ, आप कई छोटे तत्वों से बने हैं, जैसे किसी कमरे में व्यवस्थित चीजें। मैं इस व्यवस्था में हाथ बँटा सकता हूँ, और इसे व्यवस्थित और पुनर्व्यवस्थित कर सकता हूँ। आप मेरे प्राणी हो सकते हैं, और मैं आप पर अधिकार कर सकता हूँ।" शरीर की कोशिका बुद्धि और सत्य की भाषा में उत्तर देती है:

> यद्यपि मैं छोटा हूँ, फिर भी मैं महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ। मेरे सभी पड़ोसी कोशिकाओं और उस पूरे जीव के साथ मेरा सूक्ष्मतम और फिर भी सबसे मजबूत संबंध है जिसका मैं एक हिस्सा हूँ। मैं उदाहरण के लिए, धमनियों और नसों, संवेदी और मोटर तंत्रिकाओं, आकर्षण और प्रतिकर्षण की विद्युत शक्तियों और मेरे आकार, आकृति और प्रजनन को निर्धारित करने वाले सिद्धांतों या तत्वों के साथ महत्वपूर्ण कार्य करता हूँ। यदि आपके पास एक संपूर्ण जीव बनाने, धमनियों और नसों और तंत्रिकाओं को आदेश देने और विनियमित करने और हमारे रूप और कार्य को प्रबंधित करने वाली सभी विविध शक्तियों और सिद्धांतों को काम में लगाने का ज्ञान और शक्ति है; यदि आप अदम्य शक्ति और सर्वज्ञ बुद्धि के साथ, कला और गुणवत्ता में मेरे समान असंख्य शरीर कोशिकाओं को निर्देशित कर सकते हैं, तो अपनी क्षमता दिखाएँ। तब शायद, आप मुझ पर प्रभुत्व करने या मुझे बनाने का दावा कर सकते हैं।
>
> लेकिन जब आप ऐसा नहीं कर सकते, तो मुझे छोड़ दें - अभी भी लाल रक्त कोशिकाएँ मेरे लिए पोषण ले जा रही हैं, सफ़ेद रक्त कोशिकाएँ उन बीमारियों का सामना कर रही हैं जो मुझे ख़तरे में डाल सकती हैं - मैं व्यस्त हूँ, इसलिए अपने घमंड में मेरा समय और बर्बाद न करें। आप जितना खाली कोई नहीं है

सच्ची समझ, सच्ची सुनने और देखने की क्षमता कभी भी हमारे अस्तित्व में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। हमारा क्रम इतना सटीक, नाजुक और परिपूर्ण है कि केवल पूर्ण बुद्धि, ज्ञान और शक्ति वाला ही हमें नियंत्रित कर सकता है।2 अगर ऐसा होता

2 सर्वज्ञ निर्माता ने मानव शरीर को एक सुव्यवस्थित शहर की तरह बनाया है। नसें टेलीफोन और टेलीग्राफ के रूप में कार्य करती हैं, जबकि कुछ रक्त वाहिकाएं पानी को फव्वारे तक ले जाने वाली पाइप के रूप में कार्य करती हैं, जिसके माध्यम से रक्त (जीवन का जल) बहता है। रक्त में दो प्रकार के कण होते हैं: लाल वाले शरीर की कोशिकाओं को पोषक तत्व पहुंचाते हैं, जो ईश्वरीय नियम के अनुसार उनका पोषण करते हैं (व्यापारियों और भोजन वितरित करने वाले अधिकारियों के समान); सफ़ेद वाले, जो संख्या में कम होते हैं, बीमारी जैसे आक्रमणकारियों से रक्षा करते हैं (सैनिकों के समान)। जब वे सक्रिय रूप से रक्षा में लगे होते हैं, तो वे मावलवी दरवेशों की तरह दो चक्कर लगाते हैं और एक अद्भुत और तेज़ तरलता प्रदर्शित करते हैं। रक्त कोशिकाओं को हुए नुकसान की मरम्मत करता है और कोशिकाओं से अपशिष्ट पदार्थ एकत्र करके शरीर को साफ करता है। नसों और धमनियों के लिए, एक शुद्ध रक्त को ले जाने के लिए चैनल बनाती है जबकि दूसरी अशुद्ध रक्त के लिए चैनल बनाती है जो अपशिष्ट को इकट्ठा करती है।

सर्वज्ञ निर्माता ने हवा में दो तत्व बनाए: नाइट्रोजन और ऑक्सीजन। जब ऑक्सीजन श्वसन के दौरान रक्त से मिलती है, तो यह रक्त को प्रदूषित करने वाले अशुद्ध कार्बन तत्व को अपनी ओर खींचती है, बिल्कुल एम्बर की तरह। कार्बन के साथ मिलकर यह दोनों पदार्थों को कार्बोनिक एसिड गैस में बदल देती है। ऑक्सीजन शरीर के तापमान को बनाए रखने में भी मदद करती है और रक्त को शुद्ध करती है। रसायन विज्ञान में, सर्वज्ञ निर्माता ने ऑक्सीजन और कार्बन को एक पारस्परिक उत्साह, एक प्रकार का रासायनिक स्नेह दिया, ताकि, दिव्य नियम के अनुसार, वे एक-दूसरे के पास पहुँचें और फिर संयोजित हों। विज्ञान ने समझाया है कि यह संयोजन, दहन का एक रूप होने के नाते, इस प्रकार गर्मी उत्पन्न करता है:

ऑक्सीजन और कार्बन परमाणुओं की अलग-अलग गतियाँ होती हैं, जो संयुक्त होने पर एक गति बन जाती हैं, प्रत्येक परमाणु जोड़ी में अब एक परमाणु की गति होती है। इस प्रकार मूल दो गतियों में से एक है

> अन्यथा, हमारी एकजुटता और व्यवस्था कायम नहीं रह पाएगी या शीघ्र ही अराजकता में बदल जाएगी।

निराश होकर, ढोंगी एक और भी बड़ी इकाई की तलाश करता है और एक मानव शरीर का सामना करते हुए, अज्ञानी प्रकृति और त्रुटिपूर्ण दर्शन की भाषा में तर्क को दोहराता है: "मैं कह सकता हूँ कि तुम मेरी हो, कि तुम्हारे स्वामित्व और प्रबंधन में मेरा हिस्सा है।"

मानव शरीर ज्ञान और सत्य की भाषा में और अपनी व्यवस्था की “प्राकृतिक” भाषा में उत्तर देता है:

> क्या आपके पास मेरे समान सभी मानव शरीरों को नियंत्रित करने और निर्देशित करने का ज्ञान और शक्ति है?
>
> सर्वोच्च शक्ति और सृजन के समान लक्षण? क्या आपके पास प्रकाश, वायु और जल के भण्डारों के साथ-साथ सभी पौधों और जानवरों पर प्रभुत्व है, जो मेरे प्रावधान और पोषण का आधार और भंडार हैं? क्या आपके पास असीम ज्ञान और अनंत शक्ति है जिसके द्वारा मन, बुद्धि और आत्मा जैसी अमूल्य, अमूर्त संस्थाएँ मेरे जैसे संकीर्ण, शारीरिक आवरण में इतनी सुरक्षित रूप से रखी जाती हैं, और अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य करके "पूजा" करती हैं
>
> से बना

"खोया हुआ।" यह "खोया हुआ" गति सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता के नियम द्वारा ऊष्मा में बदल जाती है। "गति ऊष्मा उत्पन्न करती है" एक स्थापित सिद्धांत है। यह रासायनिक संयोजन रक्त से कार्बन को हटाता है और शारीरिक तापमान को बनाए रखता है, साथ ही, रक्त को शुद्ध करता है। साँस लेते समय, ऑक्सीजन शरीर के जीवन के जल को साफ करती है और जीवन के लिए इसकी अग्नि को प्रज्वलित करती है। साँस छोड़ते समय, ऑक्सीजन मुँह में शब्दों (दिव्य शक्ति के चमत्कार) को बनाने में सक्षम बनाती है।

क्या आप जानते हैं कि आपमें इतनी शक्ति, ज्ञान और बुद्धिमत्ता है? अगर आपके पास इतनी शक्ति, ज्ञान और बुद्धिमत्ता है, तो उसका प्रदर्शन करें - तभी आप अपने आप को और दूसरों को भी अपने कामों में शामिल करने का दावा कर सकते हैं।

मुझे प्रबंधित करें.

लेकिन जब तुम ऐसा नहीं कर सकते, तो चुप रहो! मेरा निर्माता सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी और सर्वश्रवण है - यह उस पूर्णता से प्रमाणित होता है जिसके साथ मैं संगठित हूँ और मेरे चेहरे पर एकता का चिन्ह है। तुम्हारे जैसा अज्ञानी और अक्षम प्राणी कभी भी उसकी कला में थोड़ा भी हाथ नहीं रख सकता।

ढोंगी, इस बात से हैरान कि मानव शरीर के सभी बिंदु उसके दावे को खारिज करते हैं, आगे बढ़ता है और एक प्रजाति के रूप में मानवता का सर्वेक्षण करता है, सोचता है: वे इतने विविध और जटिल समाजों में रहते हैं - मैं देखता हूँ कि शैतान उनकी इच्छा के मामलों और उनके सामाजिक संबंधों में हस्तक्षेप करने का एक तरीका ढूँढ़ लेता है। क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे वे अपने विचारों को व्यक्त कर सकें?

क्या मुझे उनके शरीर के निर्माण, गठन और संचालन में प्रवेश करने का कोई रास्ता मिल सकता है? अगर मैं ऐसा कोई बिंदु पा सकता हूं, तो मैं उस शरीर और उसकी कोशिकाओं को नियंत्रित करने में सक्षम हो जाऊंगा, जिन्होंने मुझे ठुकरा दिया।

इस इरादे से, वह अंधे प्रकृति और गलत दर्शन की परिचित भाषा में प्रजातियों को संबोधित करता है: "आप बहुत विविध और बहुत विषमता में दिखाई देते हैं। मैं आपका स्वामी और मालिक हूँ या, कम से कम, आपके निर्माण में मेरा हिस्सा है।" इस पर, मानवता सत्य और वास्तविकता की भाषा में और ज्ञान और व्यवस्था की भाषा में जवाब देती है:

क्या आपके पास वह शक्ति, ज्ञान और बुद्धि है जिससे आप पृथ्वी के चेहरे को ढंकने वाली समृद्ध बनावट बना सकें, जिसे विभिन्न प्रकार के कपड़ों, हजारों खनिजों और पौधों और जानवरों की प्रजातियों, जिसमें मानवता भी शामिल है, से परिपूर्ण बुद्धि के साथ बुना गया है? क्या आप, समान बुद्धि के साथ, इस बनावट को नवीनीकृत कर सकते हैं और ऐसा लगातार करते रह सकते हैं? क्या आपके पास वह सर्वव्यापी शक्ति और सर्व-बोधक विज्ञान है जो पृथ्वी का प्रबंधन करता है, जिसके हम फल हैं, और ब्रह्मांड का, जिसके हम बीज हैं? क्या आप हमें ब्रह्मांड के पार से और मापी गई मात्रा में, हमारे भरण-पोषण के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री भेज सकते हैं? क्या आप मेरे जैसे सभी व्यक्तियों को, भूत और भविष्य में उत्पन्न कर सकते हैं, जिनके चेहरों पर मेरे जैसे ही सर्वोच्च राजसी चिन्ह हों? यदि ऐसा है, तो शायद आप मुझ पर प्रभुत्व का दावा कर सकते हैं।

लेकिन जब आप ऐसा नहीं कर सकते, तो चुप रहें! मेरी प्रजाति में विविधता पर टिप्पणी करने से यह कहने की हिम्मत न करें कि मुझमें आपका हाथ है, क्योंकि वह विविधता हमारी व्यवस्था की पूर्णता का हिस्सा है। विविधता और बहुलता, पॉवर द्वारा नियति की पुस्तक [एक आदर्श क्रम में प्राणियों की उत्पत्ति को समाहित करते हुए] से एक आदर्श क्रम के साथ बनाई गई प्रतियां हैं। हमारी उपस्थिति की विविधता हमारे रूपों [नियति द्वारा निर्धारित] का एक प्रकार का पुनरुत्पादन है - जैसा कि पौधों और जानवरों (जो हमसे कमतर हैं, हमारी निगरानी में हैं, और जिनका हम अध्ययन करते हैं) की पूर्ण विविधता और व्यवस्था भी प्रमाणित करती है।

क्या यह संभव है कि जो इस संसार की बनावट में फैले हुए विविध वस्त्रों को बड़ी कुशलता से बुनता है, वह इसके रचयिता से भिन्न है, कि फल का रचयिता उस वृक्ष के रचयिता से भिन्न है जिससे वह उगता है, तथा कि बीज का रचयिता उस फल के रचयिता से भिन्न है जिससे वह उत्पन्न होता है? तुम अंधे हो,

> क्योंकि तुम मेरे चेहरे पर उसकी सर्वशक्तिमत्ता के चमत्कार और मेरे संविधान में उसकी रचना के चमत्कार नहीं देखते। अगर तुमने देखा होता, तो तुम समझ गए होते कि मेरे निर्माता की नज़र से कोई भी चीज़ नहीं बच सकती या वह मनमाने ढंग से काम नहीं करता। वह सितारों को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक परमाणु बनाता है। वह वसंत को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक फूल बनाता है। उसने विशाल ब्रह्मांड की अनुक्रमणिका को मेरे संविधान में पूर्ण संगति के साथ रखा है।
>
> क्या कोई ऐसा व्यक्ति जो तुम्हारे जैसा भौतिक, अक्षम, अंधा और बहरा हो, ऐसी सत्ता की कलाकारी में हाथ रख सकता है? इसलिए चुप रहो और चले जाओ!

फिर ढोंगी धरती के चेहरे पर फैली व्यापक बनावट की ओर मुड़ता है, जैसे कि एक अलंकृत लबादा और उससे कार्य-कारण के नाम पर और प्राकृतिक दर्शन की भाषा में बात करता है: "मैं तुम्हें नियंत्रित कर सकता हूँ। मैं तुम्हारा मालिक हूँ, या कम से कम तुममें मेरा हिस्सा है।"

बनावट सत्य के नाम पर और ज्ञान की भाषा में उत्तर देती है:

> यदि आपके पास सभी बनावटों को बनाने और बुनने का कौशल और शक्ति है जो पिछले समय की रेखा पर लटकाए गए हैं, सभी समय में निर्बाध रूप से बिछाए गए, खोले गए और फिर से बिछाए गए हैं, और जो भविष्य के समय की रेखा पर पूर्व-डिज़ाइन किए गए कार्यक्रमों और पैटर्न के अनुसार लटके होंगे

3 वास्तव में, इसकी बनावट सजीव है, जो नियमित रूप से जीवन के संकेत देती रहती है। इसकी कढ़ाई निरंतर पूर्ण बुद्धि और व्यवस्था के साथ नवीनीकृत होती रहती है ताकि इसके बुनकरों के नामों की विभिन्न, हमेशा अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित की जा सकें।

सबसे अधिक सटीकता के साथ और नियति के ढांचे के अनुसार, प्रत्येक सुंदर, उद्देश्यपूर्ण और अनोखे ढंग से सुसज्जित; यदि आपके पास अमूर्त हाथ हैं जो पृथ्वी के निर्माण से लेकर उसके विनाश तक पहुंच सकते हैं, या बल्कि, आरंभ न होने की अनंतता से आने वाले अनंत काल तक; यदि आपके पास इस संरचना के भीतर सभी व्यक्तियों को बनाने की शक्ति और विज्ञान है, उन्हें सटीक क्रम और बुद्धिमत्ता के साथ पुनर्स्थापित और नवीनीकृत करना; यदि आप स्वयं पृथ्वी का निर्माण और स्वामित्व कर सकते हैं जो कि मेरे लिए एक आदर्श है और मुझे एक आवरण की तरह रखती है - केवल तभी यदि आप कर सकते हैं, केवल तभी मुझ पर प्रभुत्व का दावा करें - यदि नहीं, तो चले जाइए!

तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं है!

मेरी समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण विविधता में एकता के स्पष्ट संकेत और उसकी अद्वितीयता की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। केवल वही जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, जो एक साथ असंख्य कार्य कर सकता है, जो सभी प्राणियों और उनके कार्यों को, चाहे वे आंतरिक हों या बाहरी, एक ही पल में देख सकता है, जो समय, स्थान या आयाम से असीम होते हुए भी हर जगह मौजूद और सतर्क रहता है, और जिसके पास अनंत ज्ञान, विज्ञान और शक्ति है - केवल ऐसा ही व्यक्ति कभी भी मेरा स्वामी या मुझ पर प्रभुत्व रख सकता है।

ढोंगी पृथ्वी की ओर मुड़ता है, उसे धोखा देने की उम्मीद करता है,[4] और उसी तर्क को दोहराता है

[4] संक्षेप में, कण या परमाणु से शुरू करते हुए, प्रत्येक वस्तु ने ढोंगी को अगले स्तर पर भेजा: कण या परमाणु से लेकर लाल रक्त कणिका, कोशिका, शरीर, मानवता, पृथ्वी का बाहरी वस्त्र, पृथ्वी एक ग्लोब के रूप में, सूर्य और सितारे, क्रमशः। प्रत्येक ने कहा: "चले जाओ! यदि आप अगले को वश में कर सकते हैं

कार्य-कारण और मात्र प्रकृतिवाद की भाषा में: "मैं देखता हूँ कि तुम ब्रह्मांड में बेकार घूमते हो। निश्चित रूप से तुम्हारा कोई स्वामी नहीं हो सकता, और इसलिए मैं तुम पर अपना दावा करता हूँ।"

यह सुनकर पृथ्वी सत्य के नाम पर गरजती है:

> मूर्ख मत बनो! मैं बिना इसके कैसे घूम सकता हूँ?
>
> गुरु? क्या आपने कभी मेरे वस्त्र के निर्माण में या इसके किसी छोटे से हिस्से या बनावट में कोई अव्यवस्था, बुद्धि या कौशल की कमी देखी है, जिसके कारण आप यह कहने का साहस करते हैं कि मैं बेकार घूमता रहता हूँ? क्या आप मेरी कक्षा के स्वामी होने का दावा करते हैं, जिसे पार करने में मनुष्य की गति से लगभग 25,000 वर्ष लगेंगे, लेकिन जिसे मैं अपने वार्षिक चक्कर में पूर्ण अनुशासन और सटीकता के साथ पूरा करता हूँ? क्या आप मेरे दस साथी ग्रहों के स्वामी होने का दावा करते हैं, जो मेरे जैसे ही अपनी-अपनी कक्षाओं में अपने नियत कार्य करते हैं? क्या आप दावा करते हैं कि आपके पास सूर्य को बनाने और नियंत्रित करने का असीमित विज्ञान और शक्ति है, जो हमारी कक्षाओं को एकत्रित और केंद्रित करता है, वे कक्षाएँ जिनसे हम दया के गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से बंधे हैं, और मुझे और अन्य ग्रहों को इसके चारों ओर चक्कर लगाने के लिए मजबूर करता है?

मुझसे एक कदम आगे बढ़ो, ऐसा करो, और फिर लौट आओ और मुझ पर अधिकार करने का प्रयत्न करो। यदि आप उस स्तर को अपने अधीन नहीं कर सकते, तो आप मुझे भी अपने अधीन नहीं कर सकते!” इस प्रकार जिसकी सत्ता में तारे शामिल नहीं हैं, उसका एक कण पर भी प्रभुत्व का कोई स्वीकार्य दावा नहीं है।

5 यदि किसी वृत्त की त्रिज्या लगभग 180 मिलियन किलोमीटर है, तो वृत्त लगभग 25,000 वर्षों की दूरी तय करता है [पैदल तय करने के लिए, बशर्ते कोई व्यक्ति एक घंटे में 4 किलोमीटर (3 मील से कम) की दूरी तय करे और प्रतिदिन 5 घंटे पैदल चले।]

> चूँकि आप इस तरह का दावा नहीं कर सकते, इसलिए मुझे छोड़ दें, क्योंकि मुझे काम करना है। हमारा विस्मयकारी चक्कर, उद्देश्यपूर्ण समर्पण और शानदार अनुशासन दर्शाता है कि हमारा निर्माता एक ऐसा प्राणी है जिसके सामने सभी प्राणी पूरी तरह से समर्पित हैं और पूरी तरह से समर्पित हैं - जैसे एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक अपने वरिष्ठ के आदेशों के आगे समर्पित होता है। वह महामहिम का बुद्धिमान और पूर्ण शासक है, जो सूर्य और ग्रहों को उनके उचित क्रम में उसी तरह रखता है, जिस तरह वह प्रत्येक वृक्ष को उसके उचित फलों से सजाता है।

पृथ्वी पर शासन करने में असफल होने के बाद, ढोंगी सूर्य की ओर मुड़ता है, इस उम्मीद में कि वह वहाँ एक रास्ता खोल सकता है। चूँकि सूर्य बहुत बड़ी इकाई है, इसलिए वह पृथ्वी पर नियंत्रण पाने के लिए इसका उपयोग करने की उम्मीद करता है। भगवान सर्वशक्तिमान के साथ साझेदारों को जोड़ने के तरीके के नाम पर और शैतानी दर्शन की भाषा में, जैसा कि सूर्य-पूजक करते हैं, ढोंगी सूर्य को संबोधित करते हुए कहता है: "आप एक सम्राट हैं। आप अपने खुद के मालिक हैं। आप जो चाहें कर सकते हैं।"

सूर्य सत्य और वास्तविकता के नाम पर तथा दिव्य ज्ञान की भाषा में उत्तर देता है:

> नहीं, बिलकुल नहीं! तुम ऐसा झूठ कैसे बोल सकते हो! मैं तो एक आज्ञाकारी अधिकारी हूँ, अपने मालिक के गेस्ट हाउस में एक मोमबत्ती से ज़्यादा कुछ नहीं। मैं एक मक्खी, यहाँ तक कि उसका पंख भी नहीं खरीद सकता, क्योंकि इतनी छोटी सी चीज़ में भी ऐसी अमूर्त क्षमताएँ और बेहतरीन, उत्कृष्ट कलाकृतियाँ होती हैं, जो उसकी आँख और कान जैसी होती हैं। मेरी किसी भी कार्यशाला में उनके जैसा कुछ नहीं है। मैं उनमें से सबसे छोटा भी नहीं बना सकता।

यद्यपि सूर्य द्वारा फटकारे जाने के बावजूद, ढोंगी फिरौन की तरह तर्क करता है, जो अहंकारी प्राणी हैं और खुद को देवता के रूप में प्रचारित करते हैं: “मैं कार्य-कारण के नाम पर तुम्हें अपना मानता हूँ, क्योंकि तुम अपने स्वामी नहीं हो, बल्कि केवल एक सेवक हो।” सूर्य सत्य के नाम पर और अपने निर्माता के प्रति आज्ञाकारिता की भाषा में उत्तर देता है: “मैं केवल उसी सत्ता का हो सकता हूँ जिसने मुझे और मेरे जैसे सभी दीप्तिमान सितारों को बनाया है, जिसने उन्हें पूर्ण बुद्धि के साथ उनके पदों पर स्थिर किया है, उन्हें महिमा में घुमाता है और उसके द्वारा विशाल आकाश को सुशोभित करता है।”

फिर ढोंगी तारों के बीच आता है और सोचता है: “शायद मुझे यहाँ कुछ ग्राहक मिल जाएँ।” उनसे कार्य-कारण और उसके भागीदारों के नाम पर तथा भ्रष्ट दर्शन की भाषा में बात करते हुए, जैसा कि तारा-पूजक करते हैं, वह कहता है: “आप अवश्य ही कई अलग-अलग शासकों के नियंत्रण में होंगे, क्योंकि आप एक-दूसरे से इतनी अधिक दूरी पर स्थित हैं।” इस पर, एक तारा, अन्य सभी की ओर से बोलते हुए, उसे उत्तर देता है:

> आप कितने मूर्ख और नासमझ होंगे, जो हमारे स्वभाव में सृष्टिकर्ता की एकता और उसकी विशिष्टता की छाप को न देख या समझ पाते हैं। क्या आप नहीं जानते कि हमारा संगठन कितना निरपेक्ष है, हम जिन नियमों का पालन करते हैं, वे कितने सुरक्षित हैं? आपको लगता है कि हमारे पास कोई व्यवस्था नहीं है। वास्तव में, हम एक अद्वितीय और अविभाज्य सत्ता के हाथ की कृति और सेवक हैं, जो आकाश (हमारे) को धारण करता है।

समुद्र), ब्रह्मांड (हमारा वृक्ष), और अंतरिक्ष की विशालता (हमारा विस्तृत, गतिशील क्षेत्र) उसके नियंत्रण में है। मानव उत्सवों को दर्शाने वाले बहुरंगी दीपों की तरह, हम उसके संपूर्ण प्रभुत्व के दीपस्तंभित साक्षी हैं, उसके राज्य और प्रभुत्व के असीम अंतरिक्ष में चमकते हुए चमकदार सबूत।

हम में से प्रत्येक एक चमकता हुआ सेवक है जो उसकी महिमा को, निकट और दूर, इस दुनिया में और अगले में, और परे कई दुनियाओं में, उसकी रचना की अनंतता के भीतर प्रदर्शित करता है। हम में से प्रत्येक ईश्वर की शक्ति से एक चमत्कार है

एक, सृष्टि के वृक्ष पर एक पूर्णतया व्यवस्थित फल, ईश्वर की एकता का एक उज्ज्वल प्रकटीकरण, उसके दूतों के लिए एक घर, पर्वत और मस्जिद, उच्चतर लोकों का एक दीपक और सूर्य, एक आभूषण, एक फूल, आकाशीय क्षेत्र का एक महल, स्वर्गीय महासागर में एक प्रकाशमान मछली, और प्रत्येक स्वर्ग के सम्मुख एक सुंदर आंख। हमारे विशाल समुदाय में शांति के बीच गहन मौन, ज्ञान में गति, राजसी भव्यता के साथ प्रकाश का आभूषण, पूर्ण सामंजस्य में सर्वाधिक विविध सौंदर्य, और पूर्ण संतुलन में सर्वोच्च कला विद्यमान है।

चूँकि आप हम पर अव्यवस्था और खोखली दूरियों का, कोई कर्तव्य न होने और कोई स्वामी न होने का आरोप लगाते हैं, जबकि हम असंख्य भाषाओं में अपने महान निर्माता की एकता और उनके शाश्वत-प्रार्थना-योग्य होने का दावा करते हैं।

---

6 दूसरे शब्दों में, हम केवल संकेतकर्ता हैं जो सर्वशक्तिमान की रचना के चमत्कारों को देख रहे हैं और दूसरों को भी उन्हें देखने के लिए संकेत दे रहे हैं। स्वर्ग पृथ्वी के दिव्य कलाकार के चमत्कारों को देखता है-

असंख्य आँखों से देखो। जैसे देवदूत आकाश में देखते हैं, वैसे ही तारे पृथ्वी को देखते हैं, जो आश्चर्यों का एक प्रदर्शन हॉल है, और उनका ऐसा करना सचेत प्राणियों को इसे ध्यान से देखने के लिए प्रेरित करता है।

> पूर्णता, अनुग्रह और सौंदर्य के उनके सभी गुणों के साथ-साथ - चूंकि आप हम पर आरोप लगाते हैं, जिनकी पवित्रता बेदाग है, जिनकी आज्ञाकारिता और सेवकाई पूर्ण है, आप अपनी बेतुकी धृष्टता के लिए मुंह पर एक थप्पड़ के पात्र हैं!

तारा ढोंगी के चेहरे पर शैतान को पत्थर मारने की मुद्रा में प्रहार करता है, और उसे तारों के क्षेत्र से नरक की तह में फेंक देता है। यह शैतान को भी पत्थर मारता है।

प्राकृतिक दर्शन को अनिश्चितता के तूफानों में,7
और संयोग को गैर-अस्तित्व के कुएं में फेंक देता है।

जो लोग एक ईश्वर के राज्य में से कुछ हिस्सा अपने लिए हड़प लेते हैं, वे सब असंभावना और असंभवता के घोर अंधकार में चले जाते हैं, और सच्चे धर्म के विरुद्ध हर तर्क को सबसे निचले स्तर पर ले जाते हैं। तब तारे एक साथ पवित्र आदेश सुनाते हैं: यदि ईश्वर के अलावा (पृथ्वी या आकाश में) कोई देवता होता, तो दोनों में अव्यवस्था होती (21:22), और पुष्टि करते हैं:

---

7 अपनी चूक के बाद, प्रकृति ने पश्चाताप किया। यह समझते हुए कि उसका उचित उद्देश्य और दायित्व सक्रिय होना और प्रभाव उत्पन्न करना नहीं है, बल्कि ग्रहण करना और क्रियान्वित होना है, उसने महसूस किया कि वह ईश्वरीय निर्धारण की एक तरह की नोटबुक है, जो परिवर्तन और परिवर्तन के लिए अतिसंवेदनशील है; भगवान की शक्ति का एक प्रकार का कार्यक्रम, जो सर्वशक्तिमान महामहिम द्वारा स्थापित सृष्टि के नियमों के समूह के समान है, उनके नियमों का एक संग्रह है। इसने पूर्ण समर्पण के साथ अपनी पूजा का कर्तव्य ग्रहण किया, अपनी पूर्ण शक्तिहीनता को स्वीकार किया और इस प्रकार ईश्वर की रचना और भगवान की कृति की उपाधि प्राप्त की।

"ईश्वर के साथ किसी भी साझेदार के लिए कोई स्थान नहीं है, न तो मक्खी के पंख के बीच और न ही स्वर्ग के तारों और अंतरिक्षों के बीच।"

तेरी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उस चीज़ के जो तूने हमें सिखाई है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद, जो आपकी विविध सृष्टि के बीच आपकी एकता के दीपक हैं, तथा आपके ब्रह्माण्ड के प्रदर्शन कक्ष में आपकी एकता के संदेशवाहक हैं, तथा उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद प्रदान करें।

दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ*

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है

हे अल्लाह, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसके ही अच्छे नाम हैं। (20:8)

एक संप्रभु के पास अलग-अलग उपाधियाँ होती हैं जिनके द्वारा उसे उसकी सरकार के विभिन्न विभागों में जाना और उल्लेख किया जाता है, उसके विषयों के वर्गों के बीच अलग-अलग पदनाम और विशेषताएँ होती हैं, और उसके शासन के स्तरों के लिए अलग-अलग नाम और चिह्न होते हैं। उदाहरण के लिए, वह सर्वोच्च न्यायाधीश (न्याय विभाग), मुख्य प्रशासक (सिविल सेवा), कमांडर-इन-चीफ (सेना) और सर्वोच्च शिक्षक (शिक्षा विभाग) होता है। यदि आप उसके बाकी नाम और उपाधियाँ जानते हैं, तो आप समझ जाएँगे कि उसके पास अपनी सरकार के विभागों और उसके शासन के स्तरों से संबंधित कई नाम और उपाधियाँ हो सकती हैं।

ऐसा लगता है मानो अपने सार्वजनिक व्यक्तित्व और निजी संचार प्रणाली के कारण वह हर विभाग में मौजूद है। अपने कानूनों, नियमों और प्रतिनिधियों के माध्यम से वह सभी अधिकारियों का पर्यवेक्षण करता है, सभी विषयों पर नज़र रखता है और उन्हें देखता है। हर स्तर पर पर्दे के पीछे-

---

* चौबीसवाँ वचन / पहली शाखा

वह प्रशासन करता है, अपने आदेशों को क्रियान्वित करता है, तथा अपने आदेश, ज्ञान और शक्ति के माध्यम से सतर्क रहता है।

इसी तरह, संसार के स्वामी, अनंत काल के अधिपति, अपने प्रभुत्व की अभिव्यक्तियों के स्तरों पर प्रतिष्ठा और पदनाम रखते हैं। ये सभी भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे के अनुरूप हैं। उनके नाम और चिह्न उनकी दिव्यता के क्षेत्रों में भिन्न हैं, लेकिन उनकी अभिव्यक्तियाँ एक दूसरे के साथ संकेंद्रित हैं। उनके मा-

उनके शासन के शानदार निष्पादन में, उनके प्रतिनिधित्व और उपाधियाँ भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे से मिलती जुलती हैं। उनकी शक्ति के संचालन में, उनकी उपाधियाँ भिन्न हैं लेकिन एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। उनकी विशेषताओं की अभिव्यक्तियों में-

लेकिन, उसके पास खुद को प्रकट करने के पवित्र तरीके हैं जो अलग-अलग हैं लेकिन एक-दूसरे की ओर इशारा करते हैं। उसके अभिनय के तरीकों में, उसके बुद्धिमान कार्य कई हैं लेकिन एक-दूसरे से परिपूर्ण हैं। उसकी रंगीन कलात्मकता और कला के विविध कार्यों में, उसके आधिपत्य के शानदार पहलू अलग-अलग हैं लेकिन एक-दूसरे से मेल खाते हैं।

प्रत्येक संसार और प्राणियों के विभाग में, उनके प्रत्येक सबसे सुंदर नाम को व्यक्तिगत रूप से प्रकट किया जाता है। जिस संसार या क्षेत्र में कोई विशेष नाम प्रमुख है, वहाँ अन्य सभी नाम गौण हैं। प्रत्येक स्तर और प्राणियों के विभाग में, आकार की परवाह किए बिना, ईश्वर का अपना एक विशेष प्रदर्शन, प्रभुत्व का एक विशेष प्रकटीकरण और एक विशेष अभिव्यक्ति है।

नाम का। यद्यपि विचाराधीन नाम की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है, फिर भी यह किसी विशेष चीज़ पर इस तरह से ध्यान केंद्रित करता है कि आपको लगता है कि यह उस चीज़ के लिए विशिष्ट है।8

इसके अलावा, हालांकि सर्व-महान सृष्टिकर्ता हर चीज़ के खुद से ज़्यादा करीब है, फिर भी वह 70,000 प्रकाश के पर्दों के ज़रिए उससे अलग है। उदाहरण के लिए, विचार करें कि सृष्टिकर्ता के नाम की रचनात्मकता की विशेष डिग्री जो आप में प्रकट होती है और ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता के रूप में इसकी सार्वभौमिक और सबसे बड़ी अभिव्यक्ति के बीच कितने परदे हैं। यह सुझाव देता है कि यदि आप पूरे ब्रह्मांड से परे जा सकते हैं, तो आप सृष्टि के द्वार से सृष्टिकर्ता के नाम की अभिव्यक्तियों की उच्चतम सीमा तक पहुँच सकते हैं और उसके करीब पहुँच सकते हैं।

रचनात्मकता के गुण का क्षेत्र.

चूँकि पर्दों में एक-दूसरे की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ हैं, नाम एक-दूसरे के साथ संकेन्द्रित प्रतीत होते हैं, पदनाम एक-दूसरे के अनुरूप हैं, निरूपण एक-दूसरे के समान हैं, संक्रियाएँ एक-दूसरे के समान हैं।

---

[8] उदाहरण के लिए, ईश्वर अपने लगभग सभी नामों (जैसे, दयालु, निर्माता, निर्माता, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ, आदि) को प्रत्येक व्यक्ति पर प्रकट करता है। हालाँकि, किसी विशेष नाम की अभिव्यक्ति एक व्यक्ति पर अन्य की तुलना में अधिक स्पष्ट हो सकती है। यदि सर्वज्ञ नाम इस प्रकार प्रकट होता है, तो वह व्यक्ति बुद्धिमान हो सकता है। इस प्रकार लोगों के अलग-अलग चरित्र होते हैं और हर किसी की एक विशेष पेशे के प्रति क्षमता और प्रवृत्ति होती है। (ट्र.)

एक दूसरे को परिपूर्ण करें, और प्रभुता के विभिन्न स्वभाव एक दूसरे के साथ सहयोग करते हैं, तो यह निश्चित रूप से आवश्यक है कि जो व्यक्ति सर्वशक्तिमान ईश्वर को उनके नामों, उपाधियों या उनके प्रभुता के पहलुओं में से किसी एक से पहचानता है, उसे उनके अन्य उपाधियों, कार्यों और प्रभुता के पहलुओं को अस्वीकार नहीं करना चाहिए। यदि हम एक नाम की अभिव्यक्ति से दूसरे नामों की ओर नहीं बढ़ते हैं, तो हम घाटे में हैं।

उदाहरण के लिए, अगर हम सर्वशक्तिमान और सृष्टिकर्ता के कार्यों को देखने के स्थान पर सर्वज्ञ को नहीं देखते हैं, तो हम प्रकृति को स्वयं-उत्पन्न मानकर असावधानी और गुमराही में पड़ सकते हैं। इसलिए हमें हमेशा "वह" और "वह ईश्वर है" का जाप करना चाहिए, और हर चीज़ से सुनना और सुनना चाहिए: "वह ईश्वर है, एक है।" सभी प्राणियों के साथ एक स्वर में, हमें घोषणा करनी चाहिए: "कोई ईश्वर नहीं है लेकिन वह है।" स्पष्ट कुरान, इस घोषणा के माध्यम से: "ईश्वर, कोई ईश्वर नहीं है लेकिन वह है। उसके सबसे सुंदर नाम हैं," इन सत्यों की ओर इशारा करता है।

यदि आप उन महान सत्यों को करीब से देखना चाहते हैं, तो एक तूफानी समुद्र या कांपती धरती से पूछें: “तुम क्या कह रहे हो?” आप उन्हें दोहराते हुए सुनेंगे: “हे महाप्रतापी। हे महाप्रतापी, हे सम्माननीय शक्तिशाली। हे सर्व-सम्मोहक।” छोटे जीवों और उनके बच्चों से पूछें जिन्हें हर जगह देखभाल और करुणा के साथ रखा जाता है: “तुम क्या कह रहे हो?” वे भजन गाएंगे: “हे दयालु, हे दयालु, हे सबसे

दयालु भगवान।"9 फिर सुनो कि स्वर्ग कैसे गाता है: "हे कृपालु भगवान।" पृथ्वी को सुनो, जो कहती है: "हे कृपालु भगवान।" जानवरों पर ध्यान दो और उन्हें पुकारते सुनो: "हे सबसे दयालु भगवान, हे प्रदाता।" जब आप झरने से पूछते हैं, तो आप

9 एक बार मैंने कुछ बिल्लियों को देखा - वे केवल खाती, खेलती और सोती थीं। बिल्लियों को, जिनके पास कोई कर्तव्य नहीं है, धन्य क्यों माना जाता है? जब मैं बिस्तर पर गया, तो एक बिल्ली मेरे पास आई और मेरे तकिए पर झुककर, अपना मुँह मेरे कान के पास रखकर स्पष्ट रूप से घुरघुराहट की आवाज़ लगाई: "हे परम दयालु। हे परम दयालु।" ऐसा लग रहा था कि वह अपनी प्रजाति के लिए बिल्लियों की प्रेमनीयता और धन्यता के बारे में मेरी आपत्ति का खंडन कर रही थी। मैंने खुद से पूछा कि क्या वह पाठ केवल उस बिल्ली के लिए था या सभी बिल्लियों के लिए सामान्य था, और क्या केवल मैं ही इसे सुन सकता था।

अगली सुबह मैंने दूसरी बिल्लियों की आवाज़ सुनी। सभी ने यही प्रार्थना दोहराई, लेकिन इतनी स्पष्ट नहीं। सबसे पहले मैंने उनकी म्याऊँ-म्याऊँ के बीच एक अस्पष्ट तरीके से यह कहते सुना: “हे परम दयालु”। धीरे-धीरे, उनकी म्याऊँ-म्याऊँ एक ही हो गई: “हे परम दयालु” एक मार्मिक, अच्छी तरह से व्यक्त उच्चारण के रूप में।

मैंने कुछ आगंतुकों को यह बात बताई। उन्होंने भी ध्यान से सुना और कहा कि उन्होंने इसे कुछ हद तक सुना है। बाद में, मुझे आश्चर्य हुआ कि वे उस नाम का जाप क्यों कर रहे थे और वे इसे जानवरों की भाषा में नहीं बल्कि लोगों की भाषा में क्यों कर रहे थे। मैंने सोचा: चूँकि वे बहुत नाजुक हैं, बच्चों की तरह दुलारे जाते हैं और लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते हैं, इसलिए उन्हें बहुत देखभाल और करुणा की आवश्यकता होती है। जब उन्हें यह मिलता है, तो वे उस कृपा के लिए धन्यवाद के रूप में अपने संसार में सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता की दया की घोषणा करते हैं। बिल्लियाँ इसे ईश्वर का विशेष उपकार मानती हैं, जबकि कुत्ते इसे लोगों का विशेष उपकार मानते हैं। बिल्लियाँ लोगों को नींद में असावधानी से सावधान करती हैं और अपनी पुकार: "हे परम दयालु परमेश्वर" के माध्यम से उन लोगों को याद दिलाती हैं जो हर चीज़ को स्पष्ट "भौतिक" कारणों से जोड़ते हैं, वास्तव में मदद कौन भेजता है और कौन दया का स्रोत है।

आप इसे ऐसे नामों का जाप करते हुए सुनेंगे: "हे सबसे अधिक परवाह करने वाले, हे सबसे दयालु, हे सबसे करुणामय, हे सबसे उदार, हे कृपालु, हे स्नेही, हे निर्माता, हे प्रकाशित करने वाले, हे कृपालु, हे अलंकृत करने वाले।"

उनसे पूछो जो वास्तव में मनुष्य हैं। देखो कि वे कैसे भगवान के सभी सबसे सुंदर नामों को दोहराते और प्रकट करते हैं, और कैसे वे उनके माथे पर अंकित हैं। यदि आप ध्यान से देखें, तो आप उन्हें एक-एक करके पहचान सकते हैं। ऐसा लगता है जैसे ब्रह्मांड एक विशाल ऑर्केस्ट्रा है जो दिव्य नामों का गायन कर रहा है। कम से कम स्वरों और स्वरों में गाए गए गीतों को उच्चतम स्वरों के साथ मिलाकर, ब्रह्मांड एक शानदार सामंजस्य पैदा करता है।

सभी नाम मानवता पर प्रकट होते हैं।
हालाँकि नाम बहुत हैं, और उनके अलग-अलग तरीकों और स्तरों पर प्रकट होने से ब्रह्मांड में, फ़रिश्तों की पूजा में और मनुष्यों में विविधता पैदा हुई है। इसने पैगम्बरों के नियमों, संतों के तरीकों और शुद्ध विद्वानों के मार्गों में भी मतभेद पैदा किए हैं।

उदाहरण के लिए, सर्वशक्तिमान यीशु में प्रकट अन्य नामों की तुलना में अधिक प्रबल था।

जो लोग प्रेम के मार्ग पर चलते हैं, उनमें सर्व-प्रेममय परमेश्वर व्याप्त रहता है, और जो लोग चिन्तन और मनन के मार्ग पर चलते हैं, उनमें सर्व-ज्ञानी परमेश्वर व्याप्त रहता है।

निम्नलिखित पर विचार करें: कोई व्यक्ति एक साथ शिक्षक, अधिकारी, वकील और सिविल सेवा निरीक्षक होता है। प्रत्येक पद पर उस व्यक्ति के सम्बन्ध, कर्तव्य, वेतन, जिम्मेदारियाँ, पदोन्नति, शत्रु और प्रतिद्वंद्वी होते हैं। वह अनेक भिन्न-भिन्न उपाधियों के तहत प्रभु से मिलता है और इन उपाधियों के माध्यम से उसका सहारा लेकर अनेक तरीकों से उसकी सहायता मांगता है। ठीक उसी तरह जिस पर अनेक दिव्य नाम प्रकट होते हैं, मानवता के भी अनेक कर्तव्य होते हैं और वह अनेक प्रकार की शत्रुता का लक्ष्य होती है।

इस प्रकार हम उनके कई नामों का आह्वान करके ईश्वर की शरण में जाते हैं। वास्तव में, मानवता के गौरव और सबसे परिपूर्ण इंसान पैगंबर मुहम्मद ने अपनी अल-जौ-शान अल-कबीर प्रार्थना में ईश्वर से उनके 1,001 नामों के माध्यम से प्रार्थना की और नरक की आग से उनसे शरण मांगी। यही कारण है कि ईश्वर हमें सूरत अल-नस में अपने तीन नामों के माध्यम से उनकी शरण में जाने का आदेश देता है, और दयालु, दयावान ईश्वर के नाम से, वह हमें उनके तीन नामों के माध्यम से उनसे सहायता मांगने की शिक्षा देता है।

सब कुछ एक स्तोत्र है
दिव्य नाम*

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो। (17:44)

इसमें दो विषय शामिल हैं।

पहला विषय: ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति न करता हो, के अर्थ के अनुसार , हर चीज़ में कई पहलू हैं, जैसे कि सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ। सृष्टि में निहित सभी सत्य ईश्वरीय नामों पर आधारित हैं। प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व और आवश्यक प्रकृति ईश्वर के एक या कई नामों से ऋणी है।

नाम। वस्तुओं और विज्ञानों में कला की विविधता भी एक दिव्य नाम पर आधारित है। उदाहरण के लिए, दर्शनशास्त्र, अपने वास्तविक अर्थ में, सर्वज्ञ नाम पर निर्भर करता है, चिकित्सा सर्व-चिकित्सा नाम पर, और ज्यामिति और इंजीनियरिंग सर्व-निर्धारक, सर्व-आनुपातिक और सर्व-प्रदान करने वाले नामों पर आधारित हैं।

---

* बत्तीसवाँ वचन / तीसरा स्टेशन

सभी मानव कलाएं और मानवीय पूर्णता के स्तर
इनके स्रोत ईश्वरीय नाम हैं। कुछ सटीक-

कई संत विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला है: "किसी वस्तु की वास्तविकता ईश्वरीय नामों में निहित है, और उसकी प्रकृति उन वास्तविकताओं का अंकन है। एक जीवित प्राणी में कम से कम बीस ईश्वरीय नामों की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।" हम तुलना और विश्लेषण के माध्यम से इस सूक्ष्म और व्यापक सत्य पर चर्चा करेंगे।

जब अत्यंत कुशल मूर्तिकार एक सुंदर फूल बनाना चाहते हैं और एक सुंदर महिला की मूर्ति बनाना चाहते हैं, तो वे सबसे पहले सामान्य रेखाएँ निर्धारित करते हैं और फिर, सटीक माप और योजना के आधार पर, आवश्यक इंजीनियरिंग या डिज़ाइन ज्ञान का उपयोग करके अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं। ज्ञान और उद्देश्य (या बुद्धि) के कम्पास के साथ, वे आँखों, कानों और नाक की बाहरी रेखाएँ और पत्तियों और बीज-उत्पादक भागों को आनुपातिक तरीके से खींचते हैं, जिससे उनकी कला और भागों के वास्तविक कार्यों के साथ सामंजस्य प्रदर्शित होता है। इससे पता चलता है कि ये मूर्तिकार महान कलाकार हैं जो हर काम एक उद्देश्य के लिए करते हैं और हर चीज़ को उसके उचित स्थान पर रखते हैं।

प्रत्येक मूर्तिकार अपनी कलाकृति की सुंदरता और अलंकरण को बहुत महत्व देता है, जो उसकी कला में बहुत बड़ा योगदान देता है। चूँकि ये मूर्तिकार दयालु होते हैं और सभी को खुश देखना चाहते हैं, इसलिए उनका

कामों से खुशी और आनंद का आभास मिलता है, जो बदले में यह दर्शाता है कि मूर्तिकार दयालु और कृपालु हैं। ये गुण प्राणियों के प्रति उनके प्रेम से उत्पन्न होते हैं। चूंकि मूर्तिकार चाहते हैं कि दूसरे प्राणी उन्हें पहचानें और उनसे प्रेम करें ताकि वे मदद मांग सकें, मूर्तिकारों की करुणा और दूसरों को लाभ पहुंचाने की इच्छा से उत्पन्न इच्छा, वे महिला की बाहों को हर लाभकारी चीज से भर देते हैं और फूल में गहने जड़ देते हैं। मूर्तिकारों की व्यक्तिगत पूर्णता और गुण दूसरों के लिए उनके अंदर करुणा और कोमलता पैदा करते हैं, और वे खुद में सुंदरता और प्रेम को एक कर देते हैं। चूंकि उनकी उत्कृष्ट भावनाएं इतनी शुद्ध हैं कि वे दूसरों को खुश देखकर ही खुश और उत्साहित होते हैं, इसलिए वे चाहते हैं कि दूसरे उन्हें जानें।

इस प्रकार वे ऐसे चित्र और मूर्तियाँ बनाते हैं जो उनके सभी सद्गुणों और प्रशंसनीय गुणों को प्रतिबिंबित करते हैं।

इसी तरह, सर्वज्ञ निर्माता ने अपने नामों को प्रकट करके स्वर्ग और दुनिया, आकाश और पृथ्वी, जानवर, जिन्न और इंसान, और फ़रिश्ते और आत्मा प्राणियों को बनाया है। वह प्रत्येक को कुछ निश्चित मापों के अनुसार निर्धारित करता है और प्रत्येक को एक निश्चित रूप देता है। यह उसके नामों को दर्शाता है जो सर्व-निर्माता, सर्व-निर्धारक और माप देने वाले हैं। माप देना, माप देना और माप देना ज्ञान और बुद्धि पर आधारित है, और इसलिए सर्वज्ञ और सर्वज्ञ ईश्वरीय नामों की ओर इशारा करते हैं।

अपने सर्व-दयालु और सर्व-कृपालु नामों को प्रकट करके, वह अपने प्राणियों को सभी आवश्यक सुसंतुलित भागों से सुसज्जित करता है और प्रत्येक भाग को कई जटिल कार्य देता है। उन्हीं नामों को प्रकट करके, वह पृथ्वी को खनिजों, पौधों और जानवरों से सुसज्जित और सुशोभित करता है, और बगीचों, महलों और घरों के साथ स्वर्ग भी प्रदान करता है, जिनमें से प्रत्येक की एक विशेष सुंदरता और कार्य है।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता अपने प्राणियों को अपने सर्व-उदार और सर्व-कृपालु नामों को दिखाने के परिणामों से सुसज्जित करता है, जैसे कि प्रत्येक में उदारता, अनुग्रह और अलंकरण समाहित हो। जो चीज उनकी उदारता और कृपा को इस तरह के प्रदर्शन की ओर ले जाती है, वह है प्राणियों के प्रति उनका प्रेम और उनकी इच्छा कि वे सजीव प्राणियों द्वारा जाने जाएं और चेतन प्राणियों द्वारा प्रेम किए जाएं। इस प्रकार सर्व-उदार और सर्व-कृपालु नाम उन नामों को प्रदर्शित करते हैं जो सर्व-उदार और सर्व-कृपालु हैं।

सर्व-प्रेमी और मान्यता प्राप्त या ज्ञात।

वह सभी प्राणियों को स्वादिष्ट फलों और सब्जियों से सुशोभित करता है।

उनसे मिलने वाले प्यारे लाभ, उन्हें सभी प्रकार के वरदान प्रदान करते हैं। यह उन नामों की ओर इशारा करता है जो वरदान देने वाले और दयालु हैं, और स्पष्ट पर्दों के पीछे से उनकी अभिव्यक्तियाँ दिखाते हैं। अपनी दया और स्नेह दिखाने की उनकी इच्छा, सृष्टि से स्वतंत्र उस व्यक्ति को अपनी उदारता और करुणा दिखाने के लिए प्रेरित करती है, जो जीवों को

सर्व-दयालु और सर्व-स्नेही नामों का जाप करना। उनकी मौलिक सुंदरता और पूर्णता उन्हें उनकी दया और स्नेह को प्रकट करने के लिए प्रेरित करती है, ताकि वे सर्व-सुंदर नामों को सर्व-प्रेममय और सर्व-करुणामय के साथ प्रदर्शित कर सकें, जो इसमें निहित हैं। पूर्ण सौंदर्य को अपने आप से प्यार किया जाता है, और पूर्ण सौंदर्य वाला व्यक्ति खुद से प्यार करता है। इसलिए यह सौंदर्य और प्रेम दोनों है। यह पूर्णता के साथ भी सच है, जिसे अपने आप से प्यार किया जाता है और किसी और चीज के कारण नहीं। इसलिए यह प्रेमी और प्रिय दोनों है।

चूँकि अनंत पूर्णता की सुंदरता और अनंत सौंदर्य की पूर्णता को अनंत सीमा तक प्यार किया जाता है, इसलिए वे दर्पण की क्षमता के अनुसार दर्पण में खुद को प्रकट करना चाहते हैं। चूँकि राजसी निर्माता, सौंदर्य के सर्वज्ञ, पूर्णता के सर्वशक्तिमान की आवश्यक सुंदरता और पूर्णता दया और स्नेह दिखाने की इच्छा रखती है, इसलिए सर्व-दयालु और सर्व-देखभाल करने वाले नामों को स्वयं को प्रकट करना चाहिए।

चूँकि दया और स्नेह दिखाने की इच्छा करुणा और उदारता से जुड़ी हुई है, इसलिए यह सर्व-करुणामय और कृपा देने वाले नामों को प्रकट करने का आग्रह करती है। करुणा और उदारता सर्व-प्रेममय और पहचाने जाने वाले नामों को प्रकट करने की आवश्यकता और कारण बनती है।

प्यार और पहचाने जाने से अनुग्रह और उदारता की अभिव्यक्तियाँ प्रेरित होती हैं और जीवों को लाभ होता है

सर्व-कृपालु और उदार नामों को प्रदर्शित करने के लिए। कृपा और उदारता सर्व-सजाने वाले और सर्व-प्रकाशक नामों को प्रेरित करती है और प्राणियों में देखी जाने वाली सुंदरता और रोशनी के माध्यम से उनके कार्यों को दिखाती है। सजावट और रोशनी के लिए निर्माता और परोपकारी नामों की अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है और उन्हें सभी प्राणियों के सुंदर चेहरों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। निर्माण और परोपकार ज्ञान और बुद्धि पर आधारित हैं और सभी प्राणियों के सामंजस्यपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण संगठन के माध्यम से सर्वज्ञ और सर्व-बुद्धिमान नामों को दिखाते हैं। संगठित करने, गढ़ने और बनाने के साथ-साथ ज्ञान और बुद्धि के कार्यों की मांग करते हुए, सभी प्राणियों के सामान्य रूपों के माध्यम से निर्माता और माप के दाता नामों को प्रदर्शित करते हैं।

संक्षेप में, महाप्रतापी सृष्टिकर्ता ने सभी प्राणियों को इस प्रकार बनाया है कि उनमें से अधिकांश, विशेषकर सजीव प्राणी, अधिकांश दिव्य नामों को प्रदर्शित करते हैं।

ऐसा लगता है मानो उसने प्रत्येक प्राणी को बीस अलग-अलग वस्त्र पहनाए हों, एक के ऊपर एक, और हर एक पर अपने कई नाम अंकित किए हों। उदाहरण के लिए, जैसा कि ऊपर की तुलना में बताया गया है, एक सुंदर फूल और एक सुंदर स्त्री की स्पष्ट रचना में सुंदरता की कई परतें हैं। इन दो विशेष उदाहरणों के साथ विशाल और सार्वभौमिक निकायों की तुलना करें।

प्रथम परत: उनके सामान्य रूप और स्वरूप, जो कहते हैं: "हे निर्माता, हे माप देने वाले, हे निर्धारक, हे आयोजक।"

दूसरा स्तर: उनका रूप और स्वरूप, जिसमें शरीर के सभी अंग और अंग सम्मिलित हैं, जो सर्वज्ञ और सर्वज्ञानी जैसे अनेक नामों को दर्शाते हैं।

तीसरी परत: प्रत्येक शारीरिक अंग और भाग के लिए विशिष्ट सौंदर्य और अलंकरण के रूप, जिन पर निर्माता और सूक्ष्मता तथा पूर्णता से सृजन करने वाले जैसे कई नाम अंकित हैं।

चौथी परत: जीवों को दिए गए अलंकरण, सौंदर्य और लालित्य का विवरण, जैसे कि अनुग्रह और उदारता के मूर्त रूप में। वे कहते हैं: "हे दयालु, हे उदार," और कई अन्य नाम।

पांचवीं परत: उस फूल से जुड़े स्वादिष्ट फल और प्यारे बच्चे, साथ ही उस महिला को उपहार के रूप में दिए गए प्रशंसनीय गुण, सर्व-प्रेममय, सर्व-दयालु और वरदान देने वाले जैसे नामों को दर्शाते हैं।

छठी परत: उदारता और परोपकार की यह परत कहती है: "हे सर्व-दयालु, हे सर्व-देखभाल करने वाले,"
और कई अन्य नाम.

सातवीं परत: उन्हें दिए गए इनाम और उनके अस्तित्व से जुड़े परिणाम दर्शाते हैं

सुंदरता और अनुग्रह की ऐसी झलकें जिसके वे हकदार हैं

शुद्ध कृतज्ञता और प्रेम सच्ची उत्सुकता और कोमलता के साथ गूंथा गया है। यह परत सर्व-सुंदर पूर्णता और परिपूर्ण जैसे नामों को प्रकट करती है

सुन्दरता में से एक.

यदि एक फूल और एक सुंदर स्त्री अपने बाह्य रूपों के माध्यम से इतने सारे नाम प्रदर्शित करते हैं, तो आप तुलना कर सकते हैं कि सभी फूल, सजीव प्राणी और विशाल और सार्वभौमिक शरीर कितने सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के नाम प्रदर्शित करते हैं। आप समझ सकते हैं कि एक व्यक्ति अपनी आत्मा, हृदय, तर्क, जीवन के माध्यम से ईश्वर के कितने पवित्र, ज्ञानवर्धक नाम (जैसे, सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर और जीवन देने वाला) प्रकट करता है।

, और अन्य सभी इन्द्रियाँ और क्षमताएँ।

स्वर्ग, धरती का चेहरा और वसंत सभी फूल हैं। स्वर्ग एक फूल है; तारे इसकी सोने की कढ़ाई हैं। सूरज एक फूल है; इसके प्रकाश में सात रंग इसके रंग हैं। ब्रह्मांड एक सुंदर, मैक्रो-मानव प्राणी है; मानवता एक सामान्य ब्रह्मांड है। आत्मा, देवदूत, जिन्न और मानवता को इस तरह से बनाया, संगठित और बनाया गया है जैसे कि वे सुंदर व्यक्ति हों। जब वे सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से सर्व-महान प्राणी के नामों को प्रकट करते हैं, तो उनमें से प्रत्येक उनकी सुंदरता, पूर्णता, दया और प्रेम का एक अलग दर्पण है। प्रत्येक व्यक्ति उनकी अनंत सुंदरता का एक अलग और सच्चा गवाह और साथ ही एक अलग संकेत भी है, जो कि पर-

पूर्णता, दया और प्रेम। चूंकि सभी असीम पूर्णताएं केवल दिव्य एकता और एकत्व या अद्वितीयता के क्षेत्र में ही संभव हैं, इसलिए इस क्षेत्र के बाहर कल्पना की गई कोई भी पूर्णता झूठी है।

चीज़ों की वास्तविकताएँ ईश्वरीय नामों पर आधारित हैं, या यूँ कहें कि वे उन नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं। सभी चीज़ें अपने निर्माता का उल्लेख कई भाषाओं में करती हैं। साथ ही, "ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति न करे" का एक अर्थ भी जान लें।

कह दो: “पवित्र है वह जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता से छिपा हुआ है।” समझो कि क्यों वह सर्वशक्तिमान, अत्यन्त बुद्धिमान है; वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है; वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान है,” और इसी प्रकार के वाक्य कुरान की आयतों के अंत में दोहराए गए हैं।

अगर आप फूल पर अंकित नामों को स्पष्ट रूप से नहीं देख पा रहे हैं, तो स्वर्ग के बारे में सोचें, वसंत को ध्यान से देखें, या धरती के चेहरे की जांच करें। आप दया के उन विशाल फूलों में अंकित नामों को स्पष्ट रूप से पढ़ सकते हैं और नामों की अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ देख सकते हैं।

***

निम्नलिखित आयत इस आयत (17:44) के अनन्त बगीचे से एक फूल की ओर इशारा करती है:

हर खिलता हुआ पेड़ एक स्तुति है
लयबद्ध और अच्छी तरह से रचित,

सृष्टिकर्ता की उच्च और स्पष्ट प्रशंसा गाते हुए।

या किसी चीज़ को देखने के लिए कई आँखें खुली हों,

और दूसरों को भी चमत्कार देखने का मौका दें

निर्माता की कला का प्रदर्शन किया गया।

या अपने सदस्यों को उनके त्यौहार के लिए हरे रंग के कपड़े पहनाए हैं

ताकि उसका रब देख सके

उनके शानदार कार्य और उपहार,

जबकि स्वयं प्रदर्शन कक्ष में प्रदर्शित होता है—पृथ्वी—

मानवता की आँखों के सामने उसकी दया की अलंकरण,

जिससे इसकी रचना में निहित ज्ञान की घोषणा होती है,

इसमें महत्वपूर्ण खजाने संग्रहित हैं

इसके फलों के पालनहार की कृपा और उदारता से:

उसकी महिमा हो, उसकी कृपा कितनी उदार है,

उनके पक्ष में तर्क कितने स्पष्ट हैं,

उसके प्रमाण कितने स्पष्ट हैं!

कल्पना में इन पेड़ों की (शाखाओं) से हज़ारों बांसुरियों जैसे शरीर धारण किए हुए देवदूत दिखाई देते हैं, और इन बांसुरियों से सर्व-जीवित की स्तुति के गीत सुनाई देते हैं। ये पत्ते एक जीभ हैं जो कहते हैं: "हे जीवित," और सभी एक साथ गाते हैं: "उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।"

> कह दो, "ऐ अल्लाह! राज्य के स्वामी! तू जिसे चाहे राज्य प्रदान कर और जिससे चाहे राज्य छीन ले।"

वे निरंतर कहते हैं: "हे सत्य", घोषणा करते हैं: "हे सर्व-जीवित एक,” और साथ मिलकर घोषणा करते हैं: “ईश्वर।”

ब्रह्माण्ड की पुस्तक का रंगीन पृष्ठ*

> क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और सजाया है? (50:6)

आकाश के चेहरे को देखो, जहाँ तुम शांत शांति में मौन, उद्देश्यपूर्ण गति, राजसीपन में चमक, अलंकरण में मुस्कान, सभी को सृष्टि की सुव्यवस्था और कला की समरूपता में मिला हुआ देखते हो। इसकी मोमबत्ती की चमक, इसके दीपक की चकाचौंध, और इसके सितारों की चमक अंतर्दृष्टि और ठोस तर्क वाले लोगों के लिए मानव-सर्वोच्च अनंत संप्रभुता है।

निम्नलिखित आयत (50:6) की व्याख्या करते हुए ऊपर दी गई पंक्तियों को स्पष्ट करता है: यह आयत आकाश के सुशोभित और सुंदर चेहरे की ओर ध्यान आकर्षित करती है। जो लोग इसे ध्यान से देखते हैं, उन्हें वहां देखी गई असाधारण शांति और स्पष्ट विश्राम में मौन को देखना चाहिए, और निष्कर्ष निकालना चाहिए कि आकाश ने एक परम शक्तिशाली के आदेश और अधीनता के माध्यम से उस रूप को ग्रहण किया है। यदि आकाशीय पिंड अपने विशाल आकार और गति की गति के साथ बेतरतीब ढंग से घूमते हैं, तो परिणामस्वरूप होने वाला शोर सभी को बहरा कर देगा। वे भी

---

* बत्तीसवाँ वचन / एक संक्षिप्त परिशिष्ट

ऐसा कोलाहल और भ्रम पैदा करेगा कि ब्रह्मांड ढह जाएगा। यदि 20 भैंसें एक साथ एक ही क्षेत्र में चलेंगी, तो आप अंदाजा लगा सकते हैं कि वे कितना बड़ा कोलाहल और भ्रम पैदा करेंगी। हालांकि, खगोलविदों के अनुसार, कुछ गतिमान तारे पृथ्वी से 1,000 गुना बड़े हैं और तोप के गोले से 70 गुना तेज गति से चलते हैं। इसे देखते हुए, शांति और विश्राम में स्वर्गीय पिंडों की चुप्पी से, आप राजसी निर्माता और पूर्णता के सर्वशक्तिमान से संबंधित अधीनता की शक्ति की सीमा को समझ सकते हैं, और सितारों की अधीनता और आज्ञाकारिता की डिग्री।

एक उद्देश्यपूर्ण गति: श्लोक हमें आकाश में उद्देश्यपूर्ण गति को देखने का आदेश देता है। वह अत्यंत विचित्र और शक्तिशाली गति एक असाधारण सूक्ष्म और व्यापक उद्देश्य पर पूर्ण निर्भरता में होती है। एक कारखाने की विशालता और व्यवस्था जिसके पहिये और मशीनरी बुद्धिमता से, पूर्ण क्रम में और बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए घूमते और काम करते हैं, यह दर्शाता है कि उसका इंजीनियर किस हद तक विद्वान और कुशल है। उसी तरह, केंद्र में सूर्य और उसके चारों ओर कई बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए एक पूर्ण, सूक्ष्म क्रम में घूमने वाले शक्तिशाली ग्रहों के साथ, सौर मंडल सर्वशक्तिमान की शक्ति और बुद्धि की सीमा को दर्शाता है।

ऐश्वर्य में चमक और अलंकरण में मुस्कान:

आकाश में ऐसी भव्यता और चमक समाहित है

मुस्कान इतनी अलंकृत है कि यह उस शानदार संप्रभुता और सुंदर कला को दिखाती है जिसे राजसी निर्माता नियंत्रित करता है। जिस तरह से असंख्य प्रकाश-पुंज विशेष अवसरों पर सम्राट की महिमा और उसके देश की उन्नत सभ्यता को दिखाने के लिए उपयोग किए जाते हैं, उसी तरह विशाल आकाश, अपने राजसी चमकते सितारों के साथ, चौकस आँखों को राजसी निर्माता की संप्रभुता की पूर्णता और उसकी कला की सुंदरता दिखाते हैं।

सृष्टि की सुव्यवस्थितता और कला की सममितता में यह सब सम्मिलित है: कविता कहती है:

> आकाश में व्यवस्था और संतुलन को देखें और जानें कि सृष्टिकर्ता कितना शक्तिशाली और बुद्धिमान है। जब आप किसी को कई वस्तुओं को एक दूसरे के चारों ओर एक पूर्ण क्रम में और एक विशेष, नाजुक संतुलन के साथ कई बुद्धिमान उद्देश्यों के लिए घुमाते हुए देखते हैं, तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह कितना बुद्धिमान, शक्तिशाली और कुशल है। इसी तरह, अपने असंख्य सितारों के साथ-साथ, जो भयानक आकार और गति के हैं, विशाल आकाश ने अपनी जबरदस्त विशालता में अरबों वर्षों से एक स्थापित माप के अनुसार और एक निश्चित, संवेदनशील संतुलन के साथ अपने कर्तव्यों का पालन किया है। उन्होंने कभी अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया है, और कभी भी थोड़ी सी भी गड़बड़ी नहीं की है। यह चौकस आँखों को दिखाता है कि उनके राजसी निर्माता अपने प्रभुत्व का प्रयोग किस तरह से संवेदनशील और सटीक तरीके से करते हैं।

सूरत अल-नबा की अन्य आयतों के समान , यह आयत भी संकेत करती है कि महान सृष्टिकर्ता ने सूर्य, चंद्रमा और अन्य आकाशीय पिंडों को अपने अधीन कर लिया है।

इसकी मोमबत्ती की चमक, इसके दीपक की चकाचौंध और इसके सितारों की चमक उन लोगों के लिए अनंत संप्रभुता को प्रकट करती है जिनके पास अंतर्दृष्टि और ठोस तर्क है: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने दुनिया की सजी हुई छत पर एक सूरज जैसा दीपक लटका दिया है जो गर्मी और रोशनी देता है। वह इसे प्रकाश के एक "बर्तन" के रूप में उपयोग करता है ताकि ऋतुओं के पन्नों पर दिन और रात की तर्ज पर अनंत-प्रार्थना-के-सभी के "अक्षर" लिखे जा सकें।

एक ऊंची मीनार में लगी घड़ी की फॉस्फोरसेंट घंटे की सुइयों की तरह, उसने स्वर्ग के गुंबद में चाँद को समय की सबसे बड़ी घड़ी की घंटे की सुई बनाया है। वह इसे अपने महलों में एकदम सही माप और बारीक गणना के अनुसार घुमाता है, जैसे कि वह हर रात के लिए एक अलग अर्धचंद्र छोड़ता है और फिर उन सभी को अपने में समेट लेता है (इसे अदृश्य बना देता है)। इसके अलावा, उसने आसमान के खूबसूरत चेहरे को सितारों से चमकाया है जो उस गुंबद में चमकते और मुस्कुराते हैं। यह सब उसके आधिपत्य की असीम संप्रभुता और उसकी दिव्यता की भव्यता की ओर इशारा करता है और सोचने वाले लोगों को उसके अस्तित्व और एकता में विश्वास करने के लिए आमंत्रित करता है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के रंगीन पृष्ठ को देखो,

और देखो कि शक्ति की स्वर्णिम कलम ने इसे कैसे अंकित किया है!

उन लोगों के लिए कोई भी बिंदु अंधकारमय नहीं छोड़ा गया है
जो अपने हृदय की आँखों से देख सकते हैं।
ऐसा लगता है मानो ईश्वर ने अपने संकेत प्रकाश से लिखे हों।
देखिये, बुद्धि का यह अद्भुत चमत्कार

ब्रह्माण्ड है!

देखिये, ब्रह्माण्ड का अन्तरिक्ष कितना अद्भुत है!

सितारों की आवाज सुनें और उनकी खूबसूरती पर ध्यान दें

उपदेश!

देखिये इन चमकदार तस्वीरों में क्या लिखा है

ज्ञान के संदेश!

वे सभी मिलकर यह उपयोगी प्रवचन दे रहे हैं:

हम में से प्रत्येक इसका एक उज्ज्वल प्रमाण है

एक सर्वशक्तिमान महिमावान की राजसी संप्रभुता।

हम निर्माता के अस्तित्व के साक्षी हैं

और उसकी एकता और शक्ति के लिए।

हम उनके सूक्ष्म चमत्कार हैं जो प्रकाश को स्वर्णिम रूप में भेजते हैं

पृथ्वी का मुख, और जिस पर देवदूत भ्रमण करते हैं।

हम स्वर्ग के असंख्य हैं

विवेकशील आँखें

स्वर्ग की ओर निर्देशित और पृथ्वी की देखरेख।

हम जुड़े हुए उत्तम फल हैं

सृष्टि के वृक्ष की स्वर्गीय शाखा को,

और आकाशगंगा की टहनियों से जुड़ी हुई

उस महाप्रतापी, सर्व-कृपालु ईश्वर के ज्ञान का हाथ।

स्वर्ग के निवासियों के लिए हम हैं

यात्रा मस्जिदें,

घूमते हुए घर, और ऊंचे घर,

प्रकाश फैलाने वाले लैंप, शक्तिशाली जहाज,

विमान।

हम ईश्वर की शक्ति के चमत्कार हैं
सर्वशक्तिमान
पूर्णता की, सर्वज्ञ महिमा की।

हम में से प्रत्येक उसकी रचनात्मक कला का एक आश्चर्य है,
उसकी बुद्धि की दुर्लभता, उसकी सृष्टि का चमत्कार, प्रकाश का संसार।
जो सच्चा मानव है,
हम अनगिनत भाषाओं में अनगिनत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।
नास्तिकों की आंखें, चाहे वे अंधी ही क्यों न हों, कभी हमारा चेहरा नहीं देखतीं,
न ही उनके कान हमारी बातें सुनते हैं।
हम वे संकेत हैं जो सच बोलते हैं।
हम पर भी वही मुहर और मोहर है।
हम अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं और उसकी महिमा करते हैं, तथा उपासना में उसका उल्लेख करते हैं।
हम आकाशगंगा के सबसे विस्तृत घेरे में आनंदित प्रेमी हैं,

हमारे भगवान के नामों का पाठ करने वाली मंडली।

***

अपने कमरे के सामने लगे फलदार वृक्ष को देखते हुए जब मैं परमेश्वर की अविवाहित अवस्था पर विचार कर रहा था, तो मेरे मन में कई विचार आए। मैं उन्हें नीचे बता रहा हूँ।

उसकी जय हो जिसने अपनी धरती के बगीचे को अपनी कला का प्रदर्शन कक्ष बना दिया है। वह इसका उपयोग अपनी बुद्धिमता प्रदर्शित करने, अपनी शक्ति प्रकट करने, अपनी दया को खिलने, अपने स्वर्ग के बीज बोने और अपने प्राणियों को आने और जाने के लिए करता है। सजे हुए जानवर, सजे हुए पक्षी, फलदार पेड़ और फूल

पौधे उसके ज्ञान के चमत्कार हैं, उसकी कला के चमत्कार हैं, उसकी उदारता के उपहार हैं, और उसकी कृपा के प्रसाद हैं। सुंदर फलों के कारण फूलों का मुस्कुराना, भोर की हवा में पक्षियों का चहचहाना, फूलों के गालों पर चमकती बारिश की बूँदें, और माताओं की अपने शिशुओं के प्रति करुणा - यह सब इसलिए है क्योंकि सर्व-प्रेमी स्वयं को ज्ञात करना चाहता है, सर्व-दयालु स्वयं को प्रेम करना चाहता है, सर्व-दयालु अपनी करुणा को ज्ञात करना चाहता है, और सर्व-कृपा करने वाला मनुष्य, जिन्न, फ़रिश्तों और अन्य आत्मिक प्राणियों द्वारा अपने स्नेह को पहचानना चाहता है।

प्रत्येक फल और बीज ईश्वरीय बुद्धि का चमत्कार है, ईश्वरीय कला का आश्चर्य है, ईश्वरीय दया का उपहार है, ईश्वरीय एकता का प्रमाण है, और परलोक में ईश्वर की कृपा का संकेत है। वे उसकी सर्वव्यापक शक्ति और सर्वसमावेशी ज्ञान के सच्चे साक्षी हैं, साथ ही इस बहुलता की दुनिया में उसकी एकता के दर्पण भी हैं, क्योंकि अपने अस्तित्व की भाषा में, प्रत्येक कहता है: "यह विस्तृत वृक्ष मुझमें समाया हुआ है। इसके आकर्षण में मत डूबो।

विस्तार। इसके सभी भाग और विशेषताएँ मुझमें समाहित हैं।" बीज फल के हृदय की तरह है, जो ईश्वरीय एकता का दर्पण है। अपने अस्तित्व की भाषा में, यह अपने हृदय में पूरे वृक्ष द्वारा गाये जाने वाले दिव्य नामों का "पाठ" करता है।

बीज भी दिव्य नियति के संकेत हैं और दिव्य शक्ति के मूर्त प्रतीक हैं। उनके माध्यम से, नियति संकेत देती है और शक्ति इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि प्रत्येक विस्तृत वृक्ष एक बीज से विकसित हुआ है और इस प्रकार इसके निर्माता की एकता की ओर इशारा करता है, जिसका इसके निर्माण और निर्माण में कोई भागीदार नहीं है। जब यह पूरी तरह से विकसित और विस्तृत हो जाता है, तो यह अपने सभी नियमों, वास्तविकताओं और जीवन-इतिहास को एक फल में समाहित कर लेता है। चूँकि इसका सारा अर्थ निहित है

एक बीज में निहित, यह उसकी रचना और शासन में राजसी सृष्टिकर्ता की बुद्धि को दर्शाता है। उस वृक्ष की तरह, एकता भी सृजन के वृक्ष के अस्तित्व और विकास का स्रोत है। इसी तरह, ब्रह्मांड का फल होने के नाते, मानवता प्राणियों की बहुलता में एकता की ओर इशारा करती है, और मानव हृदय विश्वास की नज़र से बहुलता में एकता का अर्थ देखता है।

ये फल और बीज भी ईश्वरीय शक्ति की गोलियां हैं।

बुद्धि जिसके माध्यम से बुद्धि सचेत प्राणियों से इस प्रकार बात करती है: इस वृक्ष का जीवन और इसके विकास के लिए किए

गए प्रयास इसके फलों पर लक्षित हैं, जो इसका प्रतिनिधित्व करते हैं और इसके विकास का लक्ष्य हैं। इसका जीवन बीजों पर लक्षित है, क्योंकि प्रत्येक बीज वृक्ष के संपूर्ण अर्थ को दर्शाने वाला एक सूचकांक है। इस प्रकार, वह जो वृक्ष और उसके विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करता है, वह वृक्ष के जीवन से संबंधित अपने नामों की सभी अभिव्यक्तियों को लक्षित करता है।

फल, उसके अस्तित्व का कारण। इसके अलावा, उस विशाल पेड़ को कभी-कभी उसकी वृद्धि को नियंत्रित करने और कई वर्षों तक बेहतर फल देने के लिए काटा जाता है; वे इसके कुछ हिस्सों को काट देते हैं ताकि यह फिर से जीवंत हो सके।

इसी प्रकार, जैसे हम सृष्टि के वृक्ष के फल हैं, हम ब्रह्मांड की रचना और अस्तित्व का कारण हैं।

मानव हृदय ब्रह्माण्ड के निर्माता का सबसे प्रकाशित और व्यापक दर्पण है।

इसके कारण, मानवता में आक्षेप, क्रान्तियों, उथल-पुथल, तथा भौतिक और सामाजिक परिवर्तन के रूप में बार-बार छँटनी होती है, और यह ब्रह्मांड के विनाश और पुनर्निर्माण का कारण बनती है।

इस दुनिया का दरवाज़ा बंद हो जाएगा और दुनिया का दरवाज़ा भी बंद हो जाएगा

न्याय के लिये एक नया द्वार खोला जाए।

प्रत्येक विज्ञान ईश्वर के बारे में बोलता है अपनी ही भाषा*

[नोट: निम्नलिखित ईश्वर में विश्वास के स्तम्भ के हजारों सार्वभौमिक प्रमाणों में से एक की ओर एक संक्षिप्त संकेत है, जिनमें से कई, स्पष्टीकरण के साथ, रिसाले-ए-नूर में हैं।]

कस्तोमानु में, कुछ हाई-स्कूल के छात्रों ने पूछा: "हमें हमारे निर्माता के बारे में बताइए, क्योंकि हमारे शिक्षक उनके बारे में नहीं बोलते।" मैंने जवाब दिया कि वे जिस भी विज्ञान का अध्ययन करते हैं, वह लगातार ईश्वर, निर्माता के बारे में बोलता है, और उसे अपनी भाषा में बताता है। मैंने उनसे कहा कि वे विज्ञान की बात सुनें, अपने शिक्षकों की नहीं, और निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

एक अच्छी तरह से सुसज्जित, अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई फार्मेसी में कई दवाइयाँ और गोलियाँ होती हैं जो अलग-अलग पूर्व-मापा घटकों से बनी होती हैं। यह एक अत्यंत कुशल और विद्वान फार्मासिस्ट को दर्शाता है। उसी तरह, पृथ्वी की फार्मेसी में अनगिनत जीवन देने वाली दवाइयाँ और औषधियाँ हैं (सभी पौधों और जानवरों की प्रजातियों में प्रत्यारोपित)। यह दिखाता है और चिकित्सा विज्ञान के माध्यम से ज्ञात करता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ही सभी प्राणियों में सबसे बुद्धिमान है।

* तेरहवाँ शब्द / दूसरा स्टेशन

मेजेस्टी पृथ्वी पर सबसे बड़ी फार्मेसी के फार्मासिस्ट हैं।

एक अद्भुत कारखाना एक साधारण सामग्री से बुने हुए हजारों अलग-अलग कपड़े बनाता है। यह एक निर्माता और कुशल यांत्रिक इंजीनियर को दर्शाता है। इसी तरह, हमारा ग्रह एक चलती हुई मशीनरी या मास्टर का कारखाना है। इसके अनगिनत हिस्से, जिनमें से प्रत्येक में असंख्य मशीनें हैं, इंजीनियरिंग के माध्यम से अपने निर्माता और मालिक को दिखाते और पहचानते हैं।

एक दुकान जो विभिन्न प्रावधानों के लिए एक संगठित भंडारण स्थान के रूप में कार्य करती है, यह दर्शाती है कि उसके पास प्रावधानों और खाद्य पदार्थों का एक अद्भुत स्वामी, तैयार करने वाला और वितरक है। उसी तरह, सर्व-दयालु व्यक्ति का खाद्य भंडार - पृथ्वी - महिमावान व्यक्ति का एक बर्तन है

जो हर साल एक विस्तृत कक्षा में घूमता है और असंख्य प्रजातियों को घर देता है जिन्हें अलग-अलग खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है। यह हर वसंत में एक विशाल गाड़ी की तरह अनगिनत अलग-अलग प्रावधानों से भर जाता है, जिसे यह उन सभी जीवित प्राणियों तक पहुंचाता है जिनका भरण-पोषण सर्दियों के दौरान समाप्त हो गया था। मास्टर का डिपो और दुकान, जिसमें विभिन्न प्रकार के सामान, उपकरण और संरक्षित भोजन होते हैं, अपने मालिक, प्रबंधक और आयोजक को अर्थशास्त्र के माध्यम से जाना और प्यार करता है।

जनजातियों की एक सेना की कल्पना करें, जिनमें से प्रत्येक को अद्वितीय प्रावधानों, हथियारों, वर्दी, अभ्यास और

यदि इसका चमत्कारी कमांडर उनकी सभी ज़रूरतों को खुद ही पूरा करता है, बिना किसी को भूले या भ्रमित किए, तो सेना और शिविर उसकी ओर इशारा करेंगे और उसे प्यार और सराहना देंगे।

इसी तरह, हर वसंत में एक सेनापति अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों की एक नई भर्ती की गई दिव्य सेना को वर्दी, राशन, हथियार, प्रशिक्षण और सेना से मुक्ति प्रदान करता है, जो एकदम सही और नियमित तरीके से होता है। वह कुछ भी नहीं भूलता और भ्रमित नहीं होता। यह उसे एक महान योद्धा बनाता है।

सैन्य विज्ञान के माध्यम से, पृथ्वी के शासक, स्वामी, प्रशासक और सबसे पवित्र कमांडर के रूप में जाना जाता है।

उसकी पूर्णता प्रशंसा और सराहना का कारण बनती है, तथा उसे प्रेम, प्रशंसा और महिमा का पात्र बनाती है।

कल्पना कीजिए कि एक शानदार शहर लाखों मोबाइल और स्थिर बिजली के लैंपों से जगमगा रहा है, जिसमें अक्षय ईंधन और बिजली का स्रोत है। यह एक अद्भुत कारीगर और एक असाधारण प्रतिभाशाली इलेक्ट्रीशियन को दर्शाता है जो बिजली का प्रबंधन करता है, लैंप बनाता है, बिजली का स्रोत स्थापित करता है और ईंधन लाता है। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है, बधाई दी जाती है और दूसरे उससे प्यार करते हैं।

ठीक उसी तरह, इस विश्व की छत के महल में, इस ब्रह्मांड के शहर में, कुछ दीपक (तारे और ग्रह) पृथ्वी से कहीं ज़्यादा बड़े हैं। वे चलते हैं

अद्भुत गति के साथ, लेकिन बहुत ही नाजुक क्रम में।
वे आपस में टकराते नहीं, बुझते नहीं, या ईंधन खत्म नहीं होता। खगोलशास्त्रियों का कहना है कि हमारा सूर्य, जो दयालु भगवान के अतिथिगृह में एक दीपक और चूल्हा है, कई अरब साल पुराना है और पृथ्वी से दस लाख गुना बड़ा है। जलते रहने के लिए, हर दिन उसे पृथ्वी के समुद्रों जितना तेल, पहाड़ों जितना कोयला या 10 पृथ्वी जितनी लकड़ियाँ और लकड़ी चाहिए।

ऐसे दीपक अपनी प्रकाश की उंगली से एक अनंत शक्ति और संप्रभुता की ओर इशारा करते हैं, जो बदले में, तेल, लकड़ी या कोयले के बिना सूर्य और अन्य समान सितारों को रोशन करती है। यह उन्हें बुझने या एक दूसरे से टकराने नहीं देता, भले ही वे उन दीपकों से बड़े हों और अधिक अच्छी तरह से प्रबंधित किए जाते हों। बिजली का विज्ञान और सितारों की गवाही इस विशाल प्रदर्शनी के सम्राट, प्रकाशक, निर्देशक और निर्माता को ज्ञात कराती है। वे उसे प्यार, महिमा और पूजा भी करते हैं।

एक अद्भुत पुस्तक की कल्पना करें। प्रत्येक पंक्ति में एक अलग पुस्तक बारीकी से लिखी गई है, और प्रत्येक शब्द में एक सुरा को एक बढ़िया कलम से उकेरा गया है। यह पुस्तक सबसे अर्थपूर्ण और अभिव्यंजक है, और इसके सभी विषय एक दूसरे की पुष्टि करते हैं। ऐसी पुस्तक स्पष्ट रूप से दिखाती है कि यह असाधारण पूर्णता, कला और कौशल से संपन्न एक विशेष कलाकार का उत्पाद है। यह लेखक को एक ऐसा लेखक बनाता है जो अपने काम को एक अलग तरीके से करता है।

थोर की सराहना ऐसे वाक्यांशों से की जाती है जैसे: “परमेश्वर ने क्या आश्चर्य चाहा है” और “परमेश्वर धन्य है।”

ब्रह्मांड की "वृहत्-पुस्तक" के बारे में भी यही बात सत्य है। हम एक कलम को काम करते हुए देख सकते हैं, जो पृथ्वी के चेहरे (एक शीट) पर अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियों (खंडों) को अंकित कर रही है। वे सभी एक साथ, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि या भ्रम के और इतने पूर्णता और सूक्ष्मता से बनाए गए हैं कि एक कविता एक पेड़ जैसे शब्द में संकुचित हो जाती है, और एक किताब की पूरी सूची एक बीज के आकार के बिंदु में। प्रकृति, पढ़ने और लिखने के विज्ञान इस हद तक ज्ञात कराते हैं कि ब्रह्मांड का यह असीम रूप से सार्थक संग्रह, ब्रह्मांड का यह वृहद्-कुरान, जिसके प्रत्येक शब्द में ज्ञान के असंख्य उदाहरण हैं और जो उदाहरण में पुस्तक, ब्रह्मांड के लेखक और लेखक और उनकी अनंत पूर्णता की पुस्तक से अधिक महान और अधिक परिपूर्ण और सार्थक है। "ईश्वर सबसे महान है" के अर्थ में, यह उसे ज्ञात कराता है। "ईश्वर की महिमा हो" की महिमा में, यह उसका वर्णन करता है। "ईश्वर की सभी प्रशंसा हो" जैसी प्रशंसाओं के माध्यम से, यह उसे प्रिय बनाता है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, सैकड़ों विज्ञान ब्रह्मांड के महान निर्माता को उनके नामों से जानते हैं। अपने व्यापक माप, विशेष दर्पण, दूरगामी दृष्टि, और खोजपूर्ण और निर्देशात्मक दृष्टिकोणों के माध्यम से, प्रत्येक विज्ञान उनके अद्भुत को पहचानता है।

ज्ञात श्रद्धांजलि और सिद्धियाँ। चमत्कारिक अभिव्यक्ति का कुरान अक्सर हमारे निर्माता को “आकाश और पृथ्वी का स्वामी” और “उसने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया” जैसे वाक्यांशों के माध्यम से वर्णित करता है ताकि ऊपर वर्णित निर्णायक प्रमाण को सिखाया जा सके (जो ईश्वरीय एकता का एक शानदार और शानदार सबूत है)।

मैंने छात्रों से यही कहा, जिन्होंने इसे स्वीकार किया और पुष्टि की, उन्होंने कहा: "हम ईश्वर का धन्यवाद करते हैं, क्योंकि हमें एक बिल्कुल सच्चा और पवित्र पाठ मिला है। ईश्वर आप पर प्रसन्न हो।" मैंने आगे कहा कि हम में से प्रत्येक एक जीवित मशीन है जो कई दुखों से ग्रस्त है और कई सुखों को जानने में सक्षम है। यद्यपि हम पूरी तरह से नपुंसक हैं, हमारे पास अनंत भौतिक और आध्यात्मिक शत्रु हैं। यद्यपि हम पूरी तरह से अभावग्रस्त हैं, हमारे पास अनंत बाहरी और आंतरिक ज़रूरतें हैं और हम निरंतर क्षय और अलगाव के प्रहारों को झेलते हैं। लेकिन हम विश्वास और पूजा के माध्यम से राजसी सम्राट से जुड़ सकते हैं, और उसमें अपने दुश्मनों के खिलाफ़ एक सहारा और अपनी ज़रूरतों के लिए मदद का स्रोत पा सकते हैं।

सभी लोग उस उच्च पदस्थ व्यक्ति के सम्मान और पद पर गर्व करते हैं जिससे वे जुड़े हुए हैं। कल्पना करें कि आप विश्वास के माध्यम से असीम रूप से शक्तिशाली और दयालु सम्राट से जुड़े हुए हैं, कि आप पूजा के माध्यम से उनकी सेवा में प्रवेश करते हैं

और इस तरह अपने निष्पादन की घोषणा को स्वागत पत्र में बदल दें। इससे आपको कुछ हद तक संतुष्टि, आभार और गर्व का एहसास होगा जो आप महसूस करेंगे।

मैंने कैदियों और छात्रों को यही संदेश दिया: जो लोग उसे पहचानते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं, वे जेल में रहते हुए भी समृद्ध होते हैं, जबकि जो लोग उसे भूल जाते हैं, वे महलों में रहते हुए भी दयनीय कैदी हैं। एक बार एक अन्यायी लेकिन भाग्यशाली [अपने विश्वास और शहीद होने के कारण] व्यक्ति ने उन दयनीय अपराधियों से कहा जो उसे मार रहे थे: "मुझे मृत्युदंड नहीं दिया जा रहा है; बल्कि, मैं अपने कर्तव्यों से मुक्त हो रहा हूँ और शाश्वत सुख की ओर जा रहा हूँ। इसके अलावा, जैसा कि मैं देख सकता हूँ कि तुम अभी भी शाश्वत दंड के लिए अभिशप्त हो, मैं तुमसे पूरा बदला ले रहा हूँ।" फिर उसने कहा: "ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है," और खुशी से मर गया।

पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

वह: दिव्य एकता का एक बिंदु*

उसके नाम में उसकी महिमा हो।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा करे।

मेरे प्यारे और वफ़ादार भाईयों और बहनों! मानसिक यात्रा के दौरान हवा पर चिंतन करते समय, ईश्वरीय एकता से संबंधित एक सूक्ष्म बिंदु अचानक मेरे सामने स्पष्ट हो गया, जिसमें "कोई देवता नहीं है सिवाय उसके" और "कहो: वह ईश्वर है" में "वह" शब्द का इस्तेमाल किया गया है। मैंने देखा कि विश्वास का मार्ग इतना आसान है कि वह आवश्यक है, और गुमराह करने और ईश्वर के साथ भागीदार बनाने का मार्ग इतना कठिन है कि वह अकल्पनीय है। मैं इस व्यापक मामले को संक्षेप में समझाऊंगा।

मुट्ठी भर मिट्टी सैकड़ों फूलों के लिए फूलों की क्यारी का काम करती है। अगर इस प्रक्रिया को प्रकृति या कारणता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक मुट्ठी में सैकड़ों छोटी मशीनें या कारखाने [फूलों का उत्पादन करने के लिए] और एक अमूर्त कारखाना [ईश्वरीय ज्ञान और नियति के स्थान पर उनके जीवन को निर्धारित करने और नियंत्रित करने के लिए] होना चाहिए। या, प्रत्येक परमाणु को यह जानना चाहिए कि प्रत्येक फूल की अलग-अलग विशेषताओं और जीवन को कैसे बनाया जाए-

---

* तेरहवाँ शब्द / दूसरा स्टेशन

इस प्रकार प्रत्येक परमाणु में अनंत ज्ञान और शक्ति होगी, जो ईश्वर के लिए अद्वितीय है।

प्रत्येक हवा के अणु (ईश्वरीय इच्छा और आदेश का संवाहक) प्रत्येक झोंके में, हवा के प्रत्येक बदलाव से ध्वनि उत्पन्न होती है, जिसमें सभी मानवीय संचार साधनों के सूक्ष्म केंद्र, एक्सचेंज, रिसीवर और ट्रांसमीटर होने चाहिए ताकि प्रत्येक वायु अणु एक ही समय में उन अनगिनत कार्यों को कर सके। या, प्रत्येक परमाणु या अणु को संचार के सभी साधनों की सभी प्रासंगिक क्षमताओं (मन, आत्मा, व्यक्तित्व, आदि) को नियंत्रित करना चाहिए, अपने उपयोगकर्ताओं की भाषाओं को जानना चाहिए, और उन्हें एक ही समय में अन्य कणों तक पहुंचाना चाहिए। अविश्वासी, प्रकृतिवादी और भौतिकवादी हमें इस असंभवता पर विश्वास करने के लिए कहते हैं।

हालांकि, यदि इसका श्रेय महान निर्माता को दिया जाए, तो सभी वायु कण उसकी आज्ञा के अधीन सैनिक बन जाते हैं।
अपने निर्माता की अनुमति और शक्ति, उनके साथ उनके संबंध और उन पर निर्भरता, तथा उनके निर्माता की शक्ति के प्रकटीकरण के माध्यम से, वे अपने असंख्य सार्वभौमिक कर्तव्यों को इतनी आसानी से पूरा करते हैं जैसे कि वे केवल एक कर्तव्य वाले एक परमाणु हों। उनके कर्तव्य तुरंत पूरे हो जाते हैं, और उनके उच्चारण की सहजता और हवा की गति के साथ। और इस तरह हवा एक बन जाती है

पेन ऑफ़ पावर के अंतहीन, अद्भुत, व्यवस्थित शिलालेखों के लिए "पृष्ठ"। इसके कण पेन के बन जाते हैं

पसलियाँ, और कणों के कर्तव्य पेन द्वारा अंकित बिंदु बन जाते हैं। यह सब उसी आसानी से किया जाता है जैसे एक परमाणु को हिलाने में लगता है।

वायु के जगत का अवलोकन और अध्ययन करते समय मैंने इस सत्य को स्पष्ट रूप से और विस्तार से देखा। ज्ञान के आधार पर मुझे यह निश्चयपूर्वक ज्ञात हुआ कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वास्तविक शब्द 'वह' और उसका उच्चारण दोनों ही उज्ज्वल हैं।

दिव्य एकता के प्रबल प्रमाण और झलकियाँ। मैंने समझा कि इसके अर्थ और प्रतिध्वनि में दिव्य एकता की एक उज्ज्वल अभिव्यक्ति और दिव्य एकता का एक मजबूत प्रमाण निहित है। इसके अलावा, उस प्रमाण में उस एक की पहचान का संकेत निहित है जिसे अनिश्चित, तीसरे व्यक्ति, एकवचन सर्वनाम वह संदर्भित करता है।

मुझे पता चला कि चमत्कारिक अभिव्यक्ति वाला कुरान और जो लोग लगातार ईश्वरीय नामों का उच्चारण करते हैं, वे दोनों ईश्वरीय एकता को व्यक्त करने के लिए इस पवित्र शब्द को बार-बार दोहराते हैं।

अगर कई बिंदु एक ही जगह पर उलझे हुए हों, तो उस बिंदु को पहचानना लगभग असंभव है। अगर आप एक साथ कई काम करते हैं, तो आप भ्रमित हो जाएंगे।

यदि किसी जीवित प्राणी पर एक साथ कई बोझ लादे जाएँ, तो वह कुचला जाएगा। यदि आप एक साथ कई शब्द सुनते या बोलते हैं, तो वे भ्रमित और उलझे हुए हो जाते हैं।

हालाँकि, मैंने स्पष्ट अवलोकन के आधार पर निश्चितता के साथ देखा कि यद्यपि प्रत्येक वायु अणु में हजारों बिंदु, अक्षर और शब्द जमा होते हैं - यहाँ तक कि प्रत्येक परमाणु में भी - वे बिना किसी भ्रम या अनियमितता के संप्रेषित होते हैं। साथ ही, वायु अपने कर्तव्यों को एक साथ और बिना किसी भ्रम के पूरा करती है। प्रत्येक वायु अणु या परमाणु बिना किसी कमी या कमजोरी के भारी बोझ उठाता है। साथ ही, मैंने अनगिनत शब्दों को कानों में प्रवेश करते और मुँह से एकदम सही क्रम में निकलते देखा।

अपने सभी असाधारण कर्तव्यों का पालन करते हुए, प्रत्येक परमाणु और वायु अणु अपने अस्तित्व और कार्य की भाषा में, परमानंद और पूर्ण स्वतंत्रता में, और अपनी गवाही के माध्यम से कहते हैं: “उसके अलावा कोई देवता नहीं है” और “कहो: वह ईश्वर है, एक है।” वे सभी बिजली और गरज के साथ हवा से टकराने वाली तरंगों के बीच पूर्ण क्रम और सामंजस्य के साथ यात्रा करते हैं।

इसे देखते हुए, क्या हम गंभीरता से यह दावा कर सकते हैं कि प्रत्येक परमाणु या वायु अणु में अनंत बुद्धि, ज्ञान, इच्छाशक्ति, शक्ति और सभी गुण होते हैं जो अन्य सभी कणों पर हावी होने के लिए आवश्यक होते हैं ताकि वह उन कार्यों को कर सके? या, ज्ञान, स्पष्ट अवलोकन और व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर निश्चितता की स्थिति से, क्या हम तार्किक रूप से यह दावा कर सकते हैं कि हवा यहाँ शक्ति और भाग्य की कलम के लिए एक बदलते "पृष्ठ" के रूप में कार्य करती है, जिसका उपयोग सर्वशक्तिमान द्वारा अनंत ज्ञान और बुद्धि के साथ किया जाता है, और एक संकेत के रूप में-

बोर्ड (निरसन और पुष्टि की पट्टिका) सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका पर संरक्षित दिव्य आदेशों की एक परिवर्तनशील प्रतिलिपि को दर्शाता है?

वायु ध्वनि संचारित करके दिव्य एकता के इन चमत्कारों और प्रकटीकरण को दर्शाती है, और गुमराह लोगों द्वारा कही गई बातों की असंभवता को दर्शाती है। इसी तरह, यह अन्य कर्तव्यों का पालन करती है (जैसे, बिजली और प्रकाश, आकर्षण और प्रतिकर्षण जैसी सूक्ष्म शक्तियों का संचारण) जबकि एक साथ ध्वनि संचारित करती है। यह पौधों और जानवरों के जीवन के लिए आवश्यक कर्तव्यों (जैसे, श्वसन और परागण) को भी पूर्ण क्रम और बिना किसी भ्रम के पूरा करती है।

हवा ईश्वरीय इच्छा और आदेश को व्यक्त करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। यह बिना किसी वास्तविक या काल्पनिक हस्तक्षेप के यादृच्छिक संयोग, अंधी शक्ति, बहरी प्रकृति, भ्रमित और उद्देश्यहीन कारणता, या शक्तिहीन, बेजान और अज्ञानी पदार्थ के अपने कर्तव्यों का पालन करती है। मैंने यह भी समझा कि प्रत्येक परमाणु और वायु अणु अपने अस्तित्व और कार्य की भाषा में घोषणा करता है: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है" और "कहो: वह ईश्वर है, एक है।" जिस तरह मैंने हवा के भौतिक पहलू में इन चमत्कारों को 'वह' की कुंजी के साथ देखा, उसी तरह हवा भी प्रतीकों या विचारों की दुनिया और अर्थ की दुनिया के लिए 'वह' की तरह एक कुंजी बन गई।

सब पर शांति हो!

प्राणी ईश्वर की आराधना कैसे करते हैं*

क्या तुमने नहीं देखा कि जो कुछ आकाश और धरती में है, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पहाड़, वृक्ष, पशु और मनुष्यों में से बहुत-से लोग, सब अल्लाह के सामने सजदा करते हैं? फिर भी बहुत-से ऐसे लोग हैं, जिन पर सज़ा का हक है। और जिन लोगों से अल्लाह घृणा करता है, उनका कोई सम्मान करनेवाला नहीं।

निस्संदेह अल्लाह जो चाहता है, वही करता है। (22:18)

इस विस्तृत आयत के खजाने से मैं केवल एक रत्न पर चर्चा करूँगा: कुरान में कहा गया है कि सृष्टि में प्रत्येक प्राणी अपनी क्षमता और उन पर दिए गए दिव्य नामों के अनुसार सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा, स्तुति और महिमा करता है। मैं नीचे इस पूजा के एक प्रकार की व्याख्या करता हूँ।

एक शक्तिशाली राजा एक बड़े शहर या एक शानदार महल के निर्माण के लिए चार प्रकार के श्रमिकों को नियुक्त करता है। पहला वर्ग, जिसमें उसके दास शामिल हैं, उन्हें कोई वेतन या वेतन नहीं मिलता है और वे अवर्णनीय सुख से संतुष्ट रहते हैं।

हर कार्य से आने वाला उत्साह और आनंद, जो सभी अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है

---

* चौबीसवाँ वचन / चौथी शाखा

उनके आदेश का पालन करते हैं। जैसे-जैसे ये दास उनकी प्रशंसा करते हैं और उनके गुणों का बखान करते हैं, उन्हें और अधिक आनंद और उत्साह मिलता है। उन्हें अपने स्वामी के साथ अपने संबंध के अलावा और कोई मांग नहीं है, जिसे वे एक महान सम्मान के रूप में जानते हैं। उन्हें अपने स्वामी के नाम पर उनके राज्य में होने वाले सभी कार्यों की निगरानी करने और उनके दृष्टिकोण से देखने से आध्यात्मिक आनंद भी मिलता है।

उन्हें वेतन, पद या पदोन्नति की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती।

दूसरे वर्ग में साधारण नौकर शामिल हैं जो अपने काम के पीछे के सार्वभौमिक उद्देश्यों और इससे मिलने वाले महत्वपूर्ण परिणामों से अनभिज्ञ हैं। कुछ लोग कल्पना करते हैं कि वे उस छोटी सी मजदूरी के लिए काम कर रहे हैं जो स्वामी उन्हें नियमित रूप से देते हैं। तीसरे वर्ग में कुछ निर्माण-संबंधी कार्यों और कर्मों के लिए उपयोग किए जाने वाले जानवर शामिल हैं। चूँकि उनका काम उनकी क्षमताओं के अनुरूप है, इसलिए उन्हें किसी न किसी तरह का आनंद मिलता है। यही कारण है कि सभी गतिविधियों में एक निश्चित आनंद होता है। इस वर्ग के सदस्य संतुष्ट हैं

उनका भोजन और मजदूरी के रूप में उन्हें मिलने वाला आनंद।
चौथा वर्ग उन लोगों का है जो जानते हैं कि

वे क्या कर रहे हैं, क्यों और किसके लिए काम कर रहे हैं, दूसरे क्यों काम कर रहे हैं, और स्वामी का समग्र उद्देश्य क्या है। वे अन्य श्रमिकों की देखरेख करते हैं और उन्हें उनके पद के अनुसार भुगतान किया जाता है।

ठीक उसी तरह, संसार के स्वामी, आकाश और पृथ्वी के सर्वशक्तिमान स्वामी, इस संसार और परलोक के दयालु निर्माता, इस ब्रह्मांड के महल में, इस कार्य-कारण के क्षेत्र में स्वर्गदूतों, जानवरों, निर्जीव वस्तुओं, पौधों और लोगों का उपयोग करते हैं। वह ऐसा आवश्यकता के कारण नहीं करता, क्योंकि वह सबका निर्माता है, बल्कि अपनी शक्ति और सम्मान, महानता और प्रभुता की आवश्यकताओं जैसे ज्ञान के कुछ उदाहरणों के लिए करता है। उसने इन चार वर्गों को पूजा के विशिष्ट कर्तव्यों का दायित्व सौंपा है।

प्रथम श्रेणी के लोग देवदूत हैं। उन्हें कभी पदोन्नत नहीं किया जाता, क्योंकि उनके पद निश्चित और निर्धारित होते हैं।
उन्हें काम से ही एक खास आनंद मिलता है और पूजा से एक चमक मिलती है। संक्षेप में, उनका पुरस्कार उनकी सेवा में मिलता है। मानवता हवा, पानी, प्रकाश और भोजन से पोषित होती है और आनंद प्राप्त करती है; स्वर्गदूतों को ईश्वर की याद, महिमा, पूजा, ज्ञान और प्रेम की रोशनी से पोषण मिलता है और वे आनंद प्राप्त करते हैं। वे प्रकाश से निर्मित हैं, और इसलिए प्रकाश उनके पोषण के लिए पर्याप्त है। यहां तक कि सुगंधित सुगंध, जो प्रकाश के करीब होती है, उनके लिए एक तरह का आनंददायक पोषण है, क्योंकि शुद्ध आत्माएं मीठी सुगंधों में आनंद लेती हैं।

जिसकी वे पूजा करते हैं उसके आदेश पर और उसके लिए काम करना, उसके नाम और उसकी सेवा करना

उनके दृष्टिकोण के माध्यम से पर्यवेक्षण करना, उनके साथ संबंध के माध्यम से सम्मान प्राप्त करना और उनके राज्य के भौतिक और अभौतिक आयामों का अध्ययन करके "ताज़ा" होना, और उनकी कृपा और महिमा के प्रकटीकरण को देखकर संतुष्ट होना उन्हें एक उन्नत आनंद देता है जिसे मानव मन समझ या अनुभव नहीं कर सकता है।

स्वर्गदूतों का एक वर्ग पूजा करता है और दूसरा वर्ग काम करता है (पूजा का दूसरा रूप)। काम करने वाले स्वर्गदूतों का एक तरह का मानवीय व्यवसाय होता है। अगर कोई ऐसा कहे, तो कुछ चरवाहों या किसानों की तरह होते हैं। पृथ्वी एक खेत की तरह है, और एक नियुक्त स्वर्गदूत सर्वशक्तिमान निर्माता की आज्ञा, अनुमति, शक्ति और ताकत और उसके खातिर अपनी पशु प्रजातियों की देखरेख करता है। प्रत्येक पशु प्रजाति में एक छोटा स्वर्गदूत होता है जिसे एक तरह के चरवाहे के रूप में नियुक्त किया जाता है।

धरती पौधों की बुवाई के लिए एक कृषि योग्य क्षेत्र है। सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर और उनकी शक्ति से उन सभी की देखरेख करने के लिए एक देवदूत नियुक्त किया गया है। निम्न श्रेणी के देवदूत विशिष्ट पौधों की प्रजातियों की देखरेख करके सर्वशक्तिमान ईश्वर की आराधना और महिमा करते हैं। माइकल, ईश्वर के पोषण के सिंहासन के वाहकों में से एक - एक अधिकारी

सर्वोच्च पद जिसे परमेश्वर अपने सभी प्राणियों की आवश्यकताओं की पूर्ति से संबंधित कार्यों को छिपाने के लिए नियुक्त करता है - वह इन स्वर्गदूतों का पर्यवेक्षण करता है।

ये देवदूत चरवाहे और किसान इंसानों जैसे नहीं होते, क्योंकि वे केवल ईश्वर के नाम पर, उसके नाम पर, और उसकी शक्ति और आज्ञा से देखरेख करते हैं। वे केवल उन्हें सौंपी गई प्रजाति में ईश्वर के प्रभुत्व की अभिव्यक्तियों का निरीक्षण करते हैं, उसमें ईश्वरीय शक्ति और दया की अभिव्यक्तियों का अध्ययन करते हैं, किसी तरह की प्रेरणा के माध्यम से उसे ईश्वरीय आदेश देते हैं, और किसी तरह उसके स्वैच्छिक कार्यों को व्यवस्थित करते हैं।

पौधों की देखरेख में खास तौर पर उनकी दिव्य भाषा में पौधों की महिमा का प्रतिनिधित्व करना शामिल है, जो उनके अस्तित्व की भाषा में की गई है। वे अपनी दिव्य भाषा में उन प्रशंसाओं और उल्लासों की घोषणा करते हैं जो पौधे अपने जीवन के माध्यम से राजसी सृष्टिकर्ता को देते हैं, पौधों की क्षमताओं को सही ढंग से नियंत्रित और उपयोग करते हैं, और उन्हें कुछ निश्चित लक्ष्यों की ओर निर्देशित करते हैं।

ऐसी सेवाएँ उनकी आंशिक इच्छाशक्ति और एक तरह की पूजा और आराधना के माध्यम से की जाने वाली क्रियाएँ हैं। देवदूत अपने कार्यों की शुरुआत या सृजन नहीं करते हैं, क्योंकि हर चीज़ पर सभी चीज़ों के निर्माता की एक विशेष मुहर होती है, जिसका कोई सह-निर्माता नहीं है। संक्षेप में, देवदूत जो कुछ भी करते हैं वह उनकी पूजा है और इसलिए यह सामान्य मानवीय कार्यों से भिन्न है।

दूसरे वर्ग में पशु हैं। चूँकि पशु

उनके पास एक भूखी आत्मा और एक आंशिक इच्छा भी है, उनकी

काम "पूरी तरह से परमेश्वर के लिए" नहीं है इस अर्थ में कि, कुछ हद तक, वे अपने लिए हिस्सा लेते हैं।

इसलिए, चूँकि (सार्वभौमिक) साम्राज्य का राजसी और उदार स्वामी सर्व-दयालु और उदार है, इसलिए वह उन्हें उनके हिस्से के रूप में मजदूरी देता है। उदाहरण के लिए, सर्व-बुद्धिमान सृष्टिकर्ता ने गुलाब के प्रति अपने प्रेम के लिए प्रसिद्ध बुलबुल को पाँच उद्देश्यों के लिए नियुक्त किया है:

- पशु प्रजातियों के नाम पर, उनके और वनस्पति प्रजातियों के बीच गहन संबंध की घोषणा करना।
- पशुओं के बीच प्रभु का वक्ता बनना, जिन्हें दयालु ईश्वर का अतिथि माना जा सकता है, जो भोजन की आवश्यकता में हैं, तथा जो दयालु प्रदाता द्वारा भेजे गए उपहारों की प्रशंसा करते हैं तथा अपनी खुशी की घोषणा करते हैं।

- प्रत्येक पौधे पर यह घोषणा करना कि पौधे जानवरों को जो सहायता प्रदान करते हैं उसके बदले में [जानवरों द्वारा] उनका क्या स्वागत किया जाता है।

- पौधों के सुंदर चेहरों से जानवरों की पौधों के प्रति तीव्र आवश्यकता, प्रेम और जुनून की आवश्यकता की घोषणा करना।

- अत्यंत सुखद लालसा के साथ, अत्यंत सुन्दर महिमामंडन और अत्यंत कोमल गुलाब के समान रूप में, समस्त साम्राज्य के महामहिम, कृपालु और उदार स्वामी के दया के दरबार में अर्पित करना।

भगवान बुलबुल का इस्तेमाल दूसरे उद्देश्यों और अर्थों के लिए करते हैं। बुलबुल इन उद्देश्यों और अर्थों को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के लिए काम करती है। यह अपनी भाषा में बोलती है और हम इसके मार्मिक गीतों से इन अर्थों को समझते हैं। अगर, स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के विपरीत, यह नहीं जानती कि इसके गीतों का क्या अर्थ है, तो इससे हमारी समझ को कोई नुकसान नहीं होता, क्योंकि "जो सुनता है वह बोलने वाले से बेहतर समझ सकता है।" एक घड़ी समय बताती है, हालाँकि उसे इसका पता नहीं होता; इन उद्देश्यों के बारे में विस्तृत जानकारी न होने का मतलब यह नहीं है कि इसका इस्तेमाल इन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता। इसका प्रतिफल वह आनंद है जो इसे मुस्कुराते हुए, सुंदर गुलाबों को देखने से मिलता है, साथ ही उनसे बात करने और उनके प्रति अपना बोझ उतारने से भी मिलता है। दूसरे शब्दों में, इसके मार्मिक गीत पशुवत दुःख से उत्पन्न होने वाली शिकायतें नहीं हैं, बल्कि सर्व-दयालु के उपहारों के लिए धन्यवाद हैं।

बुलबुल की तुलना दूसरे छोटे जानवरों या कीड़ों से करें, और आप देखेंगे कि हर कोई कुछ खास उद्देश्यों के लिए काम करता है। मजदूरी के रूप में अपने कर्तव्यों में शामिल एक खास आनंद के माध्यम से, वे भगवान की रचना में निहित कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। एक साधारण नाविक की तरह, जो शाही जहाज पर खेवनहार के रूप में काम करने के लिए एक छोटी सी मजदूरी प्राप्त करता है, उसी तरह प्रत्येक जानवर जो अपने ईश्वर-प्रदत्त कर्तव्य में नियोजित होता है, उसे एक खास मजदूरी मिलती है।

एक पूरक नोट: इस तरह से भगवान की स्तुति और महिमा गाना नाइटिंगेल के लिए अद्वितीय नहीं है। अधिकांश प्रजातियों में एक या एक से अधिक सदस्य होते हैं, जो नाइटिंगेल की तरह, अपनी प्रजाति की सबसे अच्छी भावनाओं को बेहतरीन कविता में बेहतरीन महिमा के साथ प्रस्तुत करते हैं। मक्खियों और कीड़ों की कई और विभिन्न "नाइटिंगेल्स", विशेष रूप से, अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों के लिए बेहतरीन कविता में अपनी महिमा गाती हैं और उन्हें आनंद देती हैं।

कुछ रात्रिचर होते हैं। सभी छोटे जानवरों के कविता-पाठी मित्र, जब सभी प्राणी रात्रि के शांतिपूर्ण सन्नाटे में प्रवेश करते हैं, तब वे भगवान की स्तुति और महिमा गाते हैं।
प्रत्येक समूह अपने-अपने हृदय से अपने महान निर्माता का महिमामंडन करने और उनका नाम लेने में भगवान के नामों का मौन आह्वान करने वाले समूह का नेतृत्व करता है और उनके पीछे चलता है। एक अन्य समूह दिनचर है। वसंत और गर्मियों में दिन के समय, वे पेड़ों के "मंचों" से अपनी मधुर आवाज़, मधुर धुनों और काव्यात्मक महिमामंडन के साथ सभी जीवित प्राणियों के लिए सबसे दयालु और करुणामयी की दया की घोषणा करते हैं। मानो प्रत्येक ने भगवान के नामों के ज़ोरदार उच्चारण के एक समूह का नेतृत्व किया हो, वे अपने श्रोताओं को परमानंद में जगाते हैं। यह प्रत्येक प्रजाति को अपनी विशेष भाषा और लहजे में सर्वशक्तिमान निर्माता के नाम गाने के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार प्रत्येक प्राणी प्रजाति, यहाँ तक कि सितारों में भी, एक प्रमुख वाचक और प्रकाश फैलाने वाली बुलबुल होती है।

सबसे उत्कृष्ट, महान, प्रख्यात और गहन, साथ ही सबसे महान और सबसे सम्माननीय कोकिला, पैगंबर मुहम्मद हैं। उनकी आवाज़ सबसे अधिक गीतात्मक है, उनके गुण सबसे शानदार हैं, ईश्वर के नामों का उनका पाठ सबसे सही और व्यापक है, और उनका आभार सबसे सार्वभौमिक है। उनकी एक सबसे सही पहचान और एक सबसे सुंदर रूप है, और वे अपनी सबसे लयबद्ध और सबसे सुखद धुनों और सबसे शानदार महिमा के माध्यम से सृष्टि के सभी प्राणियों को परमानंद में ले आते हैं। वे मानवता के गौरवशाली कोकिला हैं, कुरान वाली कोकिला। उन पर, उनके परिवार और उनके साथियों - अन्य पैगंबरों पर सबसे अच्छी कृपा और शांति हो।

इस प्रकार, पशुओं द्वारा की गई स्तुति और पूजा के अन्य कार्य, जो ब्रह्माण्ड की रचना और संचालन के ईश्वर के नियमों के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता में, तथा साथ ही सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति के माध्यम से उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक कर्तव्यों का अद्भुत तरीके से पालन करते हैं, वे जीवनदाता, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के दरबार में अर्पित की गई प्रशंसा के उपहार हैं।

श्रमिकों की तीसरी श्रेणी में पौधे और निर्जीव वस्तुएं शामिल हैं जिन्हें कोई मजदूरी नहीं मिलती, क्योंकि उनके पास कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं होती। वे जो कुछ भी करते हैं, वह पूरी तरह से ईश्वर के लिए, उनकी इच्छा और शक्ति से और उनके नाम पर किया जाता है। हालाँकि, जैसा कि उनके जीवन चक्र से समझा जाता है, वे-

परागण और फल और बीज पैदा करने के काम को करने से उन्हें किसी तरह का आनंद मिलता है। लेकिन उन्हें कोई दर्द नहीं होता, जबकि जानवरों को दर्द और खुशी दोनों का अनुभव होता है क्योंकि उनके पास कुछ हद तक विकल्प होता है। यह तथ्य कि पौधों और निर्जीव वस्तुओं में कोई इच्छा नहीं होती, उनके काम को जानवरों की तुलना में अधिक परिपूर्ण बनाता है। किसी तरह का विकल्प रखने वाले जानवरों में, मधुमक्खी जैसे जीवों का काम, जो एक तरह की प्रेरणा से लैस होते हैं, उन लोगों की तुलना में अधिक परिपूर्ण होता है जो अपनी इच्छा पर निर्भर होते हैं।

वनस्पति प्रजातियाँ सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता से प्रार्थना करती हैं और पूछती हैं, प्रत्येक अपनी सत्ता और सामर्थ्य की भाषा में: "हे प्रभु। हमें शक्ति प्रदान करें ताकि, पूरी पृथ्वी पर अपनी प्रजाति का 'ध्वज' फहराकर, हम आपके प्रभुत्व की संप्रभुता की घोषणा कर सकें। हमें सफलता प्रदान करें ताकि हम पृथ्वी की मस्जिद के हर कोने में आपकी पूजा कर सकें। हमें हर उपयुक्त क्षेत्र में बढ़ने में सक्षम करें, ताकि हम आपके सबसे सुंदर नामों और आपकी अद्भुत, अमूल्य कलाओं के कार्यों को प्रदर्शित कर सकें।" जवाब में, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता कुछ प्रजातियों (जैसे, कई कांटेदार पौधे और कुछ पीले फूल) के बीजों को छोटे "बालों के पंख" से सुसज्जित करता है ताकि वे उड़ सकें और अपनी प्रजातियों की ओर से दिव्य नामों को प्रकट कर सकें। वह कुछ प्रजातियों को सुंदर, स्वादिष्ट मांस देता है जो मानव जीवन के लिए आवश्यक या आनंददायक होता है-

वह हमें उनकी सेवा करने और उन्हें हर जगह रोपने के लिए प्रेरित करता है।

दूसरों को एक कठोर और अपचनीय "हड्डी" मिलती है - मांस की तरह ताकि जानवर उन्हें खा सकें और फिर नष्ट कर सकें

अपने बीजों को एक विस्तृत क्षेत्र में फैलाते हैं। वह कुछ को छोटे-छोटे पंजे देता है जो उन्हें छूने वाली हर चीज़ को पकड़ लेते हैं। वे चारों ओर फैल जाते हैं और अपनी प्रजाति का "ध्वज" उठाते हैं, जो राजसी निर्माता की सबसे कीमती कलात्मकता को प्रदर्शित करता है। अभी भी अन्य प्रजातियों, जैसे कि कड़वे तरबूज को, वह एक "शॉटगन" की ताकत देता है ताकि जब समय हो, तो छोटे खरबूजे गिरें और अपने बीजों को कई मीटर की दूरी पर "गोली मारें" ताकि उन्हें बोया जा सके। वे काम करते हैं ताकि, उनके नामों के उच्चारण के साथ, सर्व-दयालु निर्माता को कई भाषाओं में महिमा दी जा सके।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता, जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है, ने हर चीज़ को सुंदर और पूर्ण व्यवस्थित रूप से बनाया है। उसने सभी प्राणियों को उनकी ज़रूरतों से सुसज्जित किया है, उन्हें अनुकूल लक्ष्यों की ओर निर्देशित किया है, और उन्हें सबसे उचित कर्तव्यों में उपयोग किया है। वह उन्हें सबसे अच्छे तरीके से अपनी पूजा और महिमा करने के लिए मजबूर करता है। इसलिए यदि आप वास्तव में मनुष्य हैं, तो इन सुंदर चीज़ों को यह दावा करके ख़राब न करें कि वे प्रकृति, संयोग या आवश्यकता द्वारा बनाई गई थीं। उन्हें बेतुकी बातों और बकवास से गंदा न करें

उद्देश्यहीनता। बदसूरत तरीके से काम न करें, और बदसूरत न बनें।

चौथा वर्ग मनुष्य है। सेवकों के बीच एक वर्ग बनाते हुए, वे अपने व्यापक पर्यवेक्षण और व्यापक ज्ञान में, और दिव्य प्रभुत्व के संदेशवाहक होने में स्वर्गदूतों के समान हैं। वास्तव में, हम प्रकृति में अधिक व्यापक हैं। चूँकि हमारे पास बुराई की ओर प्रवृत्त एक भूखी आत्मा है (स्वर्गदूतों में नहीं), हमारे पास लगभग असीमित उन्नति या गिरावट की क्षमता है। जब हम अपने काम में आनंद और अपने लिए हिस्सा चाहते हैं, तो हम जानवरों के समान होते हैं। इसे देखते हुए, हम दो तरह के वेतन प्राप्त कर सकते हैं: एक महत्वहीन, पशुवत और तत्काल; दूसरा स्वर्गदूतीय, सार्वभौमिक और स्थगित। इस तरह के मामलों पर अन्यत्र चर्चा की गई है, विशेष रूप से ग्यारहवें और तेईसवें अध्याय में।

सुभान अल्लाह [ईश्वर की महिमा]*

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त
दयालु, दयावान है।

हम निम्नलिखित कारणों से परमेश्वर की महिमा कहते हैं: • वह परमेश्वर होने के लिए आवश्यक शक्ति के माध्यम से पूर्णतः शक्तिशाली है, पूर्णतः धनवान है तथा शक्तिहीनता और आवश्यकता से मुक्त है।

• वह अपने अस्तित्व, गुणों और कार्यों में पूर्णतः परिपूर्ण है, और उसमें कोई दोष या कमी नहीं है। उसके कार्यों की पूर्णता उसके कार्यों की पूर्णता की ओर इशारा करती है, जो उसके नाम की पूर्णता की ओर इशारा करती है। उसके नाम की पूर्णता उसके गुणों की पूर्णता को दर्शाती है, जो उसके सार की पूर्णता की गवाही देती है। सभी पूर्णता और सुंदरता उसकी पूर्णता और सुंदरता की एक धुंधली छाया मात्र हैं। आध्यात्मिक अनुभव और खोज के सभी लोग, साथ ही वे लोग जो सृष्टि में छिपे सत्यों को उजागर करते हैं, इस बात पर सहमत हैं कि सृष्टि अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के प्रकाश की एक छाया है।

---

* प्रकाश के बीज-स्थान से (मथनावी अल-नूरिया) / चौथा ग्रंथ / पहला अध्याय

• वह एक और एकल है। उसके प्रभुत्व में कोई भागीदार नहीं है, क्योंकि कार्य की एकता उसके कर्ता की एकता को इंगित करती है; उसके प्रभु और पालनहार होने में, जैसा कि कलम की एकता [समय और स्थान के "पृष्ठ" पर "लेखन") द्वारा दर्शाया गया है; या उसकी दिव्यता में, क्योंकि दिव्यता के लिए पूर्ण स्वतंत्रता और अद्वितीय और अद्वितीय होने की आवश्यकता होती है।

• वह सर्वशक्तिमान और अनादि है, उसके कोई सहायक या मंत्री नहीं हैं, क्योंकि ऐसी सीमित परिस्थितियां अनंत, पूर्ण शक्ति पर सीमाएं लगा देंगी।

• वह शाश्वत और अनादि है, उसकी कोई समानता या स्वरूप नहीं है। बराबर।

• वह अनिवार्यतः विद्यमान है, जिसे आकस्मिकताओं से संबंधित कोई आवश्यकता नहीं है।

• आकाशों और धरती में उसकी तुलना सबसे ऊँची है। वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है, और मिथ्या विश्वास रखने वाले उसमें कोई गुण नहीं बताते।

उसमें कोई दोष नहीं है, क्योंकि दोष और कमियाँ तो आकस्मिक नश्वर प्राणियों में ही होती हैं। चूँकि ईश्वर अनिवार्यतः विद्यमान है, इसलिए उन पर दोष कैसे आरोपित किए जा सकते हैं?

• वह शाश्वत, शाश्वत है जो बदलता या परिवर्तित नहीं होता, क्योंकि ये विशेषताएँ आकस्मिक, सृजित प्राणियों के लिए विशिष्ट हैं और उसके पूर्णतः आवश्यक अस्तित्व और एकत्व के विपरीत हैं।

- वह सृष्टि और अंतरिक्ष का निर्माता है, जिसमें कोई विभाजन नहीं है और वह अंतरिक्ष में समाहित नहीं है, क्योंकि यह दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक पूर्ण स्वतंत्रता के साथ असंगत है।

- वह शाश्वत, स्थायी है जिसका कोई अस्तित्व नहीं है-
ओटना या अंत।

- वह अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी है, जो उसके लिए उपयुक्त नहीं है, जैसे अवतार और मिलन से मुक्त और छूट प्राप्त है। मिट्टी या मिट्टी से बनी किसी चीज का उन सभी लोगों के भगवान से क्या संबंध हो सकता है जो प्रभुत्व का दावा करते हैं? सीमित होने का मतलब है हावी होना, और यह कहना कि भगवान कुछ प्राप्त करते हैं, इसका मतलब है उन पर सीमाएं लगाना। वह ऐसी गलत धारणाओं और अवधारणाओं से पूरी तरह मुक्त और छूट प्राप्त है।

- वह वही है जिसकी महिमा सभी फ़रिश्ते और आकाश और पृथ्वी के सभी प्राणी, भाग्य की कलम द्वारा उनके माथे पर अंकित चिह्नों के माध्यम से करते हैं।

अल-हम्दु लिल्लाह

[सभी स्तुति परमेश्वर की है]*

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत
दयालु, अत्यंत दयावान है

हम कहते हैं कि निम्नलिखित के लिए ईश्वर की स्तुति हो
कारण:

- सभी जीव और रचनाएँ, मौखिक रूप से या अपने जीवन और अस्तित्व की भाषाओं में, उनकी पूर्णता के गुणों को प्रकट करके उनकी स्तुति और महिमा करती हैं। अपनी संपूर्णता में और अपनी शुरुआत और अस्तित्व की भाषाओं में, और अपनी ज़रूरतों, अभावों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, वे उनकी महिमा की स्तुति करते हैं।

अपनी प्रदर्शित कलात्मकता, सुव्यवस्थितता, संतुलन, दृढ़ता और पूर्णता की भाषाओं में, तथा अपनी आराधना और महिमा के कार्यों में, वे उसकी महिमा के गुणों को दोहराते हैं और पुष्टि करते हैं कि वह ईश्वर है, अनिवार्य रूप से विद्यमान, अनादि,

शाश्वत, शाश्वत, एक और एकल, अद्वितीय, शाश्वत-

---

* प्रकाश के बीजारोपण से / चौथा ग्रंथ / दूसरा
अध्याय

अंततः सभी का प्रार्थनीय, सर्वशक्तिमान, सर्व-बाध्यकारी, गौरवान्वित, तथा सर्व-प्रभावशाली।

वे उसकी सुन्दरता और अनुग्रह के गुणों के साथ उसकी स्तुति करते हुए कहते हैं कि वह हमारा सृष्टिकर्ता, अत्यन्त दयालु, दयावान, सर्वप्रदाता, सर्वदानी, सर्वप्रेममय, सर्वविशाल (आशीर्वाद देने वाला), अत्यन्त कृपालु, अतिसूक्ष्म, सर्वकृपा करने वाला और सर्वसुन्दर है।

वे उसका उल्लेख उसकी पूर्णता के गुणों के साथ करते हैं, और कहते हैं कि वह हमारा रचयिता और स्वामी है, सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर, सर्व-पालन करने वाला, सर्वज्ञ, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-शक्तिमान, सर्व-इच्छुक, सर्व-श्रवण, सर्व-देखने वाला, सर्व-भाषण करने वाला और सर्व-साक्षी है। वे ब्रह्मांड में प्रकट उसके सुंदर नामों का भी पाठ करते हैं।

• ब्रह्मांड उसकी पूर्णता के गुण को दिखाकर उसकी प्रशंसा करता है, महिमा करता है और उसका सम्मान करता है। अपने सभी अध्यायों, खंडों, पृष्ठों, पंक्तियों, वाक्यों और अक्षरों के साथ, और इसके उद्देश्यों और इसमें प्रदर्शित कलात्मकता और डिजाइन के साथ, यह सबसे बड़ी पुस्तक (ब्रह्मांड) अपने आप में एक संपूर्ण है। इसमें मौजूद हर चीज़ और हर कोई उसके महामहिम के गुण की "बिजली", उसकी कृपा और सुंदरता के गुणों की "चमक", "चमक" को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण हैं।

उनकी पूर्णता के गुण की, उनके सुंदर नामों की “किरणों” की।

- हम उस अस्तित्व के लिए उसकी स्तुति करते हैं, जो शुद्ध अच्छाई है, जो वह हमें प्रदान करता है; जीवन के आशीर्वाद के लिए जिसके द्वारा अस्तित्व परिपूर्ण होता है; और विश्वास के , आशीर्वाद के लिए, जो सच्चे जीवन का सार है और जिसके द्वारा जीवन पूर्णता प्राप्त करता है।

- हम विश्वास के प्रकाश के लिए उनकी स्तुति करते हैं जो अंधकार को दूर करता है और बाहरी दुनिया के साथ-साथ हमारे आंतरिक संसार को भी प्रकाशित करता है। विश्वास प्रकाश का एक स्रोत है जिसमें छह स्तंभ शामिल हैं, जिनसे शाश्वत प्रभु की ज्ञान की किरणें निकलती हैं।

- हम ईश्वर में विश्वास के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं, क्योंकि यह आत्मा को विनाश के अंधकार से, ब्रह्मांड में पूर्ण उजाड़ की भावना से, अस्तित्व में सभी चीजों को शोकगीत के रूप में देखने से, तथा असंख्य अन्य विनाशकारी भावनाओं से बचाता है।

- हम विश्वास के प्रकाश के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं, जो हमें शरण, अनुग्रह, उदारता, प्रेम, दया और करुणा दिखाता है। विश्वास शाश्वत जीवन को उजागर करता है, अपनी चमक दिखाता है, और हमें शाश्वत खुशी का शुभ समाचार देता है। यह हमें एक सहारा और मदद का स्रोत प्रदान करता है, हमें सिखाता है कि हमें किस पर भरोसा करना चाहिए और किससे मदद मांगनी चाहिए, और दया के आवरण के चेहरे से विलाप का पर्दा हटाता है-

विश्वास दो दुनियाओं की तुलना करके वैध सुखों से अलग होने के दर्द को भी दूर करता है, और अनुग्रह के अनन्त वृक्ष को दिखाकर अनुग्रह और आशीर्वाद की निरंतरता को सक्षम बनाता है।

विश्वास का प्रकाश उन सभी चीजों और स्थितियों की वास्तविक प्रकृति को दर्शाता है जिन्हें विवादास्पद, अजीब, मृत और भयावह माना जाता है, और यह स्पष्ट करता है कि वे सभी मैत्रीपूर्ण, परिचित, जीवित और सौहार्दपूर्ण हैं।

यह प्रकाश सभी संसारों और इस क्षेत्र तथा अगले क्षेत्र को अपने में समाहित करता है, जो विश्वासियों के लिए दया के उपहारों से परिपूर्ण हैं। इसलिए विश्वासियों को कहना चाहिए: "ईश्वर ने जो कुछ भी बनाया है, उसके लिए उसकी सारी प्रशंसा हो," और उसे प्रभु और स्वामी के रूप में स्वीकार करें और उससे संतुष्ट हों। उन्हें अपने दिलों को केवल उसी के रूप में स्थापित करना चाहिए जो पूजा और प्रेम के योग्य है, और जीवन का उद्देश्य या लक्ष्य है।

• हम सारे संसार के पालनहार की, जो सारे संसार पर दया करता है, प्रशंसा करते हैं, जो हमारे स्वामी मुहम्मद हैं।

उनके और उनके संदेशवाहक के माध्यम से, ईश्वरत्व की अवधारणा की रोशनी, जो भ्रष्ट दर्शन और धर्मों के घने आवरण के नीचे बुझ गई थी, फिर से प्रज्वलित हुई और स्थिरता और स्थायित्व प्राप्त किया। उनके संदेशवाहक के माध्यम से, जो कुछ भी संसार के प्रभु को प्रसन्न करता है, वह प्रकट होता है।

मानवता के लिए यह स्पष्ट हो गया है, और उसके माध्यम से मानवता को विश्वास की ओर निर्देशित किया गया है, जो सृजन और अस्तित्व का प्रकाश है।

- हम इस्लाम के आशीर्वाद के लिए ईश्वर की प्रशंसा करते हैं, जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो सारे संसार के पालनहार को प्रसन्न करता है।
  इस्लाम हमें बताता है कि उसे क्या पसंद है और हमारा पालनहार, सारे संसार का पालनहार, आकाश और पृथ्वी का पालनहार, क्या चाहता है और क्या स्वीकार करता है।
- हम ईश्वर के नाम से, जो दयालु और दयावान है, विश्वास की रोशनी के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं। प्रशंसा करने वालों को अपना ध्यान दान से हटाकर दान देने की ओर लगाना चाहिए ताकि वे महसूस कर सकें कि दान देने वाला उन्हें देखता है, उनसे ज़्यादा उनके करीब है, और दान देकर खुद को प्रकट करता है और अनुग्रह करके प्यार करता है। जब लोग उसके खुद को प्रकट करने और प्यार करने की चाहत के बारे में जागरूक हो जाते हैं, तो वे उसके प्रति आभारी होने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

अल्लाहु अकबर [ईश्वर सबसे महान है]*

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत
दयालु, अत्यंत दयावान है

हम निम्नलिखित कारणों से ईश्वर को महान् कहते हैं-
बेटे:

- वह सभी चीज़ों से अतुलनीय रूप से महान है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है, जो अपनी असीम शक्ति के माध्यम से सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है। वह बिना किसी अपवाद के, हर चीज़ को एक ही सहजता से बनाता है: तुम्हारा सृजन और मृतकों में से जी उठना एक ही आत्मा को बनाने और उठाने के समान है (31:28)।

वह एक विशाल तारा, एक समष्टि और एक प्रजाति का निर्माण उतनी ही आसानी से कर सकता है, जितनी आसानी से वह एक सूक्ष्म कण, एक भाग और एक व्यक्ति का निर्माण कर सकता है।

- वह सर्वज्ञ है, जो ईश्वरीय सत्ता के रूप में अपने लिए आवश्यक असीम ज्ञान के माध्यम से सभी चीजों को जानता है। उससे कुछ भी नहीं बच सकता, क्योंकि वह हर जगह मौजूद है। व्यापक ज्ञान, सर्वव्यापी अनुग्रह, और सर्वव्यापी चेतना; सभी चीजों को एक दायरे में रखने वाले आदेश

* प्रकाश के बीजारोपण से / चौथा ग्रंथ / तीसरा अध्याय

और फलदायी नियम और माप-तौल, नियत समय, नियमित व्यवस्था, सर्वव्यापक दया, दृढ़ और भव्य संगठन, और सटीक देखभाल, जो सभी पूरे ब्रह्मांड में देखे जाते हैं, सर्वशक्तिमान के व्यापक ज्ञान की गवाही देते हैं: क्या वह जो पैदा करता है, उसे पता नहीं होना चाहिए? (67:14)

- उसकी इच्छा में सभी चीज़ें शामिल हैं। जबकि ब्रह्मांड और उसकी सामग्री के लिए एक निश्चित रूप धारण करने की अनंत संभावनाएँ थीं, इसे सटीक उपायों के अनुसार वर्तमान क्रम में व्यवस्थित किया गया था। पत्तियों, फूलों और फलों वाले पेड़ की तरह, सभी सुव्यवस्थित जीव सरल, निर्जीव तत्वों से बनाए गए थे। यह सब सर्वशक्तिमान की सर्वव्यापी इच्छा का प्रमाण है और यह दर्शाता है कि जो कुछ भी वह चाहता है वह होता है, और जो वह नहीं चाहता वह नहीं होता।

- वह शाश्वत "सूर्य" है, और यह ब्रह्मांड केवल उसके प्रकाश की छाया, उसके नामों की अभिव्यक्ति और उसके कार्यों की छाप दिखाता है।

- वह सभी चीज़ों से अतुलनीय रूप से महान है। वह शाश्वत संप्रभु है। सभी दुनियाएँ व्यवस्था और व्यवस्था पर पूर्ण निर्भरता में उसके अधीन हैं।

माप उसने स्थापित किया है।

• वह शाश्वत शासक है। उसने अपने सामान्य कार्य करने के तरीके, अपने भाग्य और आदेश के निर्देशों, अपनी इच्छा और बुद्धि के उपदेशों, अपनी कृपा और दया की आवश्यकताओं और अपने नामों और गुणों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से ब्रह्मांड को आदेश दिया। जिसे हम (प्रकृति के) नियम कहते हैं, वह सभी प्रजातियों पर उसके ज्ञान, आदेश और इच्छा की अभिव्यक्तियाँ हैं।

• वह शाश्वत निर्माता है, जिसने इस स्थूल जगत (ब्रह्मांड) और इस सूक्ष्म जगत (मानवता) को बनाया और स्थापित किया है। उसकी मुहर दोनों के माथे पर, बल्कि दोनों के प्रत्येक भाग पर है।

• वह शाश्वत डिज़ाइनर है। यह ब्रह्मांड उसके भाग्य और आदेश की "कलम" की रेखाओं, उसकी बुद्धि के "कम्पास" के डिजाइन, उसकी दया के प्रसार के फल, उसके अनुग्रह के "उज्ज्वल हाथ" की सजावट, उसकी उदारता के वितरण के फूल और उसकी कृपा की अभिव्यक्तियों की किरणों से बना है।

• वह शाश्वत रूप से शक्तिशाली है। यह ब्रह्मांड उसकी शक्ति के चमत्कारों से बना है, जो इस बात की गवाही देता है कि वह सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है। कोई भी चीज़ उसकी शक्ति के प्रभुत्व से बच नहीं पाई है (या नहीं बच पाई है), जिसके संबंध में एक छोटा कण और सूर्य एक समान हैं।

• वह सृष्टिकर्ता, सृजक और निर्माता है जिसके लिए सुंदर नाम हैं। सभी स्वर्गीय वस्तुएँ उसकी दिव्यता और भव्यता के चमकदार सबूत हैं, और उसकी प्रभुता और महिमा के चमकते हुए गवाह हैं। • वह सभी चीज़ों का निर्माता है, सभी जीवित प्राणियों का प्रदाता है, सभी ज़रूरतमंदों को वरदान देने वाला है, दोनों दुनियाओं में दयालु है। हमारे गुरु मुहम्मद और जन्नत उसकी व्यापक

दया के कार्य हैं। वह सभी चीज़ों का स्वामी और पालनहार है, जो सभी चीज़ों का पालन-पोषण, प्रशिक्षण और रखरखाव करता है।

• वह सभी चीज़ों का निर्माता है, जिसने इस दुनिया को व्यवस्थित किया है और सभी चीज़ों को नियंत्रित करता है।

• वह मानवीय समझ से बहुत ऊपर है, तथा अयोग्यता और दोष से पूर्णतः मुक्त है।

• वह सभी चीज़ों से अतुलनीय रूप से महान है, क्योंकि वह सबसे महान, सर्वोच्च, सबसे सुंदर, स्वयं के कारण सर्वश्रेष्ठ तथा स्वयं में सबसे भव्य और सबसे राजसी है।

प्रकटीकरण में रैंक अल्लाहु अकबर [ईश्वर सबसे महान है]*

पहला रैंक

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

> कह दो, "सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने कभी कोई पुत्र नहीं बनाया और न राज्य में उसका कोई साझीदार है। और न उसे निर्बलता और अपमान के कारण किसी संरक्षक की आवश्यकता है। उसकी महिमा का गुणगान करो।" (18:111)

हम विश्वास करते हैं और आपके आदेश पर हैं। ईश्वर ही सर्वोपरि है। महानतम, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान, क्योंकि वह निर्माता है जिसने अपनी शक्ति से मानवता और ब्रह्मांड को बनाया, और अपनी नियति की "कलम" से मानवता और ब्रह्मांड को अंकित किया। सूक्ष्म जगत (मानवता) की तरह, यह स्थूल जगत (ब्रह्मांड) भी उसकी शक्ति द्वारा बनाया गया है, जो उसकी नियति द्वारा "लिखित" है। उसने इसे एक "मस्जिद" बनाया है, जबकि इसमें मनुष्यों को उपासक बनाया है। उसने पहले को निवास के रूप में स्थापित किया है, और दूसरे को उसमें रहने वाले सेवक के रूप में।

---

* प्रकाश के बीजारोपण से / चौथा ग्रंथ / चौथा अध्याय / दूसरा खंड

ब्रह्मांड में उनकी कला एक रूप में प्रकट हुई है

पुस्तक, जबकि मानवता का उनका रंग भाषण के रूप में विकसित हुआ है। ब्रह्मांड में उनकी शक्ति उनकी महिमा को प्रदर्शित करती है, जबकि मानवता के प्रति उनकी दया उनके प्रावधान को व्यवस्थित करती है। ब्रह्मांड में उनकी महिमा इस बात की गवाही देती है कि वह एक है, जबकि मानवता के लिए उनका प्रावधान यह घोषणा करता है कि वह एकल है। ब्रह्मांड पर उनकी मुहर, पूरे ब्रह्मांड पर और उसके भागों पर, कभी न खत्म होने वाली गति में स्पष्ट शांति में खुद को दिखाती है, जबकि मानवता पर उनकी मुहर प्रत्येक भाग के साथ-साथ पूरे मानव शरीर पर भी है।

उनके कामों को देखिए, जो दृढ़ और सुव्यवस्थित हैं। पूर्ण बहुतायत के बावजूद पूर्ण व्यवस्था है, पूर्ण गति के बावजूद पूर्ण माप और संतुलन है, पूर्ण सुविधा के बावजूद पूर्ण दृढ़ता है, पूर्ण विविधता के बावजूद कला की पूर्ण सुंदरता है, पूर्ण दूरी के बावजूद पूर्ण सामंजस्य और सहसंबंध है, पूर्ण संयोजन के बावजूद पूर्ण भेद है, और अनंत अर्थव्यवस्था के बावजूद पूर्ण मूल्य और महत्व है। अस्तित्व का यह स्पष्ट गुण एक समझदार व्यक्ति के लिए गवाही देता है, और जो व्यक्ति इनकार करता है उसे यह मानने के लिए मजबूर करता है कि अस्तित्व एक परम शक्तिशाली, पूर्ण रूप से सर्वज्ञ का है।

अस्तित्व को एक दिव्य सत्ता के द्वारा पूर्णतः आसानी से समझाया जा सकता है। यदि आप प्रयास करें तो

इसे विभिन्न स्रोतों से जोड़कर समझाएँ, तो आपको दुर्गम बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। यदि आप इसे एक दिव्य सत्ता से जोड़ते हैं, तो पूरे ब्रह्मांड को बनाना मधुमक्खी की तरह आसान होगा, और मधुमक्खी को बनाना फल की तरह आसान होगा। इसके विपरीत, यदि आप इसे कई स्रोतों से जोड़ते हैं, तो मधुमक्खी को बनाना ब्रह्मांड को बनाने जितना ही मुश्किल होगा, और फल को बनाना ब्रह्मांड में सभी पेड़ों को बनाने जितना ही मुश्किल होगा।

ऐसा इसलिए है क्योंकि एक ही प्राणी, एक ही चाल से, एक प्रभाव पैदा कर सकता है और पूरे प्राणी से निपट सकता है। यदि वह प्रभाव या उपचार कई प्राणियों से अपेक्षित है, तो यह, यदि बिल्कुल भी, केवल अत्यधिक कठिनाई से और कई विवादों के बाद प्राप्त होगा। कौन सा आसान या अधिक कठिन है: एक कमांडर या सैनिकों द्वारा सेना का प्रबंधन करना, एक वास्तुकार या पत्थरों द्वारा भवन का निर्माण करना, ग्रहों को एक ही सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना या इसके विपरीत?

जब अस्तित्व को एक दिव्य ईश्वर के अधीन माना जाता है,

अस्तित्व और उस बीइंग के बीच का संबंध एक असीम शक्ति की तरह हो जाता है, और कारणों की शक्ति एक जैसी नहीं होनी चाहिए। साथ ही, उत्पन्न होने वाला प्रभाव उस बीइंग के अनुपात में बहुत बड़ा हो जाता है, जिसके लिए उसे जिम्मेदार ठहराया जाता है। अन्यथा प्रत्येक कारण को इतना असीम रूप से शक्तिशाली होना होगा कि वह

अस्तित्व का निर्माण करें, और उत्पन्न प्रभाव केवल उसके स्वयं के आकार के समानुपाती होगा।

जब सभी चीज़ों को एक ईश्वरीय सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उन्हें पूर्ण गैर-अस्तित्व से निर्मित होने की आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि सृजन का अर्थ है उन चीज़ों को बाहरी, भौतिक अस्तित्व देना जो पहले से ही ईश्वरीय ज्ञान में मौजूद हैं। यह दर्पण में प्रतिबिंबित रूप को विकसित करने, अपने मन में अर्थ को शब्दों में डालने या अदृश्य स्याही में लिखे अक्षरों को दृश्यमान बनाने के लिए किसी पदार्थ को रगड़ने जैसा है। हालाँकि, अगर चीज़ों को खुद या उनके कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उन्हें पूर्ण गैर-अस्तित्व से निर्मित होना पड़ता है। यह असंभव है।

जिस सहजता से एक ईश्वरीय सत्ता यह सब करती है, उससे वस्तुओं का अस्तित्व उतना ही आसान हो जाता है जितना कि पूर्णतः आवश्यक है; बाद में कठिनाई माप से परे है। एक जीवित प्राणी के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि उसे बनाने वाले कण, जो मिट्टी, पानी और हवा में फैले हुए हैं, एक साथ आएं। इसलिए प्रत्येक कण या परमाणु में सार्वभौमिक ज्ञान और पूर्ण इच्छाशक्ति होनी चाहिए। ऐसा ज्ञान और इच्छाशक्ति वाली कोई भी चीज स्वतंत्र होगी और उसे किसी भागीदार की आवश्यकता नहीं होगी। ब्रह्मांड में कहीं भी ऐसी चीजों और भागीदारों का कोई संकेत नहीं मिला है। स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने के लिए एक पूर्ण, अनंत शक्ति की आवश्यकता होती है जिसका कोई भागीदार न हो। अन्य-

बुद्धिमानी से, इस शक्ति को एक सीमित शक्ति द्वारा सीमित करना होगा, जो अकल्पनीय है। एक अनंत शक्ति को भागीदारों की आवश्यकता नहीं होती है और उन्हें स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है, भले ही वे मौजूद हों (वे नहीं हैं)।

इस शक्ति का कोई भागीदार, सहायक या मंत्री नहीं है। भौतिक कारण शाश्वत शक्ति के संचालन के सामने केवल एक पतला पर्दा हैं, और वस्तुओं के अस्तित्व में उनका कोई रचनात्मक प्रभाव नहीं है। मनुष्य, जो सबसे महान कारण है और इच्छाशक्ति से लैस है, स्वतंत्र इच्छा के माध्यम से किए गए अपने कार्यों में केवल एक बहुत ही छोटी भूमिका निभाता है। यदि हमारी स्वतंत्र इच्छा के बावजूद, हमारे पास खुद पर पूर्ण नियंत्रण नहीं है, तो जानवर, पौधे और निर्जीव वस्तुएं [और जीवन-रहित, अंधे और बहरे कानून जिनका केवल नाममात्र का अस्तित्व है] चीजों को बनाने और नियंत्रित करने में स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता के साथ कैसे भागीदार हो सकते हैं?

स्पष्टतः, वह “लिफाफा” जिसमें प्रभु अपने उपहार रखता है, वह “रूमाल” जिसमें वह अपनी भेंटें लपेटता है, या वह “सैनिक” जिसके द्वारा वह अपनी कृपा भेजता है, वे उसके राज्य में उसके साझेदार नहीं हो सकते।

प्रकृति और कारण, जो उन "सैनिकों" के समान हैं जिनके माध्यम से परम प्रभु हमें अपना उपहार भेजते हैं, लिफाफे या संदूक जिनमें वे हमें दिए जाने वाले प्रसाद को संग्रहित करते हैं, रूमाल जिसमें वे अपने उपहार लपेटते हैं

हमारे लिए, हम उसके साथ साझेदार नहीं हो सकते या उसकी आज्ञाओं को क्रियान्वित करने में रचनात्मक प्रभाव का साधन नहीं बन सकते।

दूसरा रैंक

ईश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान है। वह सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, रचयिता, सर्वज्ञ, सर्वदयालु, सर्वकरुणामय है।

सभी सांसारिक प्राणी और स्वर्गीय वस्तुएँ एक सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता की शक्ति के चमत्कार हैं। पृथ्वी के बगीचे में फैले बहुरंगी और सजे हुए पौधे और सजे हुए जानवरों की असंख्य प्रजातियाँ एक सर्वज्ञ निर्माता की कला के चमत्कार हैं। इसके मुस्कुराते हुए फूल और सजे हुए फल एक सर्व-दयालु, सर्व-दयालु व्यक्ति की दया के उपहार हैं।

हर चीज़ यह घोषणा करती है कि उनका रचयिता, निर्माता और उपहार देने वाला सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, सब कुछ जानता है, और दया और ज्ञान में सभी चीज़ों को शामिल करता है। उसकी शक्ति के संबंध में, बिना किसी अपवाद के हर चीज़ बराबर है। सभी भूतकाल की घटनाएँ एक सर्वज्ञ निर्माता की कला के चमत्कार हैं, और यह गवाही देते हैं कि वह निर्माता सभी भविष्य की आकस्मिकताओं पर शक्तिशाली है और वह भविष्य में जो चाहे कर सकता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ निर्माता, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

उसकी जय हो जिसने पृथ्वी के बगीचे को अपनी कला का प्रदर्शन, अपनी सृजनात्मकता के उत्पादों का एकत्रीकरण स्थल, अपनी शक्ति और बुद्धि का प्रकटीकरण, अपनी दया के पुष्पित होने का उद्यान, स्वर्ग के लिए बोई जाने वाली भूमि और ऐसा स्थान बनाया है जहां प्राणी निश्चित मापदण्डों के अनुसार निरंतर प्रवाह में आते और जाते हैं।

अलंकृत पशु, सजे-धजे पक्षी, फलदार वृक्ष, फूलदार पौधे - ये सब उसके ज्ञान के चमत्कार हैं, उसकी कला के चमत्कार हैं, उसकी उदारता के उपहार हैं, और उसकी कृपा के प्रमाण हैं। फल देने वाले मुस्कुराते फूल, भोर में चहचहाते पक्षी, फूलों पर बरसती बारिश की बूंदें, अपने शिशु के प्रति मां की करुणा -

ये सभी एक सर्वप्रेमी द्वारा स्वयं को ज्ञात कराने, एक अत्यन्त दयालु द्वारा स्वयं को प्रेम करने, एक अत्यन्त दयावान की दया की छाप, तथा एक अत्यन्त दयालु द्वारा जिन्न, मनुष्य, आत्मिक प्राणियों, फ़रिश्तों और पशुओं पर दया करने के उदाहरण हैं।

बीज, फल, अनाज और फूल बुद्धि के चमत्कार, कला के चमत्कार, दया के उपहार, [ईश्वरीय] एकता के प्रमाण और परलोक में उसकी उदारता के साक्षी हैं। वे घोषणा करते हैं कि उनका रचयिता शक्तिशाली है और सब कुछ जानता है, और वह दया, ज्ञान, रचनात्मकता, पोषण, निर्माण और निर्माण में सभी चीजों को समाहित करता है।

सृजन, व्यवस्था, रखरखाव, निर्माण और रूपांकन के उनके गुणों के संबंध में, सूर्य एक बीज की तरह है, एक तारा एक फूल की तरह है, और पृथ्वी एक अनाज की तरह है। बीज और फल बहुलता के क्षेत्र में [दिव्य] एकता को दर्शाते हैं, और नियति के संकेत और शक्ति के संकेत हैं। बहुलता (ब्रह्मांड और इसकी सामग्री) का स्रोत एकता का क्षेत्र है। बहुलता उत्पत्ति और रूपांकन में निर्माता की एकता की गवाही देती है, और एकता में समाप्त होती है जो सृजन, पोषण और रखरखाव में निर्माता की बुद्धि को इंगित करती है।

जैसे सार्वभौमिक दृष्टिकोण सभी विवरणों को शामिल करता है और उन पर विचार करता है, वैसे ही बुद्धि प्रकट करती है कि सभी चीजों का निर्माता विशेष पर विचार करता है। यदि विशेष एक फल है, तो जाहिर है कि यह वह कारण है जिसके लिए पेड़ बनाया गया था। हम ब्रह्मांड के फल हैं, सृष्टिकर्ता का सबसे स्पष्ट उद्देश्य [ब्रह्मांड का निर्माण करना]। हृदय एक बीज या नाभिक [व्यक्ति का] जैसा है, और सृष्टि के निर्माता का सबसे चमकीला दर्पण है। इस प्रकार हम ब्रह्मांड की धुरी हैं जिस पर सृष्टि का चक्र घूमता है, और जिसके लिए ब्रह्मांड लगातार नष्ट और परिवर्तित, रूपांतरित और नवीनीकृत होता रहता है।

ईश्वर सबसे महान है: हे महान! हे ईश्वर, आप ही वह हैं जिनकी महानता, महानता और महिमा को बुद्धि द्वारा नहीं समझा जा सकता। सभी चीजें एक स्वर में घोषणा करती हैं: उनके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, निरंतर खोजते रहो: हे सत्य, और सदा कहते रहो: हे जीवित!

तीसरा रैंक

ईश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान है। वह सर्वशक्तिमान, सर्व-निर्णयकर्ता, सर्वज्ञ, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-निर्माणकर्ता, सर्व-उदार, सर्व-सूक्ष्म और कृपालु, सर्व-सजाने वाला, सर्व-प्रेमी, स्वयं को ज्ञात कराने वाला, सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय, सर्व-दयावान, सर्व-सुंदर, परम सौंदर्य और पूर्णता वाला, और शाश्वत निर्माता है। संसारों (संपूर्ण और भागों में) और सृष्टि (संपूर्ण और भागों में) के सत्य, और अस्तित्व और रखरखाव सभी एक निश्चित क्रम, निर्धारण, ज्ञान और बुद्धि के अनुसार उसके आदेश और नियति की "कलम" द्वारा खींची गई रेखाओं में निहित हैं, और एक निश्चित कला और फैशन के अनुसार उसके ज्ञान और बुद्धि के "कम्पास" द्वारा बनाए गए डिजाइनों में निहित हैं।

वे उसकी कला के "उज्ज्वल हाथ" द्वारा बनाए गए अलंकरणों से मिलकर बने हैं, अनुग्रह और उदारता के साथ गढ़ना, सजाना और सजाना; उसकी कृपा, उदारता, ज्ञात करना और दया और उदारता के साथ प्यार करने के फूलों में; और उसकी दया, उदारता, दया और स्नेह के बहते झरने के फलों में अनुग्रह और पूर्णता के साथ। वे एक चिरस्थायी सौंदर्य और शाश्वत पूर्णता के विकिरणों से भी मिलकर बने हैं, जैसा कि प्रमाणित है

इस तथ्य से कि दर्पण [उन सत्यों को प्रतिबिंबित करते हैं—
अर्थात्, सभी प्राणी नश्वर हैं और प्रतिबिंब गायब हो जाते हैं, जबकि सौंदर्य की अभिव्यक्तियाँ स्थायी हैं और अपने प्राप्तकर्ताओं की नश्वरता के बावजूद उपहार प्रदान करती रहती हैं।

दर्पणों की नश्वरता और प्राणियों का क्षय, अत्यधिक प्रचुरता में [दिव्य नामों, गुणों और कृत्यों] के निरंतर प्रकटीकरण के बावजूद, एक स्पष्ट संकेत और ठोस तर्क है कि प्रकट सौंदर्य और खिलती हुई पूर्णता उन लोगों की नहीं है जिन पर वे प्रकट होती हैं। यह अमूर्त सौंदर्य और हमेशा नवीनीकृत परोपकारिता, अनिवार्य रूप से विद्यमान और सर्व-प्रेममय, स्थायी एक की सबसे स्पष्ट व्याख्या और स्पष्ट प्रमाण है।

एक उत्तम कार्य एक उत्तम कार्य की ओर संकेत करता है। एक उत्तम कार्य एक उत्तम नाम और एक उत्तम कर्ता को इंगित करता है। एक उत्तम नाम एक उत्तम गुण को दर्शाता है। एक उत्तम गुण एक उत्तम कार्य या आवश्यक क्षमता को दर्शाता है।
एक उत्तम कार्य या आवश्यक क्षमता उस सत्ता की पूर्णता को उस सत्ता के लिए उपयुक्त चीज़ों के माध्यम से प्रदर्शित करती है, जो कि सबसे अधिक स्पष्ट सत्य है।

चौथा रैंक

उसकी महिमा की जय हो। ईश्वर सबसे महान है, क्योंकि वह न्याय का स्रोत है, सर्वशक्तिमान है।

न्याय करने वाला, सर्व-शासक और सर्व-बुद्धिमान। उसने अपनी इच्छा और बुद्धि के सिद्धांतों द्वारा 6 दिनों में इस ब्रह्मांड के वृक्ष की स्थापना की, अपने निर्णय और नियति की पूर्व-लिपि द्वारा इसे शाखाओं में विभाजित किया, अपने कार्य करने के तरीके के नियमों द्वारा इसे व्यवस्थित किया, अपनी कृपा और दया के उपदेशों द्वारा इसे सजाया, और अपने नामों और गुणों के प्रकटीकरण के माध्यम से इसे प्रकाशित किया। उसका

सृष्टि की सुव्यवस्था और संतुलन; उसके प्राणियों की सजावट; उनके बीच समानता, सही अनुपात, पारस्परिक सहायता और जवाब; तथा सभी चीजों में दृढ़, सचेतन कलात्मकता, जिसे नियति ने प्रत्येक के लिए, उसकी क्षमता के अनुसार निर्धारित किया है, इस बात को प्रमाणित करती है।

सृष्टि की व्यवस्था में एक व्यापक, सर्वसमावेशी बुद्धिमत्ता है; प्रत्येक वस्तु को आवश्यक भागों और अंगों से सुसज्जित करने, साथ ही उसे सुन्दर और सुसंतुलित बनाने में एक पूर्ण अनुग्रह है; प्रत्येक प्राणी की आवश्यकताओं को पूरा करने में एक सर्वव्यापी दया है; प्रत्येक प्राणी द्वारा सृष्टि में इन सभी गुणों के पालन-पोषण और पालन-पोषण में एक सर्वसमावेशी प्रावधान है और प्रत्येक जीवित वस्तु या प्राणी को प्रदान किया गया जीवन उसे सृष्टिकर्ता की अभिव्यक्तियों का प्रदर्शन बनाता है; और कुछ उद्देश्यों के लिए उसे प्रदान की गई सुन्दरता यह दर्शाती है कि सृष्टिकर्ता एक है।

किसी प्रजाति के सदस्य मर जाते हैं लेकिन प्रजाति बनी रहती है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने रचयिता के प्रति सहज प्रेम महसूस करता है, जिसकी वह पूजा करता है,

और उसके प्रति आकर्षण। इसका अस्तित्व में आना, इसके शारीरिक अंगों का निर्माण और जीवन, अद्भुत हैं। सृष्टि में ऐसे सभी गुण यह भी दर्शाते हैं कि , और उत्तम कार्य-

निर्माता और निर्माता

प्रभु एक है.

पौधों और जानवरों का पालन-पोषण और पालन-पोषण किया जाता है, और वे बुद्धिमानी से और कई उत्कृष्ट उद्देश्यों के लिए उत्पादन करते हैं। पृथ्वी पर होने वाले परिवर्तनों में एक परिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण क्रम है, और प्रत्येक चीज़ में अद्भुत, परिपूर्ण कलात्मकता और सुंदरता है, भले ही वह एक साथ अस्तित्व में आई हो। यह सब दर्शाता है

कि सृष्टिकर्ता और शासक एक है।

ब्रह्मांड में असंख्य जीवित प्राणियों को भोजन की आवश्यकता होती है। सृष्टि बहुत विविधतापूर्ण है, और इसलिए सृष्टि के प्रत्येक भाग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत विविधता की आवश्यकता होती है। कोई भी प्राणी अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। यह देखते हुए कि एक अंगूर की कीमत ब्रह्मांड के लगभग बराबर है, क्योंकि इसे पैदा करने के लिए सभी तत्वों (विशेष रूप से सूर्य, मिट्टी, पानी और बेल) के सहयोग की आवश्यकता होती है, यह स्पष्ट है कि कोई भी प्राणी अपनी एक भी आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता है।

लेकिन हर प्राणी की ज़रूरतें अप्रत्याशित स्रोतों से समय पर पूरी हो जाती हैं। यह सार्वभौमिक, सटीक भविष्यवाणी दर्शाती है कि सृष्टिकर्ता और प्रदाता एक ही है।

प्रत्येक प्राणी मूलतः कमजोर और असहाय है।

इसका अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है

शक्ति और धन का नाम सृष्टिकर्ता से है। अपनी कमजोरी और लाचारी को स्वीकार करने पर ईश्वरीय सहायता मिलती है। इसलिए उसकी शक्ति उसकी कमजोरी में निहित है, और उसकी शक्ति उसकी लाचारी से आती है। जड़ पदार्थ और पदार्थ जीवन और विवेक से सुसज्जित और विकीर्ण होते हैं। वे अपने जीवन-इतिहास के दौरान अनेक परिवर्तनों से गुजरते हैं। उनकी आवश्यकता, उनकी जन्मजात क्षमता, ईश्वर द्वारा स्वीकार की जाने वाली प्रार्थना है। यह सब दर्शाता है कि सृष्टिकर्ता एक है, अपरिवर्तनीय है और प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाला है।

एक सचेतन, जीवित प्राणी अपनी प्रार्थनाओं और पूजा-अर्चना के माध्यम से ईश्वर के निकट आता है। निष्काम, नियमित पूजा और प्रार्थनाएँ व्यक्ति को गहरी अंतर्दृष्टि और "हृदय की आँख" प्रदान करती हैं, जिसके द्वारा वह चीज़ों और घटनाओं के अर्थ और सृष्टि में ईश्वरीय उद्देश्यों को समझ सकता है, और सृष्टि में और ईश्वरत्व से संबंधित कुछ छिपे हुए सत्यों को उजागर कर सकता है। ईश्वर की नियमित पूजा, प्रार्थना और स्मरण व्यक्ति को शांति और स्थिरता प्रदान करते हैं और उसे एक परिपूर्ण मनुष्य, सृष्टि का एक सर्वोत्तम उदाहरण बनाते हैं - सृष्टि के ऐसे सभी गुण और कई अन्य अवर्णित गुण इस बात के साक्षी हैं कि यह ब्रह्मांड एक ही सर्वज्ञ व्यक्ति द्वारा प्रबंधित है; एक ही, सर्व-दयालु ईश्वर, एक ही सबका चाहने वाला, एक ही स्वामी की सेवा करता है; और एक ही शासक के अधीन है। साथ ही, सृष्टि की उत्पत्ति भी एक ही सर्वज्ञ व्यक्ति द्वारा की गई है; एक ही सर्व-दयालु ईश्वर, एक ही सबका चाहने वाला, एक ही स्वामी की सेवा करता है; और एक ही शासक के अधीन है।

वह एक ही शक्ति है, जिसकी एकता की छाप उसके प्रत्येक “संदेश” पर, उसके प्रत्येक “पृष्ठ” पर दिखाई देती है, और वह भी उन संदेशों और पृष्ठों की संख्या जितनी ही प्रचुरता से।

हर फूल और फल, पौधा और पेड़, जानवर और चट्टान, रेत का कण और पत्थर एक स्पष्ट मुहर है जो यह दर्शाता है कि जिसने इसे रखा है वह इस स्थान, भूमि और समुद्र और उनकी सभी सामग्री का "लेखक" है। वह आकाश के पृष्ठ पर सूर्य और चंद्रमा का डिज़ाइनर है। उस डिज़ाइनर की महिमा का गुणगान हो। वह सबसे महान ईश्वर है।

इसलिए संसार एक स्वर में गाता है: उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं।

पांचवां रैंक

ईश्वर सबसे महान है। वह सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान, निर्माता और सर्वदर्शी है। सभी आकाशीय पिंड और मोती जैसे तारे उसकी दिव्यता और भव्यता के प्रमाण हैं, उसकी प्रभुता और शक्ति के साक्षी हैं। वे उसके प्रभु के राज्य की महिमा, उसके शासन और बुद्धि की विशालता और उसकी शक्ति की भव्यता और महानता की पुष्टि और घोषणा करते हैं।

क्या वे अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और सजाया है? (50:6) आकाश की ओर देखो और उसमें शान्त, उद्देश्यपूर्ण गति को देखो।

यह ब्रह्मांड की रचना और सुसंतुलित कला के साथ एक शानदार चमकती मुस्कान है। इसका "दीपक" ऋतुओं के परिवर्तन के लिए चमकता है, इसका "लालटेन" दुनिया की रोशनी के लिए चमकता है, इसके सितारे दुनिया की सजावट के लिए चमकते हैं। यह सब ब्रह्मांड के संगठन और रखरखाव में असीम संप्रभुता की घोषणा करता है।

वह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता सभी चीज़ों को जानता है और उसकी इच्छा इतनी व्यापक है कि जो कुछ भी वह चाहता है वह होता है और जो कुछ भी वह नहीं चाहता है वह नहीं होता है। वह अपनी दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक एक निरपेक्ष, सर्वव्यापी शक्ति द्वारा सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है। जिस तरह सूर्य का प्रकाश और गर्मी के बिना अस्तित्व में रहना अकल्पनीय है, उसी तरह स्वर्ग के ईश्वर और सृष्टिकर्ता का सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण शक्ति के बिना अस्तित्व में रहना अकल्पनीय है। वह अपनी दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक एक सर्वव्यापी ज्ञान द्वारा सभी चीज़ों को जानता है। सभी चीज़ों के साथ इसके संबंध और इसकी भेदक क्षमता और व्यापकता के कारण, इस ज्ञान से कोई भी चीज़ बच नहीं सकती है।

सृष्टि में जो कुछ भी देखा जाता है (जैसे, सुव्यवस्था, संतुलन और सामंजस्य; सर्व-समावेशी ज्ञान, पूर्ण पक्षपात, अच्छी तरह से स्थापित उपाय, सुव्यवस्थित व्यवस्था, फलदायी आदेश, नियुक्त घंटे, नियमित प्रावधान और मनभावन देखभाल [सभी चीजों को दी गई];

और पूर्ण, विशिष्ट माप, क्रम और दृढ़ता, और उनकी पूर्ण सहजता) अदृश्य और सभी चीज़ों के ज्ञाता के व्यापक ज्ञान की गवाही देती है। आयत: क्या वह जो पैदा करता है उसे पता नहीं होना चाहिए? वह अत्यंत सूक्ष्म, सर्वज्ञ है

(67:14), बताते हैं कि किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए उसे जानना ज़रूरी है। अगर किसी के काम में कला की खूबसूरती एक छोटे से तारे की चमक की हद तक उसकी चेतना की ओर इशारा करती है, तो मानवता की रचना दोपहर के समय सूरज की चमक की हद तक उसके निर्माता के ज्ञान को इंगित करती है।

चूँकि वह सब कुछ जानता है, इसलिए उसकी इच्छा सब कुछ को समाहित करती है। उसकी इच्छा के बिना कुछ भी घटित नहीं होता।
शक्ति प्रभाव उत्पन्न करती है, ज्ञान भेद करता है, और इच्छा शक्ति विभाजित करती है और व्यक्ति बनाती है। इसी तरह से चीजें अस्तित्व में आती हैं। सर्वशक्तिमान की इच्छा के जितने लक्षण, गुण और चीजें हैं, उतने ही साक्षी हैं।

प्रत्येक वस्तु को उसके लिए असंख्य विकल्पों और संभावनाओं में से उद्देश्यपूर्ण ढंग से चुने गए विशिष्ट चरित्र और विशेषताओं के साथ बनाना और गढ़ना; प्रत्येक को अत्यंत नाजुक ढंग से और असीम रूप से विविध प्रवाह में अत्यंत संवेदनशील उपायों के साथ बनाना; सरल, निर्जीव तत्वों से विविध, सुव्यवस्थित जीवों का निर्माण करना (उदाहरण के लिए, अपनी विविधता के साथ मानवता का निर्माण करना)।

एक शुक्राणु [और एक अंडे] से इंद्रियाँ और अन्य सभी प्रणालियाँ और शारीरिक अंग, एक अंडे से एक पक्षी और उसकी शारीरिक प्रणालियाँ, एक बीज से एक पेड़ और उसके सभी भाग) यह देखें कि सर्वशक्तिमान की इच्छा और पसंद से हर चीज़ को उसका व्यक्तिगत चरित्र और गुण दिए गए हैं।

उसकी महिमा हो।

किसी प्रजाति के सदस्यों के बीच शारीरिक संरचनाओं और बुनियादी प्रणालियों में सामंजस्य यह दर्शाता है कि उनका निर्माता एक और एकल है। हालाँकि, यह तथ्य कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है, यह दर्शाता है कि वह एक और एकल निर्माता जो चाहता है वही करता है और जैसा चाहता है वैसा ही न्याय करता है। महामहिम की महिमा हो।

चूँकि सर्वज्ञ और सर्व-इच्छुक सृष्टिकर्ता के पास सर्वव्यापी ज्ञान और सर्व-समावेशी इच्छा है, इसलिए उसके पास एक पूर्ण शक्ति है जो उसके दिव्य अस्तित्व से निकलती है और उसके लिए आवश्यक है। उस शक्ति का कोई विपरीत नहीं है, क्योंकि इसके लिए दो विपरीतों के बीच सहमति या संयोजन की आवश्यकता होगी, जो सार्वभौमिक सहमति से अकल्पनीय है। उस शक्ति में कोई ग्रेड नहीं हो सकता, क्योंकि उसके संबंध में सब कुछ, बिना किसी अपवाद के, समान है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शक्ति भौतिक नहीं है।

अस्तित्व के अभौतिक आयाम की पारदर्शिता जिसके साथ यह व्यवहार करता है, वस्तुओं के बीच अंतरसंबंध, सृष्टि में सटीक संतुलन, अस्तित्व का आदर्श क्रम और अस्तित्व की सर्वोच्च आज्ञाकारिता

यह इस बात की गवाही देता है। सृष्टि में पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य, इसमें देखी गई पूर्ण माप और विशिष्टता, सृष्टि की गति और सहजता और सृजित की अनंत बहुलता, वैयक्तिकता और विविधता के बावजूद, इस तथ्य की गवाही भी देती है।

जिसके पास वह शक्ति है, वह बिना किसी अपवाद के, किसी भी चीज़ की रचना बड़ी आसानी से कर सकता है, क्योंकि वह एक और एकल है, और उसके अस्तित्व की अनिवार्यता और निर्मित से पूरी तरह अलग होने के कारण (वह अप्रतिबंधित, अविभाज्य और स्थान से असंबद्ध है)। कोई भी चीज़ उसे बाधित नहीं करती; बल्कि, जो कुछ भी बाधा प्रतीत होती है, वह आसानी का साधन बन जाती है, हालाँकि उसे अपने आदेशों का पालन करने और उन्हें क्रियान्वित करने में किसी की मदद की आवश्यकता नहीं होती।

वह ऐसा कर सकता है क्योंकि वह जो कुछ भी बनाता है, बिना किसी अपवाद के, उसमें कला की वही गुणवत्ता होती है जो बाकी सभी चीज़ों में देखी जाती है। जो बाद वाले को बनाता है, वह पहले वाले को भी बनाता है। जो बीज बनाता है, जो उसके वृक्ष की एक छोटी-सी प्रतिलिपि है, जिसमें सृष्टिकर्ता ने अपने ज्ञान के सिद्धांतों द्वारा वृक्ष को शामिल किया है, निस्संदेह वृक्ष का सृष्टिकर्ता होना चाहिए। जो शक्ति विशेषों को अस्तित्व में लाती है, उसके लिए सार्वभौमिकों को बनाना कठिन नहीं है।

जिस प्रकार ईथर कणों के साथ एक परमाणु में अंकित "ज्ञान की कुरान" की प्रतिलिपि समान है

सुंदरता और कला की वह गुणवत्ता जो “शानदार कुरान” की प्रति में पाई जाती है, जो आकाश के पन्नों पर सितारों और सूरज की स्याही से लिखी गई है, इसलिए एक मधुमक्खी और एक चींटी को बनाने में खजूर के पेड़ से कम कौशल और कलात्मकता की आवश्यकता नहीं होती है। गुलाब में निहित कला मोती जैसे सितारे में निहित कला से कम नहीं है।

जबकि चीजों को बनाने की अत्यंत और पूर्ण सहजता गुमराह लोगों को सृजन को आत्म-निर्माण के साथ भ्रमित करने का कारण बनती है, जिसके लिए असंभवताओं और अंधविश्वासों को स्वीकार करना पड़ता है जो उचित तर्क और निर्णय का खंडन करते हैं, यह सत्य के लोगों को इस निश्चितता की ओर ले जाता है कि ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के संबंध में ग्रह और सूक्ष्म कण समान हैं। महामहिम की महिमा हो और उनके नाम की महिमा हो। उनके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

छठा रैंक

ईश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान है। वह सर्व-न्यायप्रिय, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, एक, एकल और शाश्वत संप्रभु है। सभी दुनियाएँ उसके आदेश और संतुलन, व्यवस्था और माप, न्याय और बुद्धि, और ज्ञान और शक्ति के "हाथों" के अधीन हैं। वे उसकी एकता और एकता को दर्शाते हैं। उसके आदेश और संतुलन या उसकी व्यवस्था और माप से कुछ भी बाहर नहीं है, जो दो "अध्याय" हैं

मैनिफ़ेस्ट रिकॉर्ड और मैनिफ़ेस्ट बुक,10

10 प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक की व्याख्या तीसवें वचन में की गई है: प्रकट अभिलेख और प्रकट पुस्तक को कुरान में कई स्थानों पर दोहराया गया है। कुछ व्याख्याकार मानते हैं कि वाक्यांश अर्थ में समान हैं; अन्य कहते हैं कि उनके अर्थ और अर्थ अलग-अलग हैं। हालाँकि उनके वास्तविक अर्थ और विषय-वस्तु की व्याख्याएँ अलग-अलग हैं, लेकिन वे इस बात पर सहमत हैं कि दोनों ईश्वरीय ज्ञान का वर्णन करते हैं। हालाँकि, कुरान के ज्ञानोदय के माध्यम से, मुझे यह विश्वास है:

प्रकट अभिलेख, जो दृश्यमान, भौतिक दुनिया की तुलना में अदृश्य दुनिया को अधिक देखता है, ईश्वरीय ज्ञान और आज्ञाओं के एक पहलू को व्यक्त करता है। वर्तमान की तुलना में अतीत और भविष्य को अधिक देखते हुए, यह ईश्वरीय नियति की एक पुस्तक है जिसमें चीजों के मूल, जड़ें और बीज शामिल हैं, न कि उनके दृश्यमान अस्तित्व में उनके फलते-फूलते रूप।

वे मूल, स्रोत और जड़ें जिनसे सर्वशक्तिमान ईश्वर चीज़ों को पूर्ण क्रम और कला के साथ आकार देते हैं, यह दर्शाते हैं कि वे दिव्य ज्ञान में निहित सिद्धांतों की एक पुस्तक के अनुसार व्यवस्थित हैं। बीज और फल, जिनमें उन प्राणियों के अनुक्रमणिका और कार्यक्रम होते हैं जो बाद में अस्तित्व में आएंगे, दिव्य आज्ञाओं का एक लघु रजिस्टर बनाते हैं। उदाहरण के लिए, एक बीज को प्रोग्राम और इंडेक्स कहा जाता है जिसके अनुसार एक पूरा पेड़ बनाया जा सकता है। इसके अलावा, यह दिव्य सिद्धांतों का लघु अवतार है जो पेड़ को अस्तित्व में लाता है और जो इस प्रोग्राम और इंडेक्स को निर्धारित करता है। संक्षेप में, प्रकट रिकॉर्ड एक संपूर्ण रूप से सृष्टि के वृक्ष का एक इंडेक्स और प्रोग्राम है, जो अपनी शाखाओं को भूत, भविष्य और अदृश्य दुनिया में फैलाता है। इस अर्थ में, यह दिव्य नियति की एक पुस्तक है - छोटी या उसके सिद्धांतों का एक रजिस्टर। इन सिद्धांतों के निर्देशों और मांगों के माध्यम से, चीजों को अस्तित्व में लाने के लिए सूक्ष्म कणों या परमाणुओं का उपयोग और प्रबंधन किया जाता है।

जो बदले में ज्ञान और सर्वज्ञ और विवेकशील का आदेश, तथा सर्वशक्तिमान और सर्वशक्तिमान की शक्ति और इच्छा।

प्रकट पुस्तक अदृश्य दुनिया की अपेक्षा दृश्यमान, भौतिक दुनिया को अधिक देखती है, क्योंकि यह भूत और भविष्य की अपेक्षा वर्तमान को अधिक देखती है। यह ईश्वरीय ज्ञान और आज्ञाओं या सृष्टि के नियमों और सिद्धांतों के बजाय ईश्वरीय शक्ति और इच्छा को व्यक्त करती है। यदि प्रकट अभिलेख ईश्वरीय इच्छा की पुस्तक है, तो यह ईश्वरीय इच्छा को व्यक्त करती है।

छोटी सी, प्रकट पुस्तक ईश्वरीय शक्ति की पुस्तक है। हर चीज के सार और अस्तित्व, गुण और कार्यों में परिपूर्ण कला और व्यवस्था, यह प्रदर्शित करती है कि हर चीज को एक प्रभावी इच्छा के नियमों और एक पूर्ण शक्ति के सिद्धांतों के अनुसार अस्तित्व दिया गया है। साथ ही, इसे विशेष रूप से बनाया गया है और एक नियत माप और विशेष आकार दिया गया है। इसलिए, यह दर्शाता है कि ईश्वरीय शक्ति और इच्छा के पास कानूनों का एक सार्वभौमिक, व्यापक रजिस्टर है, एक महान पुस्तक है, जिसके अनुसार प्रत्येक इकाई के लिए एक विशेष रूप और पदार्थ निर्धारित किया जाता है।

यह आश्चर्य की बात है कि उपेक्षा, गुमराही और [भ्रष्ट] दर्शन के लोग, यद्यपि उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को महसूस किया है
सर्वोच्च संरक्षित या संरक्षित टैबलेट (लौहुन महफ़ूज) और दिव्य पुस्तक की अभिव्यक्तियों और प्रतिबिंबों को देखा

बुद्धि और इच्छा ने इसे "प्रकृति" नाम दिया है, और इस तरह इसे पूरी तरह से अर्थहीन बना दिया है। हालाँकि, वास्तविकता में, प्रकट अभिलेख (दिव्य नियति का आदेश और निर्देश) के निर्देशों के माध्यम से, दिव्य शक्ति कणों या परमाणुओं का उपयोग करके प्राणियों की श्रृंखला का निर्माण या प्रकट करती है, जिनमें से प्रत्येक कड़ी समय के रूपक पृष्ठ (मिटाव और पुष्टि की पट्टिका) पर उसका संकेत है। इसका मतलब है कि कणों या परमाणुओं को गति करने के लिए सेट किया जाता है ताकि प्राणियों को अदृश्य दुनिया से भौतिक, दृश्यमान दुनिया में स्थानांतरित किया जा सके; ज्ञान के (क्षेत्र) से शक्ति के (क्षेत्र) में। (ट्र.)

इस पुस्तक में व्यवस्था और संतुलन, उस अभिलेख के साथ मिलकर, यह प्रमाणित करते हैं कि सब कुछ दयालु के अधीन है, दया करने वाला आदेश देता है, कृपालु सजाता है, और शासक मापता है।

संक्षेप में: सृष्टि में दिव्य नामों "प्रथम" और "अंतिम" की अभिव्यक्तियाँ आरंभ और अंत, उत्पत्ति और परिणाम, भूत और भविष्य, आदेश और ज्ञान को संदर्भित करती हैं, और प्रकट अभिलेख की ओर संकेत करती हैं। सृष्टि के ईश्वरीय गुण से जुड़ी चीज़ों पर "बाहरी" और "आंतरिक" नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रकट पुस्तक की ओर संकेत करती हैं।

ब्रह्माण्ड एक विशाल वृक्ष के समान है, और प्रत्येक विश्व एक दूसरे से बहुत दूर है। इसमें एक वृक्ष की तरह है। ब्रह्मांड की रचना और वितरण

दुनिया और प्रजातियों के बारे में दृष्टि की तुलना एक पेड़ से की जा सकती है। एक पेड़ की एक उत्पत्ति (उसका बीज) होती है और एक संतान होती है जो उसकी मृत्यु के बाद भी अपना कार्य जारी रखती है (उसके फल में बीज)।

इसकी शुरुआत और अंत "प्रथम" और "अंतिम" को प्रकट करते हैं। अपनी संरचना और इसके उद्देश्यों के माध्यम से, मूल बीज पेड़ के निर्माण के लिए एक सूचकांक या कोड है। इस प्रकार यह "प्रथम" को प्रकट करता है। पेड़ के फलों में बीज "अंतिम" को प्रकट करते हैं।

बीज छोटे बक्से की तरह होते हैं जिनमें

पेन ऑफ डेस्टिनी का अंकित सूचकांक और कोड नए पेड़ों के निर्माण के लिए है जो बिल्कुल मूल पेड़ों से मिलते जुलते हैं

एक. एक पेड़ का बाहरी हिस्सा “बाहरी” नाम को प्रकट करता है। अपनी परिपूर्ण, सुव्यवस्थित संरचना, सजावट और अपने उद्देश्यों के माध्यम से, यह पेड़ के अनुरूप परिपूर्ण बुद्धि और अनुग्रह के साथ बनाई गई एक परिपूर्ण सुंदर पोशाक की तरह है। पेड़ का आंतरिक हिस्सा “आंतरिक” नाम को प्रकट करता है। अपने परिपूर्ण, अद्भुत संगठन और जिस तरह से इसे खिलाया जाता है, उसके माध्यम से, इसका आंतरिक हिस्सा एक असाधारण मशीन या कारखाने की तरह है जो परिपूर्ण क्रम और संतुलन में काम करता है।

पेड़ की शुरुआत एक अद्भुत कोड की तरह है, इसका अंत एक असाधारण सूचकांक है, और दोनों ही मैनिफेस्ट रिकॉर्ड की ओर इशारा करते हैं। इसका बाहरी भाग मैनिफेस्ट बुक की ओर इशारा करता है, ठीक वैसे ही जैसे मानव स्मृति सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका को इंगित करती है। सभी पेड़ों के मूल बीज और फल मैनिफेस्ट रिकॉर्ड को इंगित करते हैं, और उनके बाहरी और आंतरिक भाग मैनिफेस्ट बुक का प्रतीक हैं। किसी विशेष पेड़ की तुलना पृथ्वी के "पेड़" से करें, उसके अतीत और भविष्य के साथ, ब्रह्मांड के "पेड़" की शुरुआत और भविष्य के साथ, और किसी व्यक्ति के "पेड़" की उसके पूर्वजों और वंशजों के साथ।

सातवां रैंक

ईश्वर महानतम है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से महान है। वह निर्माता, खोलने वाला, सब कुछ करने वाला, सब कुछ जानने वाला, उपहार देने वाला, सबका वितरक है।

आशीर्वाद और शाश्वत "सूर्य।"11 सभी संसार और उनकी सामग्री उसकी रोशनी की छायाएँ, उसके कर्मों के कार्य, उसके नामों की अभिव्यक्ति की कढ़ाई के रंग, उसके भाग्य और आदेश की "कलम" की रेखाएँ और उसकी सुंदरता, महिमा और पूर्णता के गुणों को प्रकट करने वाले दर्पण हैं। यह सब शाश्वत साक्षी - सर्वशक्तिमान स्वयं - अपनी सभी पुस्तकों, पृष्ठों या स्क्रॉल के साथ; सृष्टि के संकेतों और कुरान की आयतों द्वारा; पृथ्वी द्वारा, जो अपनी अनिवार्य अभाव और आवश्यकता के बावजूद पूर्ण धन और संपदा के अपने प्रदर्शनों के साथ; और पैगंबरों, संतों और शुद्ध, प्रबुद्ध बुद्धि और प्रबुद्ध हृदय वाले विद्वानों, उनकी जांच, आध्यात्मिक खोजों और प्रार्थनाओं और उन आशीर्वादों द्वारा प्रमाणित है जिनसे उन्हें अनुग्रह प्राप्त होता है।

उपरोक्त सभी, अत्यंत निश्चितता के साथ, सृष्टि के संकेतों, कुरान की आयतों और आकाशीय पुस्तकों और पन्नों की गवाही को स्वीकार करते हैं, जिसमें अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की गवाही है। ये सभी गवाह इस बात पर सहमत हैं कि सभी प्राणी उसकी शक्ति के कार्य हैं, उसकी नियति के शिलालेख हैं, उसके नामों के दर्पण हैं और उसकी रोशनी की छवियाँ हैं।

[11] इन नामों का उपयोग करके ईश्वरीय कृत्यों और छापों को देखें
प्राणियों में से कोई भी इन नामों से पुकारे जाने वाले की ओर जा सकता है।

के बारे में गलत धारणाओं का खंडन अस्तित्व की उत्पत्ति*

हे मित्र, जान लो कि जो लोग कहते हैं: “चीजें अपने आप बनती हैं,” “कारणों ने इसे बनाया है,” या “प्रकृति को इसकी आवश्यकता है [ऐसा होना]” वे बहुत भ्रम पैदा करते हैं, क्योंकि ऐसे कथन झूठे हैं। तुम मौजूद हो।

तो, पहले कथन के अनुसार, आप स्वयं अपने ही प्राणी हैं। दूसरे कथन के अनुसार, [भौतिक] कारणों ने आपको जन्म दिया है। अंतिम कथन के अनुसार, कुछ अचेतन, बहरे और अंधे नियम या शक्तियाँ [जिन्हें प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है] या "प्रकृति" नामक बेजान चीज़ों को आपके अस्तित्व की आवश्यकता थी। लेकिन सच्चाई यह है कि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्राणी हैं।

जहाँ तक पहले कथन का सवाल है, चीज़ें अपने आप नहीं बन सकतीं, क्योंकि आपके शरीर को बनाने वाले प्रत्येक कण या परमाणु को आपके पूरे शरीर और पूरी सृष्टि को देखने के लिए एक आँख की ज़रूरत होगी, साथ ही चेतना [जीवन और अस्तित्व की सभी आवश्यकताओं के बारे में जागरूक होना] की भी ज़रूरत होगी। आपकी संपूर्ण रचना, आपके अंदर कला की पूर्णता, अस्तित्व के सभी कणों के लिए इसकी आवश्यकता है।

---

* प्रकाश के बीज-स्थान से / छठा ग्रंथ / दूसरा परिशिष्ट

एक दूसरे के साथ महत्वपूर्ण और ठोस संबंध में हैं
और सारी सृष्टि के साथ।

किसी किताब को छापने के लिए, प्रिंटिंग हाउस के पास उतने ही लौह अक्षर या कुंजियाँ होनी चाहिए जितनी उसे छापने के लिए आवश्यक हैं। यदि आपने खुद को बनाया है, तो आपके पास उतने ही साँचे होने चाहिए जितने आपके अंदर परमाणुओं की संख्या है, क्योंकि वे एक दूसरे के साथ सचेत संबंध और संचार में हैं।

आपकी रचना एकरूप है, जिसका अर्थ है कि सभी भाग एक दूसरे के साथ घनिष्ठ अंतर्संबंध में हैं। इसलिए, मेहराब या गुंबद बनाने वाले पत्थरों की तरह, आपके सभी परमाणु या निर्माण खंड एक दूसरे पर हावी होने चाहिए और एक दूसरे पर हावी होने चाहिए। उन्हें उस एक के नाम और गुणों की अभिव्यक्ति की तरह भी होना चाहिए जो किताबों के लिए लपेटे गए स्क्रॉल की तरह आकाश को लपेटता है - एक दूसरे के विपरीत और पूरक दोनों।

कारण स्वयं कुछ भी नहीं बना सकते।
उदाहरण के लिए, यदि चिकित्सा सामग्री वाली बोतलें शेल्फ से गिरकर फर्श पर मिल जाती हैं, तो क्या वांछित दवा बनाई जा सकती है? उसी सादृश्य का उपयोग करते हुए, क्या आप संयोग से या यादृच्छिक कारणों से बने हो सकते हैं? असंख्य बहरे, अंधे और अचेतन कारण एक साथ कैसे आ सकते हैं और कुछ ऐसा बना सकते हैं जो पूर्ण क्रम में हो? एक साथ आने से वे केवल बहरेपन और अंधेपन को बढ़ाते हैं। प्रत्येक मानव

अस्तित्व कला का एक आदर्श कार्य है [बुद्धिमान, सचेत, और अंतहीन और अत्यंत जटिल भावनाओं, इंद्रियों और संकायों से सुसज्जित, और अनंत आवश्यकता महसूस करना]। जो बहरा, अंधा और अचेतन है, वह किसी और चीज़ पर श्रवण, दृष्टि और चेतना कैसे प्रदान कर सकता है?

मान लीजिए कि असंख्य कारण एक साथ मिलकर सबसे व्यवस्थित तरीके से और सटीक माप में आपकी आँख में एक कोशिका बनाते हैं। तो, उसी मात्रा में प्रयास से, ब्रह्मांड के मूल भाग या तत्व, जिनमें विशाल खगोलीय पिंड शामिल हैं, आपकी हथेली में या आपकी प्रत्येक कोशिका में खुद को इकट्ठा करने में सक्षम होने चाहिए। क्यों?

क्योंकि अगर आप किसी घर में काम करते हैं, तो इसका मतलब है कि घर में आप हैं। ब्रह्मांड के सभी भाग और सामग्री मानवता से संबंधित हैं। इसलिए अगर कारणों ने आपको बनाया है, तो पूरा ब्रह्मांड आपके शरीर के हर हिस्से में काम करने में सक्षम होना चाहिए और आपकी एक कोशिका में समाहित होना चाहिए। यह सबसे अकल्पनीय कुतर्क है।

प्रकृति सृजन नहीं कर सकती क्योंकि यह अस्तित्व में रहने वाली चीज़ है, यह नाम उन लोगों द्वारा दिया गया है जो मामले के वास्तविक तथ्यों को नहीं जानते। हालाँकि, अपने वास्तविक अर्थ में, यह एक दिव्य कला है, सर्व-दयालु द्वारा बनाई गई एक पेंटिंग है।

"प्राकृतिक शक्तियां" केवल अभिव्यक्तियाँ हैं

सर्व दयालु, सर्वज्ञ, सर्वज्ञ की शक्ति,

सर्व-इच्छुक। “संयोग” केवल उन लोगों द्वारा प्रस्तुत एक गलत धारणा है जो एकल निर्माता से अनभिज्ञ हैं या उसे नकारते हैं। इस पुस्तक में शामिल मेरे कई ग्रंथों में, मैंने तर्क दिया है कि यह अद्भुत कला [जो प्रकृति कहे जाने वाले सार का गठन करती है] वास्तव में सर्वज्ञ, सर्व-दर्शी की शक्ति का कार्य है, जिसमें पूर्णता के सभी गुण हैं।

क्या कोई प्रतिबंधित, ठोस, निर्जीव वस्तु, जिसका अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव है (जिसका अर्थ है कि किसी को उसके अस्तित्व को प्राथमिकता देनी चाहिए और उसे बनाना चाहिए), ब्रह्मांड के वस्त्र को बुन सकती है? क्या एक मच्छर इन बेहतरीन ढंग से डिजाइन किए गए और सजे हुए वस्त्रों को बुनने में भाग ले सकता है, जिसमें वे शब्द सजे हुए हैं? आपके और सृष्टि के अस्तित्व के लिए एकमात्र व्याख्या यह है कि जो कुछ भी बनाया गया है वह एक शाश्वत निर्माता का प्राणी है, और वे सभी इस तथ्य की गवाही देते हैं।

अन्य गवाह भी हैं: कुरान और अन्य सभी अवतरित पुस्तकें; संतों और ईश्वर के अस्तित्व और एकता पर विश्वास करने वालों के लेखन; ब्रह्मांड में जो कुछ भी विद्यमान है और घटित होता है; सृष्टि का स्वामी और अन्य सभी पैगंबर, संत और फ़रिश्ते; पैगंबर मुहम्मद; मानवता और जिन्न अपनी सभी "प्राकृतिक" आवश्यकताओं के साथ; और ईश्वर - ये सभी गवाही देते हैं कि उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है (3:18)।

हे मित्र, जान लो कि चीजों, प्रकृति या कारणों को सृष्टि का श्रेय देने के झूठ को एक फलदार वृक्ष के उदाहरण से समझाया जा सकता है। यदि आप इस वृक्ष को ईश्वर, एक और एकल को श्रेय देते हैं, तो आप इसे इसके बीज और अंकुरण, सृजन और विकास के नियमों को देते हैं जो अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान सत्ता, एक और एकल से निकलते हैं, और जिस पर वह बीज निर्भर करता है। वृक्ष एक ही निर्माता से निकलने वाले नियमों पर निर्भर है क्योंकि उसके अंकुरण, विकास और जीवन को नियंत्रित करने वाले एकत्व से आने वाली सहजता के कारण।

उस एकमात्र

सृष्टिकर्ता के लिए उस बीज को असंख्य फल देने वाले एक बड़े नारियल के पेड़ के रूप में विकसित करना या केवल कुछ ही फलों वाले एक बहुत छोटे नारियल के पेड़ के रूप में विकसित करना उतना ही आसान है।

लेकिन अगर आप किसी पेड़ को उसके अपने, कारणों या प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, तो उसके हर फल, फूल, पत्ते, शाखा और टहनी को वही सब चाहिए जो पूरे पेड़ को चाहिए, क्योंकि हर हिस्सा पूरे पेड़ का प्रतीक है। इस प्रकार, पूरे पेड़ को जो चाहिए, वह हर हिस्से को चाहिए।

इन दो विकल्पों पर विचार करें। पहला,

पहला कार्य जो ईश्वर द्वारा पूर्ण सहजता से किया जाता है, सृष्टि को आवश्यक और अपरिहार्य बनाता है, जबकि दूसरा कार्य इतना अविश्वसनीय रूप से कठिन है कि वह किसी भी चीज़ की रचना को अकल्पनीय बना देता है।

संक्षेप में: यदि आप सृजन का श्रेय वस्तुओं को देते हैं, तो आपको यह स्वीकार करना होगा कि आपके शरीर की प्रत्येक कोशिका ब्रह्मांड को समाहित कर सकती है। यदि आप सृजन का श्रेय भौतिक कारणों को देते हैं, तो आपको यह पुष्टि करनी होगी कि प्रत्येक कोशिका एक कमरे की तरह है जिसमें ब्रह्मांड में संचालित सभी कारण शामिल हैं, क्योंकि सभी कोशिकाएँ समान हैं और एक ही संरचना प्रदर्शित करती हैं। यह एकरूपता आपको विविधता में एकता, ब्रह्मांड में देखी जाने वाली परस्पर संबद्धता और इसलिए निर्माता की एकता की ओर ले जाती है। एक एकीकृत, एकरूपता प्रदर्शित करने वाली और एक दूसरे के साथ एक बुनियादी संबंध में असंख्य परस्पर संबंधित भागों से बनी किसी चीज़ को एक से अधिक निर्माता द्वारा नहीं बनाया जा सकता था। एक कोशिका जिसमें एक मच्छर के दो पंख भी शामिल नहीं हो सकते, उसमें कार्य करने के लिए आवश्यक कई भौतिक, शारीरिक कारण कैसे हो सकते हैं?

बाह्य, भौतिक अस्तित्व वाली कोई चीज़ सिर्फ़ एक आदर्श, अमूर्त अस्तित्व वाली चीज़ से ज़्यादा स्थापित, स्थिर और स्थिर होती है। पूर्व के एक छोटे कण में उत्तरार्द्ध का एक पहाड़ समा सकता है। [उदाहरण के लिए, एक पहाड़ का प्रतिबिंब एक छोटे दर्पण में समा सकता है। चूँकि जो कुछ भी मौजूद है वह आकस्मिक है, इसलिए उसका अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव था। इसका अस्तित्व में आना एक की वरीयता का परिणाम था जिसके पास वरीयता का पूर्ण अधिकार था, जिसके पास बिल्कुल ज़रूरी था

अस्तित्व जिसके बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता। इसलिए, वह आवश्यक अस्तित्व सभी भौतिक अस्तित्व से अधिक स्थापित, स्थिर और निश्चित है। यह वास्तविक अस्तित्व है, और इसलिए इसे आकस्मिक अस्तित्व द्वारा समाहित नहीं किया जा सकता है।

आकस्मिक वस्तुएँ - जो कुछ भी अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अलावा अन्य अस्तित्व में है - शाश्वत, सर्वव्यापी ज्ञान के दर्पण में प्रतिबिंबित होती हैं, जबकि उनका वास्तविक अस्तित्व उस ज्ञान में उनके अस्तित्व में निहित है [अर्थ के रूप में]। वे अनिवार्य अस्तित्व के प्रकाश की अभिव्यक्ति के माध्यम से भौतिक अस्तित्व में आते हैं, और इस प्रकार अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व को दर्शाते हैं। भौतिक दुनिया में उनका भौतिक अस्तित्व, ज्ञान के सर्वव्यापी क्षेत्र से उनके स्थानांतरण का परिणाम, कभी भी वास्तविक अस्तित्व के समान सार और गुणवत्ता या समान अस्तित्वगत डिग्री का नहीं हो सकता है।

* ब्रह्माण्ड की रेखाओं पर चिंतन करें, क्योंकि वे परमधाम से आपके लिए संदेश हैं।

सृष्टि की पुस्तक स्पष्ट रूप से दोपहर के सूर्य की तरह व्यवस्थितता को प्रदर्शित करती है और पावर के चमत्कार को प्रदर्शित करती है।

* प्रकाश के बीजारोपण से / ग्यारहवां ग्रंथ / दूसरा सबूत

हर शब्द या अक्षर में एक चमत्कार है। इसकी रचना इतनी चमत्कारी है कि, यह मानकर भी कि प्रत्येक प्राकृतिक कारण एक स्वतंत्र कारक है, प्रत्येक कारण इस चमत्कारिकता के आगे विनम्रतापूर्वक झुक जाएगा, यह स्वीकार करते हुए: "आपकी महिमा हो। हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। निस्संदेह, आप सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ हैं।"

इस पुस्तक का क्रम इतना सूक्ष्म और नाजुक है कि इसके सटीक स्थान पर एक नया बिंदु डालने के लिए एक पूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है जो सब कुछ बना सकती है, क्योंकि प्रत्येक अक्षर - विशेष रूप से जीवित अक्षर - वाक्यों के साथ आंतरिक संबंध रखता है और अन्य सभी शब्दों के साथ एक मजबूत संबंध रखता है। इस प्रकार, जिसने एक मच्छर की आँखें बनाईं, उसने सूर्य का निर्माण किया, और जिसने पिस्सू के पेट का आदेश दिया, उसने सौर मंडल का आदेश दिया। देखें: आपकी रचना और पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है (31:28), और देखें कि एक मधुमक्खी की जीभ से कितनी सच्ची गवाही आती है, जो कि शक्ति के चमत्कारों में से केवल एक है या इस पुस्तक में एक छोटे से शब्द का प्रतिनिधित्व करती है।

एक सूक्ष्म जीव पर विचार करें जो नंगी आंखों से अदृश्य होते हुए भी सृष्टि का एक नमूना है।
जिसने इसे चमत्कारी ढंग से “लिखा” उसने ब्रह्मांड को भी “लिखा”। यदि आप इसका अध्ययन करते हैं और इसके सूक्ष्म तंत्र और अद्भुत प्रणालियों को समझते हैं, तो आप आश्वस्त हो जाएँगे कि इसका अस्तित्व और जीवन निर्जीव, सरल, प्राकृतिक कारणों से नहीं हो सकता

जो संभावनाओं के बीच अंतर नहीं कर सकता। अन्यथा आपको यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक कण में ऋषियों की चेतना, वैज्ञानिकों का ज्ञान और राजनेताओं या प्रशासकों की प्रतिभा निहित है, और वे एक दूसरे के साथ सीधे संवाद करते हैं।

यहां तक कि अंधविश्वासी लोग भी ऐसे दावे से शर्मिंदा हैं।

इसे ईश्वरीय शक्ति का चमत्कार, ब्रह्मांड का आविष्कार करने वाले और उसे व्यवस्थित करने वाले का आविष्कार मानने के अलावा कोई और व्याख्या नहीं है। यदि ऐसा न होता, तो दो सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक कारणों या नियमों, गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण का एक परमाणु में एक साथ आना असंभव होता। गुरुत्वाकर्षण और प्रतिकर्षण, गति और इसी तरह की घटनाएँ, ईश्वरीय सिद्धांतों या संचालन के तरीकों के नाम हैं जिन्हें नियमों के रूप में दर्शाया गया है। उन्हें नियमों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, बशर्ते कि उन्हें किसी एजेंट प्रकृति की नींव के रूप में प्रचारित न किया जाए। केवल नाम या उपाधि होने या नाममात्र अस्तित्व होने के कारण, उन्हें वास्तविक, बाहरी अस्तित्व नहीं दिया जाना चाहिए।

प्रश्न: लोग पदार्थ की शाश्वतता में विश्वास क्यों करते हैं और सभी प्रजातियों के निर्माण का श्रेय कणों या इसी प्रकार की चीजों की अनियमित गति को क्यों देते हैं?

उत्तर: तर्क या तर्कसंगत निर्णय हमेशा विश्वास की ओर नहीं ले जाता, क्योंकि तर्कसंगत रूप से आश्वस्त होने का मतलब ईश्वर में विश्वास करना नहीं है। वे विश्वास नहीं कर सकते।

वे अपनी गलती स्वीकार करते हैं, क्योंकि उनका तर्क सतही दृष्टिकोण और नकल पर आधारित है। यदि वे इस तर्क-पद्धति का अनुसरण करते, तो वे देख पाते कि ऐसा विश्वास कितना अतार्किक और तर्कहीन है। यदि इसके बावजूद भी वे ऐसा विश्वास करते हैं, तो वे सृष्टिकर्ता के प्रति लापरवाह हैं। कितना अजीब विचलन है! जो लोग महिमावान ईश्वर की अनंतता को स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करते हैं और सृष्टि का श्रेय उन्हें देते हैं - हालाँकि अनंतता और रचनात्मकता ईश्वरीय सार के अपरिहार्य गुणों में से हैं - वे असंख्य कणों और असहाय चीजों को अनंतता और रचनात्मकता कैसे दे सकते हैं?

इस प्रसिद्ध घटना को याद करें: एक बार, लोग रमज़ान की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए नए अर्धचंद्राकार चाँद को देखने के लिए आकाश को स्कैन कर रहे थे। एक बूढ़े व्यक्ति ने दावा किया कि उसने इसे देखा है, जबकि वास्तव में उसने जो देखा था वह उसकी भौंह से नीचे की ओर मुड़ा हुआ एक सफ़ेद बाल था। यह बाल जैसी चीज़ है जो लोगों को सच्चाई से अंधा कर देती है।

मानवता का चरित्र उत्तम है। सत्य की खोज करते समय लोग कभी-कभी असत्य का सामना करते हैं और उसे अपने हृदय में रखते हैं। कभी-कभी सत्य की खोज करते समय उन्हें गलत राह मिल जाती है और वे उसे सत्य मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्न: “प्रकृति”, “नियम” और “शक्तियाँ” कहलाने वाली वे चीज़ें क्या हैं, और लोग उनके द्वारा कैसे धोखा खा जाते हैं?

उत्तर: प्रकृति एक व्यापक ईश्वरीय "शरिया" है, जो दृश्यमान, भौतिक दुनिया में मौजूद हर चीज़ के बीच व्यवस्था और सामंजस्य के लिए स्थापित की गई है। सृष्टि के इस नियम को "ईश्वर का मार्ग" भी कहा जाता है। प्रकृति सृष्टि के सभी नाममात्र नियमों का परिणाम है। बल इस "शरिया" के सिद्धांत हैं,

ही के तत्व हैं " शरिया" और कानून एक

इसके सिद्धांतों और तत्वों की नियमितता लोगों को प्रकृति को एक वास्तविक, बाहरी अस्तित्व एजेंट के रूप में। हालाँकि के साथ देखने के लिए प्रेरित करती है, और उसके बाद, एक मानव हृदय या मन को यह विश्वास नहीं दिलाया जा सकता है कि प्रकृति एक सच्चा एजेंट है, जो लोग सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को नकारते हैं और दिव्य शक्ति के चमत्कारी कार्यों को समझने से इनकार करते हैं, वे इस अंधे, अज्ञानी प्रकृति को चीजों की उत्पत्ति के रूप में देखना शुरू कर सकते हैं।

प्रकृति एक छपी हुई चीज़ है, प्रिंटर नहीं; एक डिज़ाइन है, डिज़ाइनर नहीं; एक वस्तु जिस पर काम किया जाता है, एजेंट नहीं; एक नियम या उपाय, कोई मूल नहीं; एक आदेश, कोई आदेश देने वाला नहीं। यह शक्ति के बिना एक सिद्धांत है, वास्तविक या बाहरी अस्तित्व के बिना कानूनों का एक समूह है जो जारी होता है

इच्छा और शक्ति के दिव्य गुण.

मान लीजिए कि एक युवा व्यक्ति किसी दूसरी दुनिया से इस खूबसूरत दुनिया में आता है और एक खूबसूरत, समृद्ध रूप से सुसज्जित महल में प्रवेश करता है। कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई देता है, जिसे इस इमारत और सजावट का श्रेय दिया जा सके। तो यह

एक व्यक्ति, एक विस्तृत पुस्तक को देखने के बाद, जिसमें महल के निर्माण और साज-सज्जा के बारे में विस्तृत जानकारी और खाका शामिल है, और अपनी अज्ञानता और निर्माता के प्रति जुनून के कारण, सोचता है कि पुस्तक ने महल का निर्माण किया है। उसी तरह, सर्वशक्तिमान निर्माता के बारे में कुछ लोगों की असावधानी उन्हें खुद को धोखा देने की अनुमति देती है।

प्राकृतिक विश्व को अपना मूल निर्माता मानना।

ईश्वर के पास दो प्रकार के "शरीयत" हैं। एक वाणी के ईश्वरीय गुण से जारी होता है और अपनी स्वतंत्र इच्छा से जारी होने वाले बंदों के कार्यों को नियंत्रित या आदेश देता है।

इच्छाशक्ति के दिव्य गुण से अन्य मुद्दे

और शक्ति, सृजन के दिव्य आदेशों का समावेश है, और यह दिव्य कार्य पद्धति का परिणाम है।

पहला नियम समझने योग्य नियमों से बना है, जबकि दूसरा नियम नाममात्र के नियमों से बना है, जिन्हें गलत तरीके से “प्रकृति के नियम” कहा जाता है। अस्तित्व में इनका कोई सृजनात्मक या आविष्कारशील हिस्सा नहीं है, क्योंकि यह ईश्वरीय शक्ति के लिए अद्वितीय है।

जो कुछ भी मौजूद है वह सभी दूसरी चीज़ों से जुड़ा हुआ है; कोई भी चीज़ अपने आप में मौजूद या जीवित नहीं रह सकती। जिसने एक चीज़ बनाई, उसने सभी चीज़ें बनाईं, और सिर्फ़ वही एक हो सकता है, जो हमेशा से सभी का चाहा हुआ है। इसके विपरीत, प्राकृतिक कारण, जिन्हें गुमराह लोग रचनात्मकता का श्रेय देते हैं, असंख्य हैं, एक दूसरे को नहीं जानते,

और अंधे हैं। उन्हें सृजनात्मकता का श्रेय देने का मतलब है कि यह स्वीकार करना कि असंख्य अंधी, बेजान चीजें संयोग से एक साथ आईं और उस विशाल, व्यवस्थित ब्रह्मांड का निर्माण किया, [जिसका अस्तित्व, व्यवस्था और सामंजस्य स्पष्ट रूप से पूर्ण ज्ञान और इच्छा, शक्ति और बुद्धि की आवश्यकता है]। फिर उन्हें डूबने और खेलने के लिए छोड़ दें (6:91)।

संक्षेप में: ब्रह्माण्ड की पुस्तक में देखी गई व्यवस्था और नियमितता, तथा इसकी रचना में प्रकट चमत्कारिकता, ईश्वरीय एकता के दो प्रमाण हैं, जो दर्शाते हैं कि ब्रह्माण्ड और इसकी विषय-वस्तु ईश्वर की परम शक्ति, असीम ज्ञान और शाश्वत इच्छा की कृतियाँ हैं।

प्रश्न: व्यवस्था, सामंजस्य और नियमितता कैसे स्थापित की जा सकती है?

उत्तर: विज्ञान इस तरह काम करता है मानो मानवता की इंद्रियों ने निगमन और आगमन द्वारा इस क्रम की खोज की हो। विज्ञान की प्रत्येक शाखा अस्तित्व के एक पहलू पर आधारित है या उसका अध्ययन करती है। विज्ञान के सार्वभौमिक सिद्धांत इसी क्रम, सामंजस्य और नियमितता से उत्पन्न होते हैं। प्रत्येक शाखा में उन प्रजातियों में प्रचलित सार्वभौमिक सिद्धांत और नियम शामिल होते हैं जिनका वह अध्ययन करती है।

उन सिद्धांतों की सार्वभौमिकता और एकरूपता व्यवस्था की भव्यता की ओर इशारा करती है, क्योंकि इसके बिना सार्वभौमिक नियमों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वैज्ञानिकों ने पाया है कि

विज्ञान के माध्यम से व्यवस्था करें, और इसके द्वारा देखें कि वृहद मानव (ब्रह्मांड) भी उतना ही व्यवस्थित है जितना कि वे स्वयं हैं। हर चीज़ में बुद्धिमत्ता है, क्योंकि कुछ भी उद्देश्यहीन नहीं है या अपने आप पर छोड़ा नहीं गया है।

सृष्टि की पुस्तक, अपनी सभी प्रणालियों, जीवित प्राणियों और कणों की दुनियाओं के साथ, ईश्वरीय एकता की घोषणा करती है। कुल मिलाकर वे घोषणा करते हैं: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

[*] परमेश्वर की स्तुति हो, जिसकी महिमा सभी वस्तुएँ अपने दृश्यमान और बोधगम्य शब्दों से करती हैं। उदाहरण के लिए, ज्योतियाँ, नदियाँ और वर्षा के बादल क्रमशः प्रकाश, जल और वायु के स्रोत के शब्द हैं।

उसकी महिमा हो जिसकी स्तुति हो:
रोशनी के साथ प्रकाश का स्रोत;
नदियों और बादलों के साथ पानी और हवा...
पृथ्वी और पौधे, चट्टानों और फूलों के साथ...
वातावरण और पेड़, पक्षी और फल...

बादल और आकाश, वर्षा और चाँदनी...
उसके प्रकाशित करने और प्रदर्शित करने से प्रकाश चमकता है।

वायु उनके नियंत्रण से तरंगें उत्पन्न करती है
और उसे (कार्यों के साथ) चार्ज करना।
उसके अधीन होकर और उसे जमा करके जल फूट पड़ता है
और बहता है,

[*] प्रकाश के बीजारोपण से / बारहवाँ ग्रंथ (एक महत्वपूर्ण विषय)

जो सब कुछ निर्धारित करने वाले की स्तुति है

और प्रत्येक चीज़ के लिए एक विशेष प्रकृति
नियुक्त करता है।
पत्थरों को उनके द्वारा आकार देने और व्यवस्थित करने से वे
सुशोभित होते हैं।
फूलों को सुशोभित और सुन्दर बनाकर वे मुस्कुराते हैं।

फल उसकी कृपा और अनुग्रह से समृद्ध रूप से सुशोभित
दिखाई देते हैं,
जो कि एक के लिए एक स्पष्ट, मनोहर प्रशंसा है

जो हर चीज़ को एक विशेष प्रकृति के साथ बनाता है।

पक्षी उसके द्वारा बोलने में सक्षम होने से गाते हैं
और उन्हें सुन्दर बनाना।
वर्षा उसे भेजकर और प्राणियों के लिए उसे आवश्यक
बनाकर मधुर संगीत उत्पन्न करती है।
चन्द्रमा उसके निर्देश और निर्धारण से चलते हैं,

जो कि सर्व-निर्धारक के लिए एक भावपूर्ण महिमा-गान है,

सर्वव्यापी के लिए एक चमकदार संकेत।

उसकी महिमा हो जिसकी स्तुति हो:
आकाश, तारामंडलों और प्रकाश देने वाली वस्तुओं से भरा हुआ...

सूर्य, तारे और चन्द्रमाओं वाली ग्रह प्रणालियाँ...

वातावरण में गड़गड़ाहट, बिजली और बारिश...

पृथ्वी, पशुओं, पौधों और पेड़ों से भरी हुई...
वृक्ष पत्तों और फूलों से उसकी स्तुति करते हैं,

फिर अच्छी तरह से आनुपातिक फलों के साथ।
जब फूल प्रशंसा करना बंद कर देते हैं, तो फल बोलने लगते
हैं
एक वाक्पटु, प्रकाश-फैलाने वाली प्रशंसा के साथ।
एक बीज मन ही मन रहस्यों से भरा हुआ, चुपचाप भजन
गाता है;
इसमें एक पुस्तक अंकित है - अभिलेख
इसके पेड़ के जीवन-इतिहास का.
यह अन्न को विभाजित करने वाले, उत्पत्तिकर्ता की स्तुति करता
है।
सभी पौधे स्तुति और पूजा करते हैं, महिमा करते हैं और
सर्वशक्तिमान ईश्वर के समक्ष सजदा करो।
पौधों की मुस्कुराहट उनके फूलों के माध्यम से होती है

जो विवेकशील है, उसकी प्रशंसा स्पष्ट है।
उनके अंकुर और कांटे ही उनके मुख, बीज और पंख हैं।

वे जो कविता पढ़ते हैं उसके शब्द...
उनके अनुपात और व्यवस्थितता एक अलग भाषा है,

और उनका डिज़ाइन सर्व-प्रकाशक की डिज़ाइन द्वारा है।

प्रत्येक कलाकृति सर्वदीप्तिमान ईश्वर द्वारा सुशोभित कला का एक नमूना
है।
उनके जीवन-निर्वाह, उनके रंग और गंध से,

वे सृष्टिकर्ता का वर्णन और प्रशंसा करते हैं।
वे उसके गुणों का वर्णन करते हैं, उसके नामों को बताते हैं,

और स्वयं को ज्ञात करने और प्रेम करने के लिए उसकी इच्छा की
व्याख्या करें।
बालियों में दाने और आँखों जैसे फूल “बूंदें” हैं

मूलकर्ता की अभिव्यक्तियों के बारे में...
ताकि उसके सेवक उससे प्रेम करें और उसकी सृष्टि उसे जान सके।
फूलों से सजा हुआ पेड़ कविता में प्रशंसा की अभिव्यक्ति है,

कई “आँखें” खुल गई हैं।
इसने अपने उत्सव के दिन के लिए अपने हरे भागों को सजाया है,
ताकि उसका पालनहार उसके महान कार्यों को देखता रहे।

यह अपने साथ जुड़े रत्नों को उन लोगों के सामने प्रदर्शित करता है जिनके पास देखने की आंखें हैं;
और मानवता को इसकी रचना में निहित बुद्धिमत्ता का संदेश देता है,

इसमें जमा किया गया खजाना
फलों के स्वामी की उदारता ।
पवित्र है वह जो भलाई करता है, जो कुछ भी करता है।

उसका प्रमाण कितना शानदार है, उसकी व्याख्या कितनी स्पष्ट है!
जो सर्वगुण सम्पन्न सृजक, सर्वसमर्थ सृष्टिकर्ता है,

सर्व-प्रकाशक फ़ैशनकर्ता, जो प्रत्येक वस्तु का सृजन करता है

एक विशेष प्रकृति के साथ.
उसकी कला को देखने के लिए वसंत ऋतु में उसकी दया को देखो:

वसंत ऋतु उनके सेवकों के लिए उत्सव का दिन है...

वह दिन जब उसकी रचना - पेड़ और पौधे - स्वयं को सजाते हैं...
प्रत्येक पौधा इस हद तक प्रकट होता है
इसके रैंक का

अपने प्रभुसत्ता की संप्रभुता और उसके स्वामी के उपहार...

वह उसके आदेशों को प्राप्त करने और पूरा करने के लिए तैयार है;
उसके नाम में बहुत सेवा करता है...

उसकी आज्ञा से ही वह पुष्पित और फलित होता है,
अपने मेहमानों के लिए एक साफ मेज के समान...
प्रकाश और हवा, मिट्टी और पानी उसकी शक्ति के वाहक हैं

उसके सिंहासन के आदेश और वाहक,
उनकी कला का प्रचार करना, उनकी बुद्धिमत्ता का चित्रण करना।

ज्ञान और बुद्धि: प्रकाश उनका सिंहासन है।

अनुग्रह और दया: जल उनका सिंहासन है।
संरक्षण और पुनरुद्धार: मिट्टी उनका सिंहासन है।

आदेश और इच्छा: वायु उनका सिंहासन है।

हे मित्र, जान लो कि वे सभी तत्व वे वस्तुएँ हैं जिन पर उनके नाम प्रकट होते हैं; वे माध्यम हैं, स्रोत या मूल नहीं; उन पर कार्य किया जाता है, एजेंट नहीं। वे उसकी शक्ति द्वारा वाहक हैं और जो कुछ वे ले जाते हैं, उसे उसकी अनुमति से, उसके नाम से ले जाते हैं... वे जो कुछ करते हैं, उसे उसकी शक्ति से करते हैं।

यदि वस्तुओं के अंतर्गत आने वाली वस्तुएँ केवल ऐसी वस्तुएँ न होतीं जहाँ उनके नाम प्रकट होते हैं, जो केवल निष्क्रिय माध्यम हैं, तो मिट्टी और हवा, प्रकाश और पानी के प्रत्येक कण या परमाणु या अणु में अनंत ज्ञान, शक्ति और सृजनात्मक क्षमता होना आवश्यक होता। उदाहरण के लिए-

प्रचुर मात्रा में, वायु वायुमंडल से होकर गुजरती है और बढ़ने के लिए नियत सभी पौधों के कणों का दौरा करती है। इसके गुजरने से अनगिनत चमत्कार - स्वर्ग बनाने वाले की कला के चमत्कार - प्रकट होते हैं।

यदि एक साधारण, निर्जीव, अज्ञानी कण के लिए उन पेड़ों को बनाना, उन पर फल लगाना, और उन फूलों को आकार देना - संक्षेप में, उन सभी चीजों का आविष्कार करना - और यदि वह इस पृथ्वी को धारण करने में सक्षम होता, तो आपको उस एकता पर संदेह करने का अधिकार होता जिसका कोई साझीदार नहीं है। अन्यथा, यह संदेह से परे है कि केवल वही जो सभी सृष्टि को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, अपनी बुद्धि की मुट्ठी में रखता है, वह ही किसी भी चीज़ के स्वामित्व और प्रभुत्व का दावा कर सकता है।

हर दाना, बूंद या कण पौधों, फलों या फूलों की सेवा में काम करता है। अगर वे स्वर्ग के भगवान द्वारा नियोजित नहीं होते, तो हर दाने, बूंद या कण में इतनी कला, शक्ति और बुद्धि होती कि वह उन सभी प्राणियों का आविष्कार और निर्देशन कर सके।

उसकी जय हो जिसकी वृक्ष स्तुति करते हैं
अपने पत्तों, फूलों और फलों के साथ...
पत्तों की बहुलता के बीच फूलों का खिलना

फलों की वृद्धि का मार्ग प्रशस्त करना,
और फूलों की गोद में फलों का उगना—

जो वृक्षों की पुत्रियाँ हैं—
हरी शाखाओं के हाथों में नाचते हुए,

सजीव हवाओं से प्रेरित होकर—

ये सब उसकी स्तुति करने वाली वाक्पटु बातें हैं, जिसने इन्हें बनाया है,

जो एक है, वह अत्यन्त प्रभावशाली है।

उनके मुंह, अक्षर और शब्द...

पत्ते, फूल और फल हैं।

सृष्टिकर्ता का उल्लेख करते ही पत्ते प्रसन्नता से नाचने लगते हैं...

फूल कृतज्ञता से मुस्कुराते हैं

सर्व-सक्षम एक

उनकी सजावट के लिए...

दया से उन्हें जो फल मिलता है, उससे उन्हें आनन्द मिलता है,

मधुर धुन गाते हुए,

सुव्यवस्थित, सुसंगठित, चमकदार रंगों में...

कलात्मक रूप से डिजाइन और कढ़ाई,

अद्भुत आकार के साथ;

समृद्ध रूप से सुसज्जित और अद्भुत रूप से चित्रित,

खाने में स्वादिष्ट.

वे अद्भुत कला प्रदर्शित करते हैं,

उनका बहुत अधिक विविधता में होना और विभिन्न खालों के साथ होना—

यह सब उत्पत्तिकर्ता की प्रशंसा में है और सर्व-समर्थ का वर्णन करता है।

वे उसके गुणों का वर्णन करते हैं और उसके नामों को बताते हैं,

इसका अर्थ यह है कि वह चाहता है कि उससे प्रेम किया जाए

और अपना स्नेह प्रकट करता है।

सृष्टिकर्ता की अभिव्यक्ति की बूँदें

बाहर आओ

उन फलों के मुँह की जो वह चाहता है

विदित हो

और उसके सेवकों द्वारा प्रेम किया गया, और प्रकट हुआ
गरीबी में रहने वाले अपने प्राणियों के प्रति उनकी
करुणा।
उसकी महिमा हो। उसका प्रमाण कितना स्पष्ट है,
उसकी शक्ति कितनी विशाल है, उसकी दया कितनी स्पष्ट
है।
वह सर्व-निर्माण और सर्व-आकार देने वाला है,
सर्व-रचना और सर्व-व्यवस्था,
सर्वव्यापी और सर्व-आशाजनक।
उसकी महिमा हो: उसकी महिमा कितनी दयालु है,

उसकी कृपा कितनी राजसी है, उसकी संप्रभुता कितनी
महान है।

अनुक्रमणिका